शुभदर्शन के काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में विद्रोह भावना

SHUBHADARSHAN KE KAVYA SANGRAH SANGHARSH BAS SANGHARSH MEIN VIDROH BHAWNA

Submitted to

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY

in partial fulfillment of the requirements for the award of degree of

MASTER OF PHILOSOPHY (M.Phil.) IN HINDI

Submitted By

Jogita Rani

Regd. No. 11512296

Hindi Department

Lovely Professional University

Supervised By

Dr. Vinod Kumar

Hindi Department

Lovely Professional University

FACULTY OF ARTS & LANGUAGES

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY PUNJAB

2016

घोषणा-पत्र

मैं जोगिता रानी घोषणा करता/ करती हूँ कि मैने 'शुभदर्शन के काव्य संग्रह संघर्ष बस संघर्ष में विद्रोह भावना' विषय पर लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के अन्तर्गत हिन्दी विषय की एम.फिल.की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध डॉ. विनोद कुमार, असिस्टेंट प्रोफ़ैसर, स्कूल ऑफ़ आर्टस एंड लैंग्वेजेज़, लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के निर्देशन में स्वयं पूर्ण किया है तथा यह मेरा मैलिक कार्य है।

मैं यह भी घोषणा करता / करती हूँ कि मेरे द्वारा प्रस्तुत्त यह लघु शोध-प्रबन्ध आंशिक अथवा पूर्ण रूप से किसी अन्य उपाधि के लिए अन्य किसी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत्त नहीं किया गया है।

दिनांक. 28-11-2016

नाम जोगिता रानी
रजि 11512296
एम. फ़िल. (हिन्दी)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री/ श्री जोगिता रानी ने 'शुभदर्शन के काव्य संग्रह संघर्ष बस संघर्ष में विद्रोह भावना' विषय पर लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब) के अन्तर्गत हिन्दी विषय की एम.फिल.की उपाधि आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध मेरे निर्देशन में स्वयं पूर्ण किया है। तथा जो इनका मैलिक कार्य है। मेरे संज्ञान में यह लघु शोध-प्रबन्ध आंशिक अथवा पूर्ण रूप से किसी अन्य उपाधि के लिए अन्य किसी विश्वविद्यालय को प्रस्तुत्त नहीं किया गया है।

मैं प्रस्तुत्त लघु शोध-प्रबन्ध को एम. फ़िल.(हिन्दी) की उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु मुल्यांकनार्थ प्रस्तुत्त करने की संतुति प्रदान करता हूँ।

दिनांक. 28-11-2016

डॉ. विनोद कुमार (17203)
असिस्टेंट प्रोफ़ैसर,
स्कूल ऑफ़ आर्टस एंड लैंग्वेजेज़,
लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

प्राक्कथन

विद्रोह मनुष्य की मूल भावना है, जिसमें अस्वीकार की प्रवृति मुख्य रूप से विद्यमान रहती है। साधारण रूप में विद्रोह संघर्ष का ही अगला चरण है। मनुष्य का जीवन संघर्षमयी है। प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य को संघर्ष करना पड़ता है। यह संघर्ष जब अधिक बढ़ जाता है तो यह विद्रोह का रूप धारण कर लेता है। मुख्य रूप से किसी व्यक्ति, समूह, विचारधारा, भाव अथवा मत को न मानकर उसके विपरीत कार्य करना ही वास्तविक रूप में विद्रोह की भावना है। आक्रोश और विद्रोह दोनों समानान्तर शब्द ही हैं। व्यक्तिगत विद्रोह के अंतर्गत व्यक्ति में किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है। जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की विचारधारा अथवा मत आदि को न मानकर उसके उल्ट कार्य करता है तो वह विद्रोह का रूप ले लेता है। साधारण शब्दों में किसी व्यक्ति, विचारधारा या मत आदि को जब कोई स्वीकृति न मिले, तो उसके लिए विद्रोह पैदा होता है। विद्रोह के विभिन्न रूप देखे जा सकते हैं। अनेक विद्वानों ने विद्रोह के भिन्न-भिन्न अर्थ दिए हैं। भाषा और देश के अंतर के साथ विद्रोह के अर्थ में भी परिवर्तन होता है।

विद्रोह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। विद्रोह व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों प्रकार का हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहता है। इसके लिए वह निरंतर प्रयास करता रहता है। प्रत्येक क्षेत्र में विद्रोह का समय-समय पर स्वरूप देखा जा सकता है। यह निरंतर चलता रहता है। कभी नहीं रुकता। कभी समाज की रूढ़ियों का विरोध तो कभी राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों से निराश व्यक्ति के हृदय में विद्रोह की भावना निरंतर बढ़ती जाती है। विद्रोह के विविध स्वरूप देखे जा सकते हैं। विद्रोह व्यक्तिगत, सामूहिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक भी हो सकता है। मुख्यत: विद्रोह के दो पक्ष माने जाते हैं – नकारात्मक और सकारात्मक विद्रोह। नकारात्मक विद्रोह में भावनाएं स्वच्छ नहीं होती। क्योंकि नकारात्मक विद्रोह में किसी को भी हानि पहुँच सकती है, किसी की भी भावनाओं को ठेस पहुँच सकती है और ऐसे विद्रोह में अधिकतर व्यक्ति का लालच छिपा हुआ होता है। लेकिन इसके विपरीत सकारात्मक विद्रोह जन-कल्याण की भावना से ओत–प्रोत हो सकता है, क्योंकि उससे किसी को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचती है। नकारात्मक विद्रोह कई बार भयानक रूप ग्रहण कर लेता है, लेकिन सकारात्मक विद्रोह पूर्ण रूप से शांतमयी होता है। साहित्य के क्षेत्र में भी विद्रोह की भावना को देखा जा सकता है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में ऐसे बहुत से कवि एवं साहित्यकार हुए हैं। इन विद्रोही कवियों ने अपने काव्य के द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र की विषमताओं और विसंगतियों को जन-साधारण के समक्ष लाने का प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में मुख्य

रूप से भारतेन्दु हरिश्चंद्र, नागार्जुन, सुदामा पाण्डेय 'धूमिल', गजानन माधव मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का नाम मुख्य रूप से लिया जा सकता है। इन कवियों ने विश्व में व्याप्त विसंगतियों के प्रति आक्रोश और अपने विद्रोह की भावना को व्यक्त करने के लिए अपनी लेखनी का रूप दिया। सर्वप्रथम आधुनिक युग में ही विद्रोही कविता का स्वरूप देखने को मिलता है, क्योंकि आधुनिक युग से पहले रीतिकालीन युग के कवि दरबारी कवि होने के कारण केवल अपने आश्रयदाता को प्रसन्न करने के लिए ही काव्य रचना करते थे। जनता की दशा, परिस्थितियों और उनकी स्थिति की तरफ न ही राजा का ध्यान गया और न ही रीतिकालीन दरबारी कवियों का। इस लिए आधुनिक युग में ही इसका आगमन हुआ। आधुनिक युग के भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने समाज में व्याप्त कुसंगतियों का यथार्थवादी स्वरूप और अँग्रेजी शासन के यथार्थ को जन-साधारण के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इनके अतिरिक्त नागार्जुन, सुदामा पाण्डेय 'धूमिल', रघुवीर सहाय, गजानन माधव मुक्तिबोध, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने भी समाज के पाखण्ड, आडंबरो, सामाजिक बंधनों, राजनीतिज्ञो की कूटनीति को प्रस्तुत करने, धार्मिक पाखण्डों, संस्कारों, आर्थिक असमानता को साधारण जनता के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन कवियों ने अपनी विद्रोही भावना को अपनी कविता का रूप दिया और जन-साधारण के अंदर जागृति उत्पन्न की है। कवि शुभदर्शन भी इसी कड़ी में एक महत्वपूर्ण नाम है।

प्रस्तुत शोध का विषय शुभदर्शन के काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में विद्रोह भावना का अध्ययन करना है। शुभदर्शन कुमार समकालीन आधुनिक कवि हैं। एक कवि का जीवन बहुत विचित्र होता है। वह जो रचना करता है, उसके प्रति जनता का भाव कभी तो बहुत अच्छा होता है और जनता उसको प्रोत्साहित करती है। लेकिन कभी-कभी कवि को भयानक विरोध का सामना भी करना पड़ता है। लेकिन जो कवि यथार्थ रूप को प्रस्तुत करता है, उसको सदैव विरोध का सामना करना ही पड़ता है। साहित्य के क्षेत्र में कवि को कभी उन्नति प्राप्त होती है तो कभी हताशा का सामना करना पड़ता है। लेकिन जो सच्चा कवि होता है, वह बिना किसी बात की परवाह किए अपने पथ पर अग्रसर रहता है। इस प्रकार कविता और विद्रोह का आपस में गहरा संबंध है।

शुभदर्शन के काव्य में भी यह बात देखने को मिलती है। शुभदर्शन ने अपने काव्य के द्वारा समाज में व्याप्त विसंगतियों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। शुभदर्शन के समय में भारत स्वतंत्र है, लेकिन समाज, राजनीति और धर्म का रूप नहीं बदला है। पहले भारत पर अंग्रेज़ शासन करते थे और भारतीय जनता को लूटते थे। स्वतंत्र भारत में भारत के ही राजनीतिज्ञ भारत की जनता को लूट रहे हैं। समाज में अनेक विसंगतियां पहले भी

थी, आज भी हैं। इन्हीं के प्रति विद्रोह की भावना को शुभदर्शन ने अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। कवि या एक साहित्यकार विद्रोह की भावना से हीन नहीं हो सकता है। जब कवि या साहित्यकार अपने आस-पास सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विसंगतियाँ देखता है तो उसके मन में प्रतिरोध की भावना जागृत होती है, जो कि विद्रोह का रूप धारण कर लेती है। कवि अपनी इस विद्रोह भावना को लेखनी का रूप देकर जन-सामान्य के समक्ष प्रस्तुत करता है। कवि एक साधारण मनुष्य नहीं होता, बल्कि उसके पास एक असाधारण शक्ति होती है, जिसके प्रयोग से वह जनता तक अपनी बात को पहुंचाता है और समाज का वास्तविक रूप प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत शोध कार्य को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय 'सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि' में शोध कार्य का समस्या कथन, समस्या का औचित्य, शोध कार्य के उद्देश्य, परिकल्पना, शोध के लिए प्रयुक्त होने वाली प्रविधियों के साथ-साथ पूर्व सम्बद्ध साहित्य पर भी प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही जो सिद्धान्त लिया गया है उसका अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, प्रकार, पक्ष और संबन्धित लेखक के व्यक्तित्व और कृतित्व पर भी प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय 'शुभदर्शन के काव्य में सामाजिक विद्रोह भावना' में समाज की अव्यवस्था, परिवार का विखंडन, आडंबरों और शहरीकरण के प्रति कवि के विद्रोह को उजागर किया गया है।

तृतीय अध्याय 'शुभदर्शन के काव्य में राजनीतिक विद्रोह भावना' में राजनीति के भ्रष्ट रूप को प्रस्तुत किया गया है और साथ ही में राजनीतिज्ञों की अवसरवादिता और कूटनीति को भी अभिव्यक्त किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'शुभदर्शन के काव्य में आर्थिक विद्रोह भावना' में समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता और उसके कारण हो रहे शोषण को उजागर किया गया है।

पंचम अध्याय 'शुभदर्शन के काव्य में मानवीय मूल्यों के विघटन के प्रति विद्रोह भावना' में वर्तमान समय में आधुनिक पीढ़ी जो अपने संस्कार भूलती जा रही है, उस पर प्रकाश डाला जगया है और साथ में मनुष्य में जो अविश्वास और संवेदनहीनता बढ़ रही है, उसको उजागर किया गया है।

अंत में प्रस्तुत शोध कार्य से उपलब्ध निष्कर्षों को उपसंहार के अंतर्गत सारांश रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय: 1-27

1.1 समस्या कथन

1.2 समस्या का औचित्य

1.3 शोध का उद्देश्य

1.4 परिकल्पना

1.5 शोध प्रविधि

1.6 पूर्व सम्बद्ध साहित्यावलोकन

1.7 विद्रोह की सैद्धांतिक आवधारणा

1.7.1 विद्रोह का अर्थ और परिभाषा

1.7.2 विद्रोह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1.7.3 विद्रोह के पक्ष (सकारात्मक, नकारात्मक)

1.7.4 विद्रोह के विविध रूप अथवा प्रकार

(व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक)

1.8 शुभदर्शन का व्यक्तित्व और कृतित्व

द्वितीय अध्याय: 28-41

शुभदर्शन के काव्य में सामाजिक विद्रोह भावना

2.1 पारिवारिक बिखराव के प्रति विद्रोह भावना

2.2 टूटते रिश्तों के प्रति विद्रोह भावना

2.3 रूढ़िवादी परम्पराओं के प्रति विद्रोह भावना

2.4 शहर के अजनबीपन के प्रति विद्रोह भावना

तृतीय अध्याय: 42-55

शुभदर्शन के काव्य में राजनीतिक विद्रोह भावना

3.1 अवसरवादिता के प्रति विद्रोह भावना

3.2 भ्रष्टाचार के प्रति विद्रोह भावना

3.3 कूटनीति के प्रति विद्रोह भावना

चतुर्थ अध्याय: 56-71

शुभदर्शन के काव्य में आर्थिक विद्रोह भावना

4.1 अर्थ के कारण सम्बन्धों में तनाव के प्रति विद्रोह भावना

4.2 गरीबी और बेबसी के प्रति विद्रोह भावना

4.3 पूँजीपति वर्ग की दमनकारी नीति के प्रति विद्रोह भावना

पंचम अध्याय: 72-85

शुभदर्शन के काव्य में मानवीय मूल्यों के विघटन के प्रति विद्रोह भावना

5.1 संस्कारविहीनता के प्रति विद्रोह भावना

5.2 अविश्वास के प्रति विद्रोह भावना

5.3 संवेदनहीनता के प्रति विद्रोह भावना

षष्ठम अध्याय:

उपसंहार 86-89

परिशिष्ट 90-92

संदर्भ ग्रंथ सूची 93-97

प्रथम अध्याय: सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

समस्या कथन

शुभदर्शन के काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में विद्रोह भावना

मनुष्य को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समस्याओं का सामना करके ही वह अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है। आज के युग में विद्रोह एक गंभीर समस्या बन चुका है। विद्रोह प्रतिदिन बढ़ रहा है। मनुष्य का आंतरिक द्वंद ही विद्रोह को जन्म देता है। मनुष्य की यह प्रारम्भ से ही प्रवृति रही है कि वो अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता है। जब उसको लगता है कि कोई व्यवस्था उसके अधिकारों के रास्ते में बाधा बन रही है तो वह उस व्यवस्था का विरोध करता है। आज प्रत्येक क्षेत्र में अव्यवस्था आ गई है चाहे वह सामाजिक हो, राजनीतिक हो या आर्थिक। इस लिए मनुष्य इनका विरोध करता है।

समस्या का औचित्य:

विद्रोह अपने आप में एक बड़ी समस्या है। साधारण शब्दों में एक बच्चा भी विद्रोह करता है। जब वह किसी वस्तु को प्राप्त करना चाहता है और किसी कारण वश उसके माता-पिता उसको वह वस्तु लेकर नहीं देते तो वह विद्रोह करता है। ऐसे ही धीरे धीरे जब वह समाज के सम्पर्क में आता है तो उसको समाज की विसंगतियां प्रभावित करती हैं, जिनके प्रति उसके मन में विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है। इसी प्रकार सामाजिक विषमतायों, राजनीतिक कुरीतियों, धार्मिक आडंबरों और आर्थिक असमानता को लेकर व्यक्ति विद्रोह करता है। संघर्षमयी जीवन से ऊब कर ही व्यक्ति विद्रोह का रास्ता अपनाता है। कई बार तो विद्रोह के अच्छे परिणाम निकलते हैं, लेकिन कई बार विद्रोह के परिणाम भयानक भी हो जाते है। इस लिए विद्रोह आज एक बढ़ी समस्या बन गया है। क्योंकि लोग अपने लालच और अपनी अभिलाषाओं के लिए विद्रोह करते हैं, जिसका समाज और समाज में रहने वाले लोगों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। लोग अपनी लालसा के लिए आम जनता को भड़काते हैं और बड़े- बड़े दंगे तक करवा देते हैं। इन सब में पिसता केवल आम आदमी ही है और बड़े-बड़े लोग जो यह सब करवाते हैं, आराम से अपने घरों में बैठकर यह सब देखते हैं। इस प्रकार विद्रोह अपने आप में एक बड़ी समस्या है। जिसका अंत अति आवश्यक है। अगर विद्रोह निरंतर होते रहेंगे तो आम आदमी का जीवन ऐसे ही अभावग्रस्त रहेगा।

शोध का उद्देश्य

1. मनुष्य के संघर्षमयी जीवन को प्रस्तुत करना:

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य मनुष्य के संघर्ष पूर्ण जीवन को प्रस्तुत करना है। मनुष्य को हर क्षेत्र में संघर्ष करना पड़ता है। चाहे वह समाज हो, राजनीति हो या आर्थिक क्षेत्र, संघर्ष के बिना जीवन में आगे नहीं बड़ा जा सकता है। संघर्ष मनुष्य के जीवन का मुख्य अंग है। मनुष्य और संघर्ष दोनों साथ-साथ चलते हैं। दोनों का आपस में घनिष्ठ संबंध है। मनुष्य संघर्ष करके ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। मानव जीवन के इतिहास में झाँक कर इस तथ्य को प्रस्तुत करना ही इस शोध का प्रथम उद्देश्य है।

2. सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करना:

इस शोधकार्य का उद्देश्य समाज के यथार्थ वादी स्वरूप को अभिव्यक्त करना है। समाज में प्रमुख्य व्यक्ति होता है। व्यक्ति से ही परिवार बनता है और परिवार से समाज बनता है। इसी प्रकार समाज का विकास होता है। समाज में अनेक विसंगतियां आ गई हैं, जैसे पारिवारिक बिखराव, नीरसता, मानवीय मूल्यों की गिरावट और सामाजिक भेदभाव। इन्हीं विसंगतियो को उजागर करना ही इस शोध का उद्धेश्य है।

3. अर्थ के कारण सम्बन्धों में आई गिरावट को उजागर करना:

प्रस्तुत शोधकार्य का उद्देश्य अर्थ अर्थात धन के कारण सम्बन्धों के पतन को उजागर करना भी है। आधुनिक युग में केवल पैसे का ही महत्व रह गया है। वास्तविक सम्बन्धों का कोई मोल नहीं रह गया है। पैसे की चाह ने मानव को अंधा बना दिया है। कोई उससे आगे बढ़ गया, यह बात उसको सहन नहीं होती है। सब एक दूसरे से आगे बढ़ना चाहते हैं।

4. शुभदर्शन के काव्य के माध्यम से व्यवस्था की कुरीतियों के प्रति विद्रोह भाव को स्पष्ट करना:

प्राचीन काल में सामंत पूंजीवादी व्यवस्था के प्रतीक थे और आधुनिक समय में अमीर वर्ग या शोषित वर्ग मजदूर वर्ग का शोषण करता है। आर्थिक क्षेत्र में असमानता के कारण विद्रोह की स्थिति उत्पन्न होती है। पूँजीपति वर्ग मजदूरों से अधिक से अधिक कार्य या काम करवाते हैं, लेकिन उनकी मेहनत का पूरा वेतन नहीं दिया जाता। उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए जाते हैं और हर प्रकार से उनका शोषण करता है। जो अमीर है वह बहुत अमीर

है और जो गरीब है वो इतना की अपने परिवार को दो वक्त की रोटी देने के लिए भीख तक मांगनी पड़ती है। सामाजिक अवनीति की इस असमानता को प्रस्तुत करना भी इस शोध का उद्देश्य है।

परिकल्पना

1. **मानवीय मूल्यों के विघटन पर चिंतन।**

2. **आर्थिक असमानता की अभिव्यंजना।**

3. **राजनीतिक कूटनीतियों का पटाक्षेप।**

4. **शुभदर्शन के काव्य के माध्यम से शोषित वर्ग की दयनीय स्थिति का रेखांकन।**

शोध प्रविधि

1. समाजशास्त्रीय प्रविधि:

समाजशास्त्रीय प्रविधि का सीधा सम्बन्ध समाज से होता है। किसी साहित्यक कृति में समाज के किस रूप, किस अंग को प्रस्तुत किया गया है, यह समाजशास्त्र का विषय है। साहित्य का सीधा सम्बन्ध समाज से होता है और सामाजिक आधार ही कृति को उसका आधार प्रदान करता है।

2. तुलनात्मक प्रविधि:

तुलनात्मक प्रविधि का प्रारम्भ पश्चिम से माना जाता है। भारत में इस प्रविधि का बहुत कम प्रयोग हुआ है। अगर किसी कृति में विषमताएं हैं तो उसमें समानता ढूँढना और अगर समानताएं ढूँढकर उसका अध्ययन करना है तो यह सब तुलनात्मक पद्धति के अंतर्गत आता है। शोधकार्य में ऐसे कवियों और साहित्यकारों की तुलना की जाएगी, जिनके साहित्य और काव्य में विद्रोही स्वर हैं।

3. मनोवैज्ञानिक प्रविधि:

मनोवैज्ञानिक प्रविधि भी बहुत महत्वपूर्ण है। मनोविज्ञान को मन का विज्ञान कहा जाता है। मनोवैज्ञानिक प्रविधि के अंतर्गत लेखन की मनोस्थिति और उसकी मनोस्थिति के आधार पर कृति के पात्रों की मनोस्थिति का अध्ययन किया जाता है। कृति को समझने का सही तरीका रचनाकार की मनोस्थिति के माध्यम से किया जा सकता है।

पूर्व सम्बद्ध साहित्य का अवलोकन

1. मार्क्स-एंगेल्स, "कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा पत्र", मास्को, प्रगति प्रकाशन, 1986 :

इस पुस्तक में कार्ल मार्क्स और एंगेल्स ने कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणा पत्र के बारे में बताया है, जिसमें साम्यवाद की स्थापना पर बल दिया गया है। इस पुस्तक में वर्ग संघर्ष के बारे में भी बताया गया है। मार्क्स के अनुसार जब तक आर्थिक क्षेत्र में वर्ग संघर्ष चलता रहेगा और अमीर और गरीब में आर्थिक असमानता रहेगी तब तक पूँजीपति और मज़दूर वर्ग में विद्रोह चलता रहेगा।

2. सुमित सरकार, "आधुनिक भारत", (1885-1947), दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2009 :

इस पुस्तक में सुमित सरकार ने बताया है कि अँग्रेजी सरकार के हस्तक्षेप के कारण भारतीय जनता ने विद्रोह किया। लेकिन भारतीय जनता में जाति, धर्म और वर्ग को लेकर आपसी संघर्ष चल रहा था। उस आपसी विद्रोह के कारण भारतीय जनता के पहले आंदोलन असफल रहे।

3. भावना कुंवर, "सठोत्तरी हिन्दी गजल में विद्रोह के स्वर", नई दिल्ली, अयन प्रकाशन, 2009

इस पुस्तक में बताया गया है कि पहले-पहल गजल केवल मनोरंजन मात्र के लिए लिखी जाती थी। लेकिन सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों को देख 1960 के बाद के गजलकारों ने गजल का रूप बदल दिया। राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोही स्वर सठोत्तरी गजल में देखने को मिलते हैं।

4. अरस्तू, "द पॉलिटिक्स", पेंगुइन, 1962 :

इस पुस्तक में अरस्तू ने राजनीतिक व्यवस्था के बारे में बताया है। अरस्तू ने विद्रोह की भावना पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। अरस्तू के अनुसार जब संपत्ति खोने का डर होता है तो उच्चता और समानता के लिए विद्रोह होता है।

5.नामवर सिंह, "इतिहास और आलोचना", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1978 :

इस पुस्तक में नामवर सिंह ने साहित्य के इतिहास की आलोचना प्रस्तुत की है। इतिहास में साहित्य के रूपों और उसके भेद को उजागर किया गया है। साहित्य के आधार पर इतिहास की आलोचना प्रस्तुत की गई है।

6. नरेंद्र मोहन (सं), "विद्रोह और साहित्य", दिल्ली, साहित्य भारती, 1974 :

इस पुस्तक में नरेंद्र मोहन ने साहित्य और विद्रोह के अंतर सम्बन्ध को प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक के माध्यम से साहित्य में विद्रोह के जिन रूपों को प्रस्तुत किया गया है उसको उजागर किया गया है।

7. लाला हरदयाल, "आधुनिक बोध और विद्रोह", दिल्ली, राजेश प्रकाशन, 1979 :

प्रस्तुत पुस्तक में आधुनिक संदर्भ में विद्रोह को प्रस्तुत किया गया है। विद्रोह के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया गया है।

8. रामविलास शर्मा, "मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य", दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2002 :

इस पुस्तक में मार्क्सवादी विचारधारा को प्रस्तुत किया गया है। मार्क्स के पूंजीपति वर्ग और मजदूर वर्ग से संबन्धित विचारों को प्रस्तुत किया गया है।

9. शिव कुमार मिश्र, "मार्क्सवाद और साहित्य", दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2001 :

इस पुस्तक में शिव कुमार मिश्र ने मार्क्सवाद के साहित्य से सम्बन्ध को प्रस्तुत किया है और हिन्दी साहित्य में मार्क्सवाद को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है, उसकी अभिव्यक्ति की गई है।

10. मैनेजर पाण्डेय, "शब्द और कर्म", नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1998 :

इस पुस्तक में विद्रोह के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत किया गया है और शब्द की शक्ति के बारे में बताया गया है।

11. रामचन्द्र तिवारी (सं), "कविता क्या है", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1985 :

इस पुस्तक में रामचन्द्र शुक्ल ने मनुष्य और कविता और कविता और विद्रोह के परस्परिक संबंध को प्रस्तुत किया है।

12. डॉ. विनोद तनेजा (सं), "संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन", अमृतसर, विभोर प्रकाशन, 2011 :

इस पुस्तक में कवि शुभदर्शन कुमार के यथार्थवादी स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। इसमें विभिन्न लेखकों और शुभदर्शन कुमार के मित्रों के द्वारा उसके काव्य संग्रहों के संघर्षमयी और विद्रोही स्वर को उजागर किया गया है। यह एक आलोचनात्मक पुस्तक है।

13. रमेश सोनी (सं), "समय से मुठभेड़ का जन-कवि: शुभदर्शन", नई दिल्ली, सभ्या प्रकाशन, 2013 :

इस पुस्तक में विभिन्न लेखकों के द्वारा कवि शुभदर्शन कुमार के व्यक्तित्व और उनके काव्य में विद्रोह की भावना को प्रस्तुत किया गया है। यह एक आलोचनात्मक पुस्तक है। इसमें विभिन्न लेखकों के विचारों को प्रस्तुत किया गया है।

14. विद्यानिधि शाबड़ा, "निराला और पुश्किन के काव्य में विद्रोह: एक तुलनात्मक अध्ययन", जबाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली, 1991 :

प्रस्तुत शोध प्रबंध में विद्रोह के विभिन्न अर्थों को प्रस्तुत किया गया है। निराला और पुश्किन के जीवन और काव्य में विद्रोह भावना को अभिव्यक्त किया गया है।

15. नीतू सिंह, "नागार्जुन के काव्य में विद्रोही चेतना", वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, 2014 :

प्रस्तुत शोध प्रबंध में नागार्जुन के काव्य की विद्रोही भावना को प्रस्तुत किया गया है। नागार्जुन के जीवन के संघर्षों को भी इसमें प्रस्तुत किया गया है।

16. पटराम साहू, "छत्तीसगढ़ के आदिवासियों का विद्रोह(1885-1947)", रविशंकर शुक्ला यूनिवर्सिटी, रायपुर, 1999 :

प्रस्तुत शोध प्रबंध में छत्तीसगढ़ के आदिवासियों का अपने राज्य और अपने अधिकारों के लिए किए गए विद्रोह के बारे में बताया गया है।

17. नगेन्द्र वसु, "हिन्दी विश्वकोश", भाग 21वां, दिल्ली, बी. आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, 1986 :

इस कोश में विद्रोह शब्द का हिन्दी भाषा में अर्थ बताया गया है।

18. कैसल्स, "इनसाइक्लोपीडिया ऑफ शोषल साइन्सिस", vol 13-14, 1942 :

इस कोश में विद्रोह शब्द के अँग्रेजी, रूसी और रोमन भाषा में अर्थों को प्रस्तुत किया गया है।

विद्रोह भावना की सैद्धान्तिक अवधारणा

विद्रोह- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना मनुष्य का और मनुष्य के बिना समाज का कोई अस्तित्व नहीं है। समाज की प्रथम इकाई मनुष्य है। मनुष्य से परिवार बनता है। परिवार से ही समाज का विकास होता है। परिवार के बाद मनुष्य समाज से जुड़ता है। समाज में रहते हुए मनुष्य समाज की परिस्थितियों को देखता और समझता है। मनुष्य के जीवन में कई उतार-चढ़ाव आते हैं। मनुष्य को सभी प्राणियों से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि उसके पास बुद्धि का गुण होता है। बुद्धि के गुण के कारण ही मनुष्य को यह पता होता है कि उसके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। समाज की अच्छी और बुरी व्यवस्था के बारे में उसको पता चलता है। समाज की अच्छी व्यवस्था को तो वह स्वीकार कर लेता है, लेकिन जो समाज के रीति-रिवाज, बुरी व्यवस्था, परंपराए, धार्मिक आडंबर, रूढ़ियाँ आदि होती हैं, उनके प्रति मनुष्य के मन में प्रतिरोध की भावना उत्पन्न होती है। मनुष्य की यही प्रतिरोध की भावना विद्रोह का रूप धारण कर लेती है।

विद्रोह मनुष्य की आंतरिक भावना होती है, जिसमें अस्वीकार की भावना प्रमुख रूप से रहती है। विद्रोह के अनेकों अर्थ उजागर हुए हैं। इस लिए विद्रोह शब्द का कोई निश्चित अर्थ बताना बहुत कठिन बात है। व्यक्ति और समूह के संदर्भ में विद्रोह के तमाम सकारात्मक और नकारात्मक अर्थ देखे जा सकते हैं। कभी विद्रोह को असंतोष, प्रतिक्रिया, असहमति, विरोध, निषेध आदि अर्थों में देखा गया है तो कभी ध्वंस, अराजकता और अव्यवस्था के रूप में समझा गया है। अर्थ विस्तार के रूप में विद्रोह के लिए जन-क्रांति, जन-संघर्ष आदि शब्दों के रूप में प्रयोग किया गया है। समाज में अनेक कार्य ऐसे होते हैं, जिनको कोई पसंद नहीं करता या फिर किसी परंपरा के टूटने के कारण लोग उस बात का विरोध करते हैं। इस स्थिति में ही विद्रोह का जन्म होता है। डॉ. नरेंद्र मोहन के शब्दों में, "मनुष्य जब दासता की मनोवृत्ति से उबरने के लिए प्रयत्नशील होता है और समानता की मनोभूमि पर अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर संघर्षरत होता है, तभी विद्रोह की नींव पड़ती है।"[1] सदियों से संसार में दास प्रथा चल रही है, जिसके अंतर्गत एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को अपना दास बनाकर रखता था। इस प्रथा के अधीन दासों की स्वतंत्रता बिल्कुल ही नष्ट हो चुकी थी। दासों का हर प्रकार से शोषण

किया जाता था और उनकी स्थिति दयनीय थी। धीरे-धीरे समय के साथ दास लोगों को अपने अधिकारों का ज्ञान होना शुरू हुआ तो उन्होने अपने अधिकारों की मांग की और अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाई। यह एक अटल सच्चाई है कि मनुष्य का जीवन प्रारम्भ से ही संघर्षमयी रहा है। मनुष्य को प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष करना पड़ता है। बिना संघर्ष किए मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता है। लेकिन मनुष्य का संघर्षमयी जीवन अत्याधिक बढ़ जाता है तो उसका संघर्ष विद्रोह का रूप धारण कर लेता है। विद्रोह एक व्यापक अवधारणा है। विद्रोह शब्द के अनेक अर्थ बताए गए हैं। विद्रोह के प्रारम्भिक तौर पर दो अर्थ लिए जाते हैं- राजनीतिक – सामाजिक अर्थों में सौन्दर्य, बगावत या विप्लव, शस्त्र या आवाज़ उठाना और व्यक्तिगत अर्थ है – सत्ता, नियमों या व्यक्ति का विरोध। हिन्दी विश्वकोश के अनुसार, "विद्रोह का अर्थ है – 'अनिष्टाचरण', किसी के प्रति होने वाला द्वेष या आचरण, जिससे उसको हानि पहुँचे, राज्य में होने वाला भारी उपद्रव जो राज्य को कष्ट पहुंचाने या नष्ट करने के उद्देश्य से हो।"[2] यहाँ पर विद्रोह शब्द के लिए अनिष्टाचरण शब्द का प्रयोग कर विद्रोह के संकीर्णतम अर्थ को प्रस्तुत किया गया है क्योंकि यह जरूरी नहीं है कि विद्रोह का परिणाम ध्वंस ही हो। विद्रोह सृजनात्मक भी होता है और इसमें जन कल्याण की भावना भी निहित हो सकती है। इस लिए विद्रोह का अर्थ और क्षेत्र व्यापक है। विद्रोह शब्द के अर्थ को और अधिक अच्छी तरह से समझने के लिए इसके अन्य भाषाओं में अर्थों को प्रस्तुत किया गया है, जिससे कि विद्रोह का अर्थ स्पष्ट होगा।

'द प्रैक्टिकल संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी' के अनुसार, "दुह+ध= द्रोह तथा 'वि' उपसर्ग से स्यूत विद्रोह (पु.सं.) आंग्ल शब्द 'रिबेलियन' का पर्याय है जोकि स्वयं लैटिन शब्द 'रिबेलियों' का उदर जात है। 'वि' उपसर्ग, पार्थक्य, विलगाव, किसी क्रिया का विपरीत कर्म निग्रह, नियोग, अव्याप्ति, विकराल, विहीन, निषेध आदि अर्थों का बोधक है। द्रोह से अभिप्राय उत्पात, उपद्रव, प्रतिहिंसा का भाव, विश्वासघात दूसरे का अहित-चिंतन, वैर-द्वेषों चोट, साजिश, घृणा आदि से है, जबकि विद्रोह से समानार्थक, अविभावक, अधिकारी, गुरु, परंपरा, संस्था आदि के विरुद्ध किया जाने वाला आचरण है।"[3]

'इन्साईक्लोपीडिया ऑफ सोशिल साइन्सिस' के अनुसार, "अँग्रेजी में विद्रोह के लिए दो शब्द हैं- 'रिवोल्ट' और 'रेबेलियन', जिनका अर्थ है किसी राज्य के नागरिकों द्वारा राजनीतिक उद्देश्यों के लिए सरकार के खिलाफ़ सशस्त्र प्रतिरोध, जिसका अंत बगावत, गृहयुद्ध या क्रांति से हो। रूसी भाषा में भी विद्रोह के लिए दो शब्द हैं- 'वस्तानिये' और 'मितेश', जिनका एक अर्थ सैन्य तथा जनविद्रोह है तो दूसरा अशांति और आवेश को व्यक्त करता है।

राजनीतिक-सामाजिक संदर्भों में संकीर्णत्म अर्थ में उसे सीमा-सम्बन्धी स्वायनता के लिए संघर्ष के रूप में व्याख्यायित किया गया है। इसी अर्थ में उसे रोमन साम्राज्य में लिया गया, जहां 'रेबेलोरे' का अर्थ था – 'दबाए गए लोगों का पुनः युद्ध में प्रवृत होना।"[4]

विभिन्न शब्दकोशों में विद्रोह की व्याख्या विरोध, अस्वीकार, सत्ता के प्रति अविश्वास, उथल-पुथल, उपद्रव, बगावत, क्रांति का जनक आदि के अर्थ में की गई है। 'बृहत हिन्दी कोश में विद्रोह को क्रांति के समतुल्य सिद्ध किया गया है, किसी राज्य या सरकार को उलटने के लिए किया जाने वाला बलवा, उपद्रव, क्रांति।'[5] 'हिन्दी शब्दसागर इसे व्यक्तिपरक तथा समाज या सत्तापरक आचरण के रूप में प्रस्तुत करता है जोकि द्वेष या उपद्रव से जुड़ा है।'[6] 'बृहत पर्यायवाची कोश में इसे शत्रुता और विप्लव के पर्यायवाची के रूप में प्रस्तुत किया गया है।'[7] 'डॉ॰ कामिल बुल्के इसे 'बगावत' के रूप में प्रस्तुत करते हैं।'[8]

विश्वकोश विद्रोह का अर्थ विस्तार करते हुए इसे तख़्ता-पलट के रूप में प्रस्तुत करते हैं, 'द अमेरिकन कॉलेज इन्साईक्लोपीडिया' के अनुसार, "विद्रोह सामान्यतः कुशलता से संगठित, स्वतन्त्रता प्राप्ति के उद्देश्य से पूर्ण, सरकार का तख़्ता उलटने से जुड़ा है।"[9] चेम्बर्स इन्साईक्लोपीडिया की दृष्टि में, "विद्रोह, व्यक्ति का वह कार्य है जोकि वह सरकार के विरुद्ध सशस्त्र विरोध के द्वारा करता है।"[10] इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार, "विद्रोह किसी (व्यक्ति) का वह कार्य है, जिसमें कि वह सरकार के प्रति, जिसके प्रति कि उसके मन में स्वामिभक्ति होती है, सशस्त्र प्रतिरोध करता है।"[11]

इस प्रकार विद्रोह के अर्थ को अन्य भाषाओं में देखने के बाद यह पता चलता है कि विद्रोह अपने आप में एक व्यापक अवधारणा है। विद्रोह का अर्थ केवल हानि पहुंचाना ही नहीं है, बल्कि अव्यवस्थित को व्यवस्थित करने का प्रयास होता है। विद्रोह जनता के द्वारा बुरी व्यवस्था के विरुद्ध हो सकता है और समाज की रूढ़िगत परम्पराओं का खण्डन कर नवीनता की स्थापना के लिए हो सकता है। विद्रोह के लिए विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग अर्थ बताए हैं। इस लिए विद्रोह के अर्थ को स्पष्ट करने में समस्या उत्पन्न होती है। विद्रोह का मुख्य कारण व्यक्ति के द्वारा अपने अस्तित्व की पहचान है। व्यक्ति स्वतंत्र होना चाहता है। डॉ. राकेश प्रेम के अनुसार, "मनुष्य जन्म से ही स्वतंत्र उत्पन्न हुआ है। भले ही वह सामाजिक प्रभाओं के बंधन में जकड़ा हुआ है अर्थात किसी भी प्रकार की परतंत्रता, घुटन या अनावश्यक नियंत्रण मनुष्य की

नैसर्गिक प्रवृति नहीं है।"[12] व्यक्ति को उसके अस्तित्व का बोध होता है तो उसका चैतन्य जागृत होता है और वह अपने अस्तित्व की स्थापना के लिए व्यवस्था के प्रति अपना प्रतिरोध व्यक्त करता है। यही उसकी विद्रोह भावना है। आचार्य द्विवेदी के शब्दों में, "मनुष्य का चैतन्य भीतर-भीतर दीप्त हो रहा है। उसका विवेक जाग रहा है, सृष्टि के इतिहास को देखने से लगता है कि जड़-शक्ति तत्व से प्राण-तत्व और प्राण-तत्व से ऐंद्रिए जगत का विकास फिर उससे मनस्तत्व और मनस्तत्व से भी सत और असत का विवेक करने वाला बुद्धि तत्व क्रमशः विकसित हुआ।"[13] इस तरह मनुष्य के अंदर अस्तित्व बोध जागृत हुआ और खाने-पीने, उठने-बैठने की प्रवृतियों की भांति विद्रोह भी मनुष्य की मूलभूत प्रवृति है। इस प्रकार विद्रोह व्यक्ति की पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता की स्थापना है, जिसमें किसी प्रकार का कोई बंधन न हो।

विद्रोह शब्द के स्थान पर कई बार अन्य शब्दों का प्रयोग किया जाता है जैसे कि, "असहमति, क्रांति, द्रोह, आँख उठाना, सिर उठाना, व्यवस्था का विरोध, प्रजाकोप, उन्नतिशील, अस्वीकार की भावना, बगावत, उभरना आदि।"[14] यह सभी विद्रोह के समानार्थक शब्द हैं। इन सब शब्दों का प्रयोग कई विद्वान विद्रोह शब्द के स्थान पर कर देते हैं, जो कि न्याय संगत नहीं है। यह बात तो स्वीकार्य है कि विद्रोह शब्द इन सभी शब्दों को पूर्णता प्रदान करता है लेकिन विद्रोह शब्द की अपनी अलग महत्ता है, अपनी अलग प्रवृति है। इस लिए विद्रोह के स्थान पर इन शब्दों का प्रयोग करना ठीक नहीं है। लेकिन इतना कहने पर भी इन सभी विद्रोह के समानार्थक शब्दों का विद्रोह के साथ सम्बन्ध अवश्य है। इस लिए विद्रोह के साथ इन शब्दों का सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

असहमति और अस्वीकृति को एक ही अर्थ में देखा जा सकता है। समाज में नए नियम, व्यवस्थाएँ और परम्पराएँ बनती रहती हैं। लेकिन जब ये परम्पराएँ समाज के लोगों के अधिकारों के रास्ते में रुकावट बनती हैं या फिर उनको इनका कोई लाभ नहीं मिलता तो कुछ लोग उनके प्रति अपनी असंतुष्टि प्रकट करते हैं। यह असंतुष्टि ही असहमति का कारण बनती है। रोमिला थापर ने यह तर्क दिया है कि, "स्थापित विचारधाराओं या विश्वास पद्धतियों पर शंका के रूप में भी असहमति को प्रकट किया जा सकता है। इस रूप में वह एक नई विचारधारा का बीज बन जाती है।"[15] इस प्रकार असहमति विद्रोह का समानार्थक है, जिसमें किसी विचार को अस्वीकार किया जाता है। एक दूसरी विचारधारा सुधार की भी दी गई है। सुधार किसी व्यवस्था का निषेध नहीं करता बल्कि उसकी अच्छे मूल्यों को और सामाजिक सुविधाओं को स्वीकार करता है। सुधार के व्यवस्था की जो कमियाँ हैं, उनमें अच्छा परिवर्तन लाने का प्रयास

करता है। लेकिन विद्वानों का एक वर्ग यह मानता है कि सुधार के कारण विद्रोह की जो चेतना है, वह कम हो जाती है क्योंकि सुधार अंतर्विरोधों के ऊपर समझौतों का दबाव डाल देता है। जोसेफ़ गुसफील्ड लिखते हैं, "सुधार की विशिष्टता उसके क्रमिक और वैध रूप में है। सामाजिक संरचनाओं के भीतर ही अंतर्विरोधों का नियंत्रण और 'खेल के नियमों के अनुसार' चलना उसकी खासियत है। वह संस्थाओं में कुछ खास परिवर्तन चाहता है, जीवन मूल्यों में परिवर्तन नहीं। इस तरह वह विरोध की क्षणिक और अवैध प्रकृति से विषम हो जाता है।"[16]

विद्वानों का एक दूसरा वर्ग भी है जो सुधार को क्रांति की तरफ एक कदम मानता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और यही क्रमिक प्रक्रिया लोगों की मानसिकता को बदलती रहती है और यह उनको क्रांति जैसे बड़े कार्य की तरफ ले जाती है। लेकिन क्रांति हमेशा परिस्थितियों के अनुरूप नहीं होती। कई बार क्रांति का कुछ गलत प्रभाव भी पड़ सकता है। लेकिन दूसरी तरफ सुधार का अपना एक खास महत्व है, जिसमें जन-कल्याण की भावना निहित होती है। रेमंड एवन लिखते हैं, " पूरा किया गया सुधार कुछ तो बदलता है।..... उस बुद्धिजीवी के लिए जो राजनीति में मनबहलाव के लिए जाता है या उसे एक महत्तम उद्देश्य का नाम देता है, सुधार शुष्क है और क्रांति उत्तेजक। सुधार उसे नीरस लगता है, क्रांति काव्यात्मक। इस तरह सुधार की सीमाओं को ध्यान में रखकर भी उसके महत्त्व से इन्कार नहीं किया जा सकता।"[17]

विद्रोह और क्रांति :

अगला प्रश्न है विद्रोह और क्रांति शब्दों के बीच के अंतर का। इन शब्दों को इतने अस्पष्ट अर्थों में प्रस्तुत किया गया है कि इनका वास्तविक अर्थ कुछ भी नहीं रह गया है। विद्यानिधि छाबड़ा के अनुसार, "कहने को तो विद्रोह और क्रांति में कई अंतर गिन दिए जाते हैं- मसलन, विद्रोह असफल होता है, क्रांति सफल। विद्रोह सहजस्फुर्त होता है, क्रांति वैचारिक, संगठित प्रयास। विद्रोह तत्कालीन परिस्थितियों के प्रति असंतोष भर दिखाता है, किसी वैकल्पिक सत्ता को जन्म नहीं देता, जबकि क्रांति सामाजिक यथार्थ को पूर्णतः बदल देती है। विद्रोह केवल निषेध और ध्वंस करता है, जबकि क्रांति एक नई जीवन दृष्टि का निर्माण करती है। विद्रोह किसी दूसरे उद्देश्य का साधन है, जबकि क्रांति स्वयं अपना लक्ष्य है आदि। इस तरह के अंतिम निष्कर्षों और पूर्वाग्रहों में विद्रोह और क्रांति की मूल चेतना नष्ट ही होती है, सार्थक नहीं।"[18] विद्रोह और क्रांति में यह अंतर स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि यहाँ तक वैचारिक पृष्ठभूमि का

सवाल है विचारधारा भी दोनों में ही रहती है। दोनों में ही संघर्ष भी निहित है। विद्रोह और क्रांति दोनों में हिंसा का प्रयोग भी किया जाता है। ध्वंस भी दोनों में है और सृजन भी दोनों में है। विद्रोह और क्रांति दोनों के अच्छे परिणाम भी हो सकते हैं और बुरे भी। यह नहीं है कि विद्रोह केवल अनिष्ट ही करता है और क्रांति हमेशा सुधार ही लाती है। विद्रोह और क्रांति की सफलता और असफलता समय और परिस्थितियों पर आश्रित होती है। इस प्रकार विद्रोह और क्रांति में जो अंतर बताए गए हैं, वह सार्थक प्रतीत नहीं होते हैं। क्योंकि विद्रोह और क्रांति में जो अंतर बताए गए है, वही सब उनकी समानताए भी है।

मुख्य रूप से विद्रोह और क्रांति में अंतर विस्तार अथवा व्यापकता का है। क्रांति एक व्यापक शब्द है। क्रांति का क्षेत्र विशाल होता है। देखा जाए तो एक अकेला व्यक्ति भी विद्रोह कर सकता है। इसको व्यक्तिगत विद्रोह कहा जाता है, लेकिन अनेक व्यक्तियों द्वारा किया गया विद्रोह क्रांति का रूप धारण कर सकता है। विद्यानिधि शाबड़ा के अनुसार, "विद्रोह और क्रांति का दूसरा बड़ा अंतर उनके संदर्भ का है। देखा जाए तो विद्रोह एक अध्यात्मक या तात्विक शब्द है, जबकि क्रांति का दर्शन मार्क्सवादी विचारधारा से जुड़कर ही विकसित हुआ है।... ऐतिहासिक विश्लेषण में वह व्यवस्था मात्र को चुनौती देता है, जबकि क्रांति एक खास व्यवस्था को उसकी सभी सामाजिक संरचनाओं के साथ बदलती है और एक नई व्यवस्था को जन्म देती है।"[19] अस्तित्ववादी कामू और नित्शे ने भी इसी आधार पर विद्रोह और क्रांति में भेद किया है। सात्र के अनुसार क्रांति का मुख्य कारण कभी न खत्म होने वाली दासता की नियति है। इस लिए क्रांतिकारी को इस नियति से बचने के लिए विद्रोह के स्रोतों से प्रेरणा लेनी चाहिए। विद्रोह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया और संघर्ष है जो कि प्रजा द्वारा रचा और जिया जाता है। सात्र लिखते हैं, "एक क्रांतिकारी संसार को बदलना चाहता है। वह वर्तमान को पार कर भविष्य की और बढ़ता है- ऐसी मूल्य व्यवस्था की तरफ, जिसको वह खुद गढ़ता है। लेकिन एक विद्रोही तत्कालीन यथार्थ की कटुता को हमेशा बनाए रखना चाहता है, जिससे कि वह हमेशा उसके खिलाफ़ विद्रोह करता रह सके।"[20] इस प्रकार विभिन्न विद्वानों के क्रांति और विद्रोह के सम्बन्ध में मत देने का कारण विद्रोह और क्रांति के भेद को स्पष्ट करना रहा है। इन मतों के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि विद्रोह क्रांति को आधार प्रदान करता है। विद्रोह और क्रांति का उद्देश्य केवल राजनीतिक सत्ता में परिवर्तन करना ही नहीं है बल्कि प्रत्येक क्षेत्र में सुधार और नवीन चेतना और व्यवस्था का निर्माण करना होता है।

विद्रोह के पक्ष :

कोई भी वस्तु या विचारधारा है उसके दो पहलू होते हैं। एक पहलू अच्छा होता है तो दूसरे में कुछ कमी होती है। इसी प्रकार विद्रोह के भी दो पक्ष माने गए हैं- सकारात्मक और नकारात्मक। सकारात्मक के नाम से ही स्पष्ट हो जाता है कि इसमें सुधार की भावना निहित होती है। विद्रोह के इस पक्ष में जनहित और जनता के कल्याण की भावना होती है, जिससे किसी को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचती और विद्रोह सफल होता है अर्थात स्वच्छ भावना से जो विद्रोह किया जाए वह विद्रोह का सकारात्मक पक्ष माना जाता है। डॉ॰ राकेश प्रेम के अनुसार, "सकारात्मक जीवन मूल्यों से जुड़ा विद्रोह एक व्यापक सामाजिक धरातल प्रदान करता है।"[21] विद्रोह का बीज एक और तो व्यवस्था की बुरी कड़ी को काटने का निश्चय करता है तथा दूसरी और पुनर्स्थापना को प्रेरित करता है। ऐसे में सकारात्मक जीवन दृष्टि के प्रति वचनबद्ध विद्रोही स्वयं को दाव पर लगा देता है। केवल इसी प्रकार से वह अपने मूल्यों, जीवन के आदर्शों को पा सकता है। यही सकारात्मक विद्रोह का स्वरूप है, जिसमें मनुष्य बिना किसी लालसा के दूसरों के प्रति उत्तरदाई रहता है। लेकिन नकारात्मक विद्रोह के अंतर्गत केवल लालसा को ही देखा जा सकता है। इसमें जनहित की भावना के लिए कोई स्थान नहीं होता। व्यक्ति केवल अपने लाभ के बारे में सोचता है और इसी लालसा के अधीन वह दूसरों का बुरा तक करने में संकोच नहीं करता है। पहले समय राजाओं के समय में विद्रोह का अधिकतर स्वरूप नकारात्मक ही होता था, क्योंकि राजा के पारिवारिक सदस्य और सम्बन्धी ही अपने हित और राज्य की प्राप्ति के लिए आंतरिक विद्रोह को जन्म देते थे। वह राजद्रोही जनता को राजा के विरुद्ध भड़काते थे और जनता को विद्रोह करने के लिए उकसाते थे। इस प्रकार एक तरफ तो वह राजा के वफादार बनकर रहते थे तो दूसरी तरफ राजा के खिलाफ ही षडयंत्र रचते थे। यह विद्रोह का नकारात्मक पक्ष है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति केवल अपने बारे में ही सोचता है। इसके लिए चाहे दूसरों का अहित ही क्यों न हो जाए। नकारात्मक विद्रोह में जनसमर्थन का अभाव रहता है, जिसके कारण विद्रोह या क्रांति अपने व्यापक उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर पाती है।

विद्रोह के प्रकार :

विद्रोह व्यक्ति की मूल भावना है। इस प्रकार विद्रोह के कई रूप हो सकते हैं, जिनके द्वारा एक व्यक्ति या समूह अपनी विद्रोह की भावना को व्यक्त करता है। मुख्य रूप से विद्रोह के रूप इस प्रकार हैं-

व्यक्तिगत विद्रोह :

विद्रोह अकेले व्यक्ति का भी हो सकता है। कई लोग ऐसा सोचते हैं कि एक अकेला व्यक्ति क्या कर लेगा? लेकिन एक अकेले व्यक्ति का विद्रोह ही सामूहिक क्रांति या विद्रोह का आधार बनता है। अगर एक व्यक्ति समाज या किसी व्यवस्था के प्रति आवाज़ उठाता है, तभी उसकी आवाज़ दूसरे लोगों तक पहुँचती है। एक विद्रोही अपने अस्तित्व को दूसरों के साथ जोड़ता तथा अनुभव करता है। यह मनुष्य की मानसिक प्रवृति है कि अगर उसके अधिकारों में कोई रुकावट उत्पन्न करता है या उसके ऊपर कोई बंधन लगाया जाता है तो वह उसके प्रति अपना विद्रोह व्यक्त करता है। सामान्य अवस्था में एक व्यक्ति किसी स्थिति को अनदेखा करता चलता है, जिसको वह पसंद नहीं करता या कभी थोड़ा रुष्ट होता या बड़बड़ाता है, खीझता है या आवेश में आता है किन्तु जब उत्पीड़न का एक लंबा समय उसे लगातार मानसिक एवं शारीरिक रूप से कष्ट देने लगे, तब उसकी देह में जैसे आग जल उठती है और मन के भीतर व्यापक उथल-पुथल होने लगती है। डॉ॰ राकेश प्रेम के अनुसार, "ऐसी स्थिति समुद्र के ज्वारभाटे और ज्वालामुखी की तरह किसी भी प्रकार के बंधन अथवा व्यवस्था को तिरोहित कर देती है। ऐसी स्थिति में किसी भी प्रकार का उपदेश, शमन, नियम आदि अर्थहीन होकर रह जाते हैं।"[22] इस प्रकार एक व्यक्ति भी किसी दमनकारी सत्ता की जड़ों को हिला सकता है।

सामाजिक विद्रोह :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। समाज की अपनी एक व्यवस्था होती है, जिसके आधार पर समाज का संचालन होता है। समाज की व्यवस्था, उसकी परम्पराओं और रूढ़ियां कई बार किसी व्यक्ति के रास्ते की रुकावट बनती हैं या फिर ऐसा कहा जा सकता है कि व्यक्ति समाज की परम्पराओं को अपने अधिकारों और अपनी स्वतन्त्रता में बाधा मानता है तो वह उस व्यवस्था के प्रति आवाज़ उठाता है। यही सामाजिक विद्रोह है। समाज में परिवार होता है। परिवार के लोग रिश्ते नातों में बंधे हुए होते हैं। लेकिन आज आधुनिक युग में व्यक्ति इन सभी रिश्ते नातों को भूल चुका है। इस सम्बन्धों में आए तनाव के प्रति भी व्यक्ति विद्रोह करता है। समाज की व्यवस्था के प्रति अपनी आवाज़ उठाता है।

राजनीतिक विद्रोह :

राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह होता है। आज आधुनिक युग में राजनीतिज्ञ भ्रष्ट हो चुके हैं। पहले जनता अंग्रेज़ो की गुलाम थी, लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय नेता भारत की जनता को लूट रहे हैं। जनता का हर प्रकार से शोषण किया जाता है। अनगिनत टैक्स लगाए जा रहे हैं। सत्ता की लालसा में नेता जनता तो भ्रमित करते हैं। चुनावों के दिनों में जनता से झूठे वायदे करते हैं और बाद में उनको पूछते तक नहीं हैं। राजनीति की ऐसी व्यवस्था के प्रति जनता विद्रोह करती है और अपने अधिकारों की मांग करती है।

आर्थिक विद्रोह :

केवल अर्थ को ही महत्ता दी जाती है। रिश्ते नातों का कोई मोल नहीं रह गया है। व्यक्ति पैसे के पीछे भागता है। आर्थिक क्षेत्र दो वर्गों में बंट चुका है- पूँजीपति और मजदूर वर्ग। पूँजीपति वर्ग हर तरह से मजदूर वर्ग का शोषण करता है। मजदूर वर्ग को उसकी मेहनत का पूरा फल नहीं दिया जाता है और उनसे अधिक से अधिक काम लिया जाता है। इस आर्थिक व्यवस्था के कारण अमीर और अमीर और गरीब और गरीब होता जा रहा है। यह आर्थिक क्षेत्र में असमानता का व्यवहार हो रहा है, जिसको कि मजदूर वर्ग झेल रहा है। इस असमानता के प्रति प्रतिरोध की भावना को ही आर्थिक विद्रोह कहा जाता है।

धार्मिक विद्रोह :

धर्म का रूप ही बदल गया है। धर्म के नाम पर केवल पाखंड और आडंबर ही रह गए हैं। गीता के पाठ को रटना और कुरान को याद करना ही धर्म समझा जाता है। धर्म में कई बुराईयां आ चुकी हैं, जिसका प्रति विद्रोह कि भावना को व्यक्त किया जाता है।

नैतिक विद्रोह :

आधुनिक समय में मनुष्य नैतिकता भूलता जा रहा है। मनुष्य संस्कार विहीन हो रहा है। मानवीय मूल्यों में गिरावट आती जा रही है। इसके प्रति व्यक्ति अपने विद्रोह को अभिव्यक करता है।

विद्रोह भावना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

प्रत्येक सिद्धान्त का अपना एक इतिहास होता है। इतिहास के आधार पर ही किसी सिद्धान्त को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। प्रत्येक सिद्धान्त किसी न किसी विचारधारा से जुड़ा हुआ होता है। इसी प्रकार विद्रोह का सिद्धान्त मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है। मार्क्सवाद के अनुसार समाज दो वर्गों में विभाजित हुआ है- मज़दूर और पूँजीपति वर्ग। इन दो वर्गों के कारण समाज में असमानता के कारण निरंतर संघर्ष चल रहा है। जब तक यह वर्ग रहेंगे, तब तक यह असमानता बनी रहेगी। इस लिए व्यक्ति के संघर्ष और विद्रोह के द्वारा इस वर्ग भेद को खत्म किया जा सकता है। मार्क्सवाद की अवधारणा से पूर्व भी विद्रोह का एक इतिहास है। कौटिल्य और अरस्तू आदि प्राचीन चिंतकों ने विद्रोह और क्रांति के साथ जोड़ा है। उनका उद्देश्य राज्य के संविधान और स्थायीत्व को विद्रोह की संभावना से बचना भले ही रहा हो, विद्रोह के कारणों का विस्तार से सैद्धांतिक विवेचन उन्होने जरूर किया। अरस्तू की स्थापना यह थी कि जब एक सामाजिक व्यवस्था समानता की पहचान में असमर्थ रहती है, तब उसके खिलाफ़ विद्रोह होता है। इसकी भी दो स्थितियाँ हैं- "समाज का बहुसंख्यक वर्ग तब विद्रोह करता है, जब वह देखता है कि सत्ताधारी अल्पसंख्यक के पास ज़्यादा संपत्ति है और समाज का अल्पसंख्यक वर्ग तब विद्रोह करता है, जब उसे अपनी संपत्ति और प्रतिष्ठा खो जाने या कम हो जाने का भय होता है। अर्थात निम्न वर्ग इस लिए विद्रोह करता है कि समानता चाहिए, उच्च वर्ग इस लिए कि वह ज़्यादा ऊंचा होना चाहता है।"[23]

अरस्तू की तरह कौटिल्य के विवेचन का उद्देश्य भी विद्रोह की संभावना को खत्म करना ही था। उन्होने 'अर्थशास्त्र' में व्यवस्था और नियंत्रण का एकमात्र अधिकार राज्य को दिया और राजतंत्र को आदर्श बताया। नागरिक को विद्रोह करने का अधिकार तो उन्होने नहीं दिया, पर राजा के लिए अपनी प्रजा के प्रति अपने राजधर्म को निभाना जरूरी बताया। विद्रोह को कौटिल्य ने राजसत्ता के विरुद्ध राज्याधिकारियों, कबीलाई सरदारों और अधीनस्थों के ऐसे षडयंत्रों में देखा, जिनका दमन राज्य के अस्तित्व के लिए जरूरी है।

दूसरी तरफ कई भारतीय शास्त्रों में विद्रोह के अधिकार को उस स्थिति में स्वीकार किया गया है, जब राजा धर्म के विरुद्ध आचरण करे। बौद्ध जातकों और धर्मशास्त्रों में अत्याचारी शासक के खिलाफ विद्रोह का अधिकार समस्त प्रजा को दिया गया है। लेकिन विद्रोह का यह नैतिक औचित्य परोक्ष रूप से ब्राह्मणों या प्रतिष्ठित नागरिकों के संदर्भ में है। षडयंत्र आदि करने वाले अक्सर राजघराने के लोग या राजा के उत्तराधिकारी होते थे। सामान्य जनता के विद्रोह के उदाहरण अक्सर बागियों, डाकुओं, कबीलाई सरदारों या समाज के बहिष्कृत साहसी नवयुवकों के मिलते हैं। ऐरिक होब्स्बोन ने इन्हें 'सामाजिक दस्यु' की संज्ञा दी है। उनका मानना है कि 'ये

वे किसान बागी हैं, जिन्हें राज्य तो अपराधी मानता है, लेकिन जो किसान समाज द्वारा नायक, नेता, यहाँ तक के न्याय के प्रतीक और मुक्तिदात्ता तक माने जाते हैं।.....एक आम किसान और बागी डाकू के बीच का यह सम्बन्ध ही सामाजिक दस्युता को रोचक और सार्थक बनाता है।"[24] सामाजिक दस्युता के यह उदाहरण अक्सर कृषि प्रधान समाज में ही मिलते हैं, जहां अन्य ओर दमन बिल्कुल प्रत्यक्ष है। राजनीतिक उथल-पुथल और लड़ाईयों के समय या अकाल या महामारी के समय ऐसे विद्रोहियों की संख्या बढ़ जाती है। कहीं-कहीं तो पूरी जाति या पूरे वर्ग के बागी होने की परंपरा मिलती है। गूजर जाति ऐसी ही आज़ाद और विद्रोही जाति मनी जाती है। कभी एक सरकार या एक व्यवस्था के खिलाफ भी एक पूरी जाति विद्रोही बनकर खड़ी हो जाती है। अंग्रेजों के विरुद्ध संथाल जाति का विद्रोह ऐसा ही रूप धारण करता है। एक बागी हो या पूरी बागी जाति उनका विद्रोह किसानों के जैसा ही होता है। लोकतन्त्र, समाजवाद और अराजकतावाद के सिद्धान्त उन्हें भले ही पता न हो, किसान जनता के लिए निस्वार्थ भावना से क्रांतिकारी ही होता है।

जन-साधारण के संदर्भ में राज्य का विरोध किसान-विद्रोहों में देखा जा सकता है। पंद्रहवी-सोहलवी शताब्दी में किसान विद्रोहों का सर्वाधिक प्रचलित रूप स्थानातरण था, जब किसान अपने गाँव-खेत छोड़कर दूसरी जगह बस जाते थे। इस से एक तरफ वह बड़ी-बड़ी वसूलियों से बच जाते थे तो दूसरी तरफ जमींदारों-सामंतों की कुव्यवस्था के प्रति विद्रोह को व्यक्त कर पाते थे। दूसरा तरीका स्थानीय रूप से कर देने से इन्कार कर देना था, जिससे राज्य की अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ने का खतरा बना रहता था। यह सीधा संघर्ष नहीं था बल्कि किसान की आत्मरक्षा और विरोध दिखाने का परोक्ष तरीका था। अक्सर धार्मिक संगठन, स्थानीय साधू-संत, किसानों के विद्रोह को अभिव्यक्त करने का माध्यम था। ज़्यादातर धार्मिक नेता यह दावा करते थे कि उनके पास दैविक शक्तियाँ और चमत्कारिक सिद्धियाँ हैं जो अत्याचार और दुख से लोगों की रक्षा कर सकती हैं। वैराज्ञ लेकर ऐसे गुटों का सदस्य बन जाना भी विद्रोह का परोक्ष रूप था।

धर्म और भक्ति का विद्रोह के रूप में इस्तेमाल तो कई बार किया गया है। मध्यकाल में अखिल भारतीय सांस्कृतिक आंदोलन का रूप लेने वाला भक्ति आंदोलन विरोध और असहमति की कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति ही था। बंगाल में चैतन्य के मुक्त निर्बाध प्रेम की वैष्णव परंपरा, कबीर, गुरु नानक, रैदास आदि संतों ने धार्मिक आडंबरों के खिलाफ अपने विद्रोह की अभिव्यक्ति की थी।

दूसरी तरफ धार्मिक गुटों ने सत्ता और सामाजिक संरचनाओं के खिलाफ सीधे विद्रोह भी किए। भारत में अँग्रेजी शासन के विरुद्ध ऐसे अनेक विद्रोहों के उदाहरण मिलते हैं। 1763 में बंगाल और बिहार से शुरू होकर 1800 तक चलने वाला सन्यासी विद्रोह संभवतः

पहला संगठित प्रयास था, जब बेघर सन्यासियों ने किसानों के साथ मिलकर ब्रिटिश शासन का सक्रिय विरोध किया और देश की मुक्ति का आदर्श सामने रखा। किसानों के आर्थिक विद्रोह को फकीरों और सन्यासियों ने धार्मिक प्रेरणा दी, इसमें कि देश की मुक्ति सबसे बड़ा धर्म है, उस के लिए जीवन देना सबसे बड़ा पुण्य है, मातृभूमि की सेवा सबसे बड़ी भक्ति है।

रूस में भी सोहलवीं- सत्रहवीं शताब्दी में किसान विद्रोहों की एक लंबी शृंखला मिलती है। रूस में स्थानांतरण को रोकने के लिए किसान को भूदास बनाकर ज़मीन से बांध दिया जाता था। वहाँ प्राकृतिक संपदा ज्यादा थी और श्रमिक शक्ति कम, इसलिए किसान को उसकी अपनी ज़मीन के इलावा एक भूस्वामी की ज़मीन पर भी काम करना पड़ता था। उसके स्वैधानिक अधिकार नहीं थे और उसे दास की तरह खरीदा-बेचा जा सकता था। भूदास प्रथा के खिलाफ गहरा असंतोष किसान विद्रोहों में कई बार सामने आया, खास तौर पर दूरदराज के प्रदेशों में जहां जातीयता और प्रादेशिक स्वायत्ता की मांग ने उसे शक्ति दी। कज्जाकों और भगोड़े किसानों के इन विद्रोहों ने कई स्तनों पर समानान्तर सरकार स्थापित कर ज़ारशाही से सीधे टक्कर ली। बोलोतनिकवस्तेपान राज़िन, बुलाविन और पुगाचोव जैसे विद्रोहियों के नेतृत्व में इन विद्रोहों ने ज़ार की सत्ता को काफी समय तक हिलाए रखा। जॉर्ज बुड़कॉक ने इन विद्रोहों के चरित्र की पड़ताल करते हुए लिखा है कि, "उनमें आज़ादी की इच्छा से कहीं ज्यादा दूरवर्ती सत्ता के प्रति नफ़रत थी।... वे अगर भूदास प्रथा के खिलाफ थे तो इस लिए कि वे पराए ज़ार के शासन के खिलाफ़ थे, वरना उन्होने अपने विद्रोही नेताओं को 'ज़ार' नाम दिया... ये सभी विद्रोह किसान समुदाय की प्रादेशिक स्वायतत्ता पर बल देते थे और इसका आदर्शीकरण एक ठहर का 'मिथ' बन गया, जिसने उन्नीसवीं सदी के कई विचारकों को जोड़ा।"[25]

यह बात महत्त्वपूर्ण है कि ऐसे विद्रोहियों का उद्देश्य उत्पीड़न का विरोध और अन्याय से मुक्ति तो था लेकिन समाज में पूर्ण समानता की बात वे सोच भी नहीं सकते थे। सत्ता की सामाजिक संरचनाएँ वही थीं, राजधर्म और प्रजाधर्म के सिद्धान्त भी वही, लेकिन उनके बीच संतुलन और परस्पर सम्मान का आदर्श गढ़ा गया था। उन्होने सीधे-सीधे व्यवस्था में बदलाव की बात भले ही न की हो, लेकिन जिस आदर्श समाज का सपना वे देखते थे, वह तत्कालीन व्यवस्था के समानान्तर दूसरा विकल्प प्रस्तुत करना ही था। व्यवस्था के रूपों अर्थात सामाजिक संरचनाओं, मूलतः बदलने की विचारधारा को प्रस्तुत न कर पाने के कारण उनके क्रांतिकारी चरित्र को अस्वीकार करना गलत होगा। रोमिला थापर ने लिखा है कि, "यह उनसे उस बात करने की आशा होगा, जिसका विचार स्वयं उन्होने भी उस समय नहीं किया था। विद्रोही आंदोलनों की पहचान के रूप में व्यवस्था को बदलने की माँग एक तरह से आधुनिक जगत की बात है। इसके लिए कुछ ऐतिहासिक पूर्वस्थितियों का होना अनिवार्य है।"[26]

यह ऐतिहासिक पूर्वस्थितियाँ यूरोप में नवजागरण के उस दौर में उपस्थित हुई, जब वोल्तेयर, रूसो, दीदरो, लेसिंग गेटे आदि विचारकों ने हर विश्वास को बुद्धि की कसौटी पर परखा और चर्च तथा राजा के दैवी अधिकारों को तर्क और चिंतन से पराजित किया। इस क्रम में उन्होने मध्यकालीन रूढ़िवादी, सामंती विचारधारा और धार्मिक हठधर्मिता का विरोध कर यह साबित किया कि व्यक्ति की चेतना ज्ञान-विज्ञान और न्याय की सहायता से समाज भी बदल सकती है। इसलिए विज्ञान, दर्शन, साहित्य और कला के इन सृजनकर्ताओं ने अनजान और जड़बुद्धि भीड़ का तिरस्कार भी किया, तो वह इस रूप में उचित था कि तत्कालीन जनता इतिहास की प्रेरक शक्ति न थी और चर्च तथा राज्य के सामंती मूल्यों को आँख मूंदकर मान रही थी। इस रूप में व्यक्तिवाद का दर्शन धर्म और सामंती राज्य के बंधनों के खिलाफ विद्रोह था। ईसाई धर्म में यह व्यक्ति के ईश्वर के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध के रूप में उभरा। धर्म अब व्यक्तिगत हो गया। ईसा मसीह को अब दूसरे व्यक्तियों से श्रेष्ठ एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा गया, जो रोमन साम्राज्य के क़ानूनों का विद्रोह करता है, इस लिए पूजनीय है।

दूसरी तरफ व्यक्ति के सम्मान, अधिकार और वैयक्तिकता को महत्व देना उस मध्यकालीनता के खिलाफ विद्रोह था, जहां व्यक्ति परम्पराओं में बद्ध जीव था। रूसो की प्रसिद्ध उद्घोषणा, 'मनुष्य आज़ाद पैदा हुआ है, लेकिन कदम-कदम पर बेड़ियों में जकड़ा है'[27], व्यक्ति की स्वाधीनता की प्रेरणा बनी। व्यक्ति को अपार संभावनाओं के खजाने के रूप में देखा गया, जो दमनकारी सामाजिक व्यवस्था को ध्वस्त कर एक नए समाज की स्थापना करने में सक्षम था। विद्रोह एक 'नया धर्म' बन गया, जिसका लक्ष्य था- स्वाधीनता, समानता और बंधुत्व की प्राप्ति। व्यक्ति की स्वाधीनता उसके व्यक्तित्व के पूर्ण विकास की पहली शर्त बनी। यह स्वाधीनता असमानता के बंधनों से भी थी। रूसो ने 'असमानता का उदगम' नामक वार्ता में व्यक्ति की स्वाधीनता का यही पक्ष प्रस्तुत किया। उन्होने लिखा कि जैसे ही मनुष्य संपत्ति जोड़ने लगता है, प्रतिभा और निपुणता में असमानता संपत्ति में असमानता को जन्म देती है। संपत्ति और स्वामीत्व का विचार ही संघर्ष को जन्म देता है। इस संघर्ष को दबाने के लिए ऐसी कानून व्यवस्था बनाई जाती है, जो संपत्तिबान लोगों के हितों की रक्षा कर सके। इस तरह संपत्तिबान लोग एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था के नीचे रहने का समझौता करते हैं, जो असमानता और संपत्ति को अधिकार रूप में जायज बनाकर प्रस्तुत करती है। इसके विरुद्ध रूसो ने ऐसे 'सामाजिक समझौते' का स्वप्न देखा, यहाँ व्यवस्था 'आज़ाद' व्यक्तियों के बीच स्वाधीनता अनुबंध हो और मनुष्य व्यवस्था में रहकर भी मुक्त रह सके। वह खुद पर शासन करे और

नागरिकता के कुछ नियमों का कर्तव्य रूप में पालन करे। रूसो का आदर्श इस तरह एक ऐसा आदिम लोकतन्त्र था, जो समान रूप से आत्मनिर्भर जन-समुदाय पर आश्रित हो।

फ्रांसीसी क्रांति (1789) का उद्देश्य व्यक्ति की स्वाधीनता और लोकतन्त्र की प्रतिष्ठा ही था। फ्रांसीसी क्रांति की शुरूआत ऐसे जन विद्रोह के रूप में हुई थी, जहां निरंकुश राजतंत्र के सामंती ढांचे को तोड़ने और राजनीतिक व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के 'जन्मसिद्ध' अधिकार को पाने के लिए समाज के कई वर्ग एक जुट हुए थे। पहला, बुर्जुया वर्ग था, जो आर्थिक दृष्टि से सर्वाधिक शक्तिशाली बनने के बाद अब अभिजात वर्ग की तुलना में अपने अधिकारों में बढ़ोतरी चाहता था। दूसरा, किसान वर्ग था, जो सामंती उत्पीड़न और अंतहीन वसूलियों से परेशान होकर विद्रोह के रास्ते पर उतरा था। तीसरा, शहर का मेहनतकश वर्ग था, जो बेरोज़गारी और भुखमरी को झेल रहा था। 'स्वाधीनता, समानता और बंधुत्व' की छह सबसे ज्यादा किसान, मजदूर वर्ग को थी। लेकिन क्रांति के बाद इस नारे का अर्थ ही बदल गया। स्वाधीनता का मतलब बाज़ार में प्रतिद्वंदता की आज़ादी हो गया। जहां तक समानता का सवाल है, बुर्जुया वर्ग अपने लिए राजनीतिक लोकतन्त्र चाहता था, इसलिए आर्थिक समानता की बात उठते ही उसने मजदूर किसान वर्ग को किनारा कर दिया और अभिजात वर्ग से समझौता कर लिया और उसके राजतंत्र का अंग बन गया।

फ्रांसीसी इतिहासकार टोक्योविल ने लिखा है कि, "ज्ञान का प्रसार, किताबों का संसार फ्रांसीसी लोगों को अनिवार्य सिद्धान्त तो दे चुका था। इन्हें व्यवहार में लाना बाकी था...लोगों के दो ही उत्साह थे, पहला, असमानता के प्रति गहरी घृणा और ऐसा फ्रांस गढ़ने की इच्छा, जहां सब बराबर हो। दूसरी इच्छा न केवल बराबरी में रहने की थी बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्ति होकर जीने की थी...उस समय फ़्रांसीसियों में अपने इन आदर्शों के लिए इतना आत्मविश्वास था कि उन्होने सोचा कि वे आज़ादी की समानता और लोकतन्त्र से सामंजस्य बिठा पाएंगे। उन्होने उस प्राचीन व्यवस्था को तोड़ा भी, जहां लोग वर्ग, जातियों, संघटनों में बंटे हुए थे। उन्होने निरंकुश राजतंत्र के कानूनों को भी तोड़ा.... लेकिन जब क्रांति करने वाली पीढ़ी खत्म हो गई, उसकी पहले जैसी शक्ति खत्म हो गई। तब अराजकता और जन तानाशाही के बाद आज़ादी का आदर्श अपना आकर्षण खो बैठा और देश फिर से एकतंत्र खोजने लगा। प्रतिक्रांति के लिए इससे अच्छी परिस्थितियाँ और क्या हो सकती थीं।"[28] इस प्रकार फ्रांसीसी जनता ने अपनी स्वतन्त्रता के लिए विद्रोह किया।

विद्रोह एक स्थाई स्थिति नहीं। बल्कि एक प्रक्रिया है। निरंतर अस्वीकार की प्रक्रिया, जो बराबर बनती रूढ़ियों को तोड़ती है। गोल्डमैन ने लिखा है- "हमारे अब तक के पूरे इतिहास

में (और हो सकता है कि भविष्य में भी ऐसा हो) मनुष्य ने खुद को दो तरह के आधारभूत परिप्रेक्ष्यों में परिभाषित किया है, जिन में उसका आत्मिक जीवन और व्यवहार विकसित होता है। यह है-यथार्थ के अनुकूल बनने की दृष्टि या फिर यथार्थ को पार कर संभाव्य की ओर जाने की प्रवृति। इस संभाव्य को मनुष्य स्वयं रचता है। हालांकि यथार्थ का अनुकूलन किसी व्यक्ति या सामाजिक समुदाय के लिए बहुत जरूरी है, लेकिन वह ऐसे संतुलन को जन्म देता है, जिसके जड़ और अपरिवर्तनशील होने का खतरा रहता है। ....दूसरी तरफ 'संभाव्य' मानव इतिहास को समझने की आधारभूत श्रेणी है।"[29] इन दोनों स्थितियों में अंतर यह है कि यहाँ पहली स्थिति व्यवस्था को यथावत बनाए रखने की हिमायती है, तो दूसरी समाज की संभाव्य चेतना को खोजती है और यथास्थिति को बदलती है। विद्रोह और क्रांति, असहमति और विरोध इस दूसरी स्थिति के अंग हैं, जो यथार्थ को चुप-चाप स्वीकार नहीं करते, उसका अनुकूलन नहीं करते, बल्कि उसको अस्वीकार कर नया यथार्थ रचते हैं। अस्वीकार की प्रक्रिया निषेधात्मक होने पर भी विद्रोह अपनी प्रवृति में नकारात्मक नहीं होता। मनुष्य अगर विद्रोह करता है, तो इसलिए कि समाज में सकारात्मक मूल्य मौजूद हैं। विद्रोही का विरोधाभास यही है कि एक तरफ वह जीवन परिस्थितियों की व्यवस्थित एकरूपता के खिलाफ आवाज़ उठाता है, तो दूसरी तरफ एक ऐसी व्यवस्था की चाह करता है, जहां विचार और कर्म की एकता हो। इस तरह वह केवल ध्वंस ही नहीं। सृजन भी है। अस्वीकार की चेतना के अर्थ में विद्रोह एक गतिशील प्रक्रिया है, जो रूढ़ि का विरोध कर जड़ता को तोड़ती है। इस अर्थ में विद्रोह में कई ज्यादा विकल्प होते हैं। उसमें जड़ता खतरा नहीं रहता। आज जो प्रगतिशील मूल्य हैं, कल वही रूढ़ि बन जाते हैं। रूढ़िवाद और रूढ़ी विरोध दोनों कभी स्थाई स्थितियाँ नहीं होती। हर सिद्धान्त में एक समय के बाद जड़ता और यांत्रिकता आने लगती है, क्योंकि 'अक्सर ऐसा होता है कि किसी नए सिद्धान्त की मुख्य स्थापनाओं को समझ लेने के बाद, (उन्हें भी सही नहीं समझा जाता) लोग यह समझने लगते हैं कि अब हम पूरे पारंगत हो गए और इसी क्षण से, बिना अधिक बखेड़ा मोल लिए उसे प्रयोग में ला सकते हैं।'[30] अधूरे ज्ञान का विचारहीन सिद्धान्त प्रयोग की कट्टरता और रूढ़िवादिता को जन्म देता है। सिद्धान्त ऐसे खोखले फिकरों में बदल जाता है, जिसे किसी भी चीज़ पर चिपकाया जा सकता है। विद्रोह इस खोखली रूढ़िवादिता को तोड़ता है।

इस प्रकार विद्रोह एक परिवर्तनशील अवधारणा है, जिसमें अस्वीकार की भावना मुख्य रहती है। विद्रोह की इस अवधारणा, अर्थ, परिभाषा और इतिहास को देखने का मन्तव्य विद्रोह को स्पष्ट रूप से समझना है। विद्रोह किसी रूढ़ि को नहीं मानता और उसका ध्वंस करता है।

शुभदर्शन का व्यक्तित्व और कृतित्व :

डॉ॰ शुभदर्शन समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा को अभिव्यक्त करने वाले इस लेखक का जन्म 16 फरवरी, 1952 को मजीठा, जिला अमृतसर (पंजाब) में हुआ। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात शुभदर्शन ने 1975 में गुरु नानक देव विश्वविद्यालय में एम. ए. हिन्दी में दाखिला लिया। शुभदर्शन प्रारम्भ से ही अपनी शर्तों पर जीने वाले व्यक्ति है, जिनको झूठे सामाजिक सम्बन्ध और परम्पराए बाँध न सकी और शुभदर्शन हमेशा अपनी ही धुन में चलते रहे। शुभदर्शन ने राजनीति में भी भाग लिया लेकिन सिवाए धोखे के और कुछ नहीं मिला। उनको हर किसी ने ठगा लेकिन कवि के कदम कभी नहीं डगमगाए। शुभदर्शन जी की हिन्दी साहित्य को महत्वपूर्ण देन है। इन्होने पंजाब में रहते हुए भी हिन्दी भाषा में अपनी रचनाएँ की हैं। शुभदर्शन को आधुनिक युग का 'निराला' कहा जाता है। क्योंकि निराला के साहित्य में जो विद्रोही भावना मिलती है, वही विद्रोही भावना शुभदर्शन के काव्य में देखी जा सकती है। शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से यथार्थ रूप को अभिव्यक्त किया है। शुभदर्शन के कृतित्व की सूची इस प्रकार है-

प्रकाशित पुस्तकें: (काव्य संग्रह)- 'शब्दों के दायरे' (1987), 'लड़ाई खत्म नहीं हुई' (1988), 'संघर्ष जारी है' (1999), 'संघर्ष बस संघर्ष' (2011), 'संघर्ष ममता का' (2012)।

उपन्यास: 'कब तक चलोगे' (1979)।

प्रतिभागी कवि:

- 'अद्यतन': सं. उमाकांत खुबालकर, भगवती प्रसाद निदरिया, अलंकार प्रकाशन, दिल्ली,1987.
- 'युवा कवि : नए हस्ताक्षर'- सं. डॉ॰ बलदेव वंशी, किताब घर, नई दिल्ली, 1987.
- 'आज की हिन्दी कविता'- सं. जगदीश चतुर्वेदी, हरदयाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1985.
- 'पंजाब की हिन्दी कविता'- सं. मोहन सपरा, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, 2002.

आलोचना

- 'त्रासद अनुभूतियों का कवि : बलदेव वंशी, प्रवीण प्र. महरौली, 1987.

आलोचना प्रति.

- 'कविता में लिख इतिहास'- सं. डॉ॰ सुखबीर सिंह, जयश्री प्रकाशन, दिल्ली, 1985.

संपादन: (आलो.)

• 'समकालीन कविता: प्रामाणिक दस्तावेज़', पंजाब हिन्दी परिषद, 1981.

(काव्य)

• 'सैलाब से पहले'- अनुराग प्रकाशन, महरौली, 1981.

• 'एक और सैलाब', आधुनिक किताब घर, जालंधर, 1999.

साहित्यक पत्रिका

• 'बरोह' : त्रैमासिक 1979 से 1999.

समाचार पत्र

• वीर प्रताप, जालंधर- उप-सं. 1983-1985.

• पंजाब केसरी, जालंधर- उप-सं. 1986-1999.

• अमर उजाला, जालंधर-उप-सं. 2000-2006.

• पब्लिक दिलासा (सांध्य दैनिक), अमृतसर, सं. 2006 से।

पुरस्कार

शुभदर्शन जी को अपने काव्य संग्रह "संघर्ष बस संघर्ष" के लिए 'केंद्रीय हिन्दी निर्देशाल्य दिल्ली' द्वारा 2016 में पुरस्कृत किया गया है।

इस प्रकार शुभदर्शन का हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में बहुत महत्व है। शुभदर्शन ने अपने जीवन के यथार्थ को समाज के साथ जोड़कर उसको साहित्य का रूप दिया है। कवि ने जीवन में निराशा को झेला है, लेकिन कभी हार नहीं मानी। इसी लिए सभी ने उनका विरोध किया।

संदर्भ सूची

1. नरेंद्र मोहन(सं), 'विद्रोह और साहित्य", पृ- 17.
2. नगेन्द्र वसु(सं), हिन्दी विश्वकोश, भाग 21वां, बी.आर.पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली, 1986.
3. Sanskrit English dictionary, Ed. Arthur A. Macdonell,1893.
4. Kaisaels, "encyclopaedia of social sciences", vol. 13-14, pp-144.
5. कालिका प्रसाद (सं), बृहत हिन्दी कोश, वाराणसी; तृ. सं; संवत 2020.
6. श्यामसुंदरदास (सं), हिन्दी शब्दसागर, बी. ए. वाराणसी,चौथा भाग, 1928.
7. भोलानाथ तिवारी (सं), बृहत पर्यायवाची कोश, इलाहाबाद, संशो: सं, 1962.
8. कामिल बुल्के, "अँग्रेजी हिन्दी कोश", रांची.
9. The American college encyclopaedia Dictionary, vol-2, 1958.
10. Chamber's Encyclopaedia, vol- 8, London, 1968.
11. Encyclopaedia Britanica, vol- 19, 1951.
12. नीलम जुल्का, सहियावलोकन, अंक-5, जालंधर, 2011, पृ- 102.
13. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अशोक के फूल, भारतीय संस्कृति की देन, (निबंध), पृ-82.
14. www. Maxgyan. Com/synonym/vidroh.
15. रोमिला थापर, "आरंभिक भारतीय परंपरा में विरोध और असहमति", नामक लेख, 'साँचा', मासिक, जून-जुलाई, सन्यूक्तक, 1988, पृ- 88.
16. Joseph R. Gusfield, protest, Reform and Revolt- A reader in social movements, p- 86.
17. Raymond Avon: The Myth of the Revolution, ibid, p- 141.
18. विध्यानिधि शाबड़ा, निराला और पुश्किन के काव्य में विद्रोह:एक तुलनात्मक अध्ययन, थीसिस, नई दिल्ली, 1991, पृ- 4.
19. वहीं, पृ-4.
20. Jean Paul Sartre : Baudelaire, p- 51-52.

21. राकेश प्रेम, साहित्यावलोकन, अंक-5, जालंधर, पृ-102.
22. वहीं, पृ-104.
23. Aristotle : The politics, penguin, 1962, pp- 192-194.
24. E.J. Hobsbawn : Bandits, penguin books, 1985.
25. George woodcock : Anarchism- A History of libertarian ideas and Movement, p- 400-401.
26. रोमिला थापर, आरंभिक भारतीय परंपरा में विरोध और असहमति, नामक लेख, पृ- 93-94.
27. Jean Jacques Rousseau, social contract, p- 49.
28. Alexis De Tocqueville, How given the facts set forth in the preceding chapters, the revolution was a forgone conclusion, in when men revolt and why(ed), J.C. Davis, The freemen press, p- 97-98.
29. Lucien Goldman : cultural creation in modern society, p- 57.
30. एंगेल्स की ब्लोज़ को चिट्ठी, मार्क्स, एंगेल्स की नज़र में साहित्य और कला में संकलित, पृ- 66.

द्वितीय अध्याय: शुभदर्शन के काव्य में सामाजिक विद्रोह भावना

मानवीय जीवन का आधार समाज है। समाज की प्रथम इकाई मानव है। इस लिए समाज का मनुष्य के बिना और मनुष्य का समाज के बिना कोई अस्तित्व नहीं है। मनुष्य पहले परिवार और बाद में समाज के संपर्क में आता है। समाज में जो घटित होता है उसको देखता है और समझता है। इसके अतिरिक्त मनुष्य के पास बुद्धि का गुण होता है, जिसके कारण उसको पता होता है कि उसके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। इसी आधार पर मनुष्य अपने आस-पास हो रही घटनाओं को देखता और समझता है। समाज की रूढ़ियाँ, परम्पराएँ, विश्वास, व्यवस्था आदि में उसको कुछ बातें अच्छी लगती हैं तो कुछ बुरी। जो बाते उसको बुरी लगती हैं अर्थात जो व्यवस्था या परम्पराएँ रूढ़ियाँ उसको अपने रास्ते की रुकावट लगती हैं या फिर जो व्यवस्था उसके अधिकारों को सीमित करती हैं, उस व्यवस्था के प्रति उसके मन में प्रतिरोध उत्पन्न होता है और वह उस व्यवस्था के प्रति अपनी विद्रोह की भावना को व्यक्त करता है।

एक कवि या साहित्यकार का दृष्टिकोण साधारण मनुष्य से कुछ अलग होता है। जिस बात को साधारण मनुष्य देख या समझ नहीं पाता, वह बात एक कवि की आँखों से बच नहीं सकती है। कवि सामाजिक व्यवस्था की वास्तविकता को अभिव्यक्त करता है और बिना किसी डर और भय के उस व्यवस्था की विसंगतियों को सबके समक्ष प्रस्तुत करता है। कई बार ऐसा होता है कि साधारण मनुष्य का ध्यान अपने काम-काजों में फसे रहने के कारण उस तरफ नहीं जाता। मनुष्य को अपने आस-पास की विसंगतियों के बारे में कुछ ज्ञान नहीं होता है, तो ऐसी स्थिति में एक कवि या साहित्यकार का यह कर्तव्य है कि वह मनुष्य का ध्यान उस व्यवस्था की तरफ खींचे, लेकिन समाज में रहकर एक कवि के लिए यह कार्य करना काफी कठिन होता है क्योंकि जब कभी भी कोई कवि समाज की व्यवस्था पर प्रश्न उठाता है या फिर उसका विरोध करता है तो उसको स्वयं भी विरोध को सहन करना पड़ता है। भवभूति का यह श्लोक कवि की स्थिति को ब्यान करता है-

"हँसते हुए डँसते उपेक्षा-दंश से जो लोग,
ये वह जान ले अच्छी तरह,
मेरे सृजन के यत्न यह,
x x x
सीमित नहीं है काल यह
अपना सकेंगे आत्मवत इसको वही।"[1]

कभी-कभी तो कवि को उसकी रचना के लिए समाज से बहुत प्रोत्साहन मिलता है। लोग कवि की बहुत प्रशंसा करते हैं। समाज में उसको सम्मान मिलता है और उसको बुलंदी के शिखर पर बैठा दिया जाता है। लेकिन कई बार समाज के द्वारा उसकी रचना का विरोध किया जाता है और उसको समाज से निष्काषित तक कर दिया जाता है। लेकिन एक सच्चा कवि तो वही है जो समाज से मिलने वाले सम्मान और विरोध की चिंता किए बिना अपना कार्य करता रहे और जो बिना किसी लालच के और बिना किसी डर के सामाजिक यथार्थ को सबके समक्ष प्रस्तुत करे।

शुभदर्शन भी इसी कोटि के कवि हैं जो बिना किसी भय और लालच के समाज के वास्तविक रूप को अपने काव्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से समाज के रूपों, व्यवस्था, ग्राम्य जीवन, शहरीकरण आदि को व्यक्त किया है। शुभदर्शन ने अपनी कविता में प्रकृति के सौन्दर्य को अभिव्यक्त नहीं किया बल्कि समाज के यथार्थ को उजागर किया है। शुभ की मान्यता है कि कोई भी साहित्यक रचना, "व्यक्ति के दिमाग में चल रही समस्याओं की भीड़ वाली मानसिकता को कुरेद कर उसकी उस संवेदना को झकझोरने की प्रक्रिया है जो कि जीवन में इंसान होने की शर्त है।"[2] शुभदर्शन स्वयं सामाजिक व्यवस्था, परम्पराओं और रूढ़ियों का विरोध करते हैं। समाज में होने वाले जातीय भेद को नकारते हैं। शुभदर्शन ने समाज में व्याप्त प्रत्येक बुराई को सामने लाने का प्रयास किया है। शुभदर्शन के विद्रोह का अर्थ समाज और व्यवस्था की उस रूढ़ि की अस्वीकृति से है, जो जीवन और कृति को जड़ बना देती है। निराला ने लिखा है, "जब एक ही रूढ़ि को, एक ही आदत को, अज्ञात भाव से हम मानते जाएंगे, तब उस आदत की तरह हम भी जड़ बन जाएंगे।"[3] शुभदर्शन का विद्रोह इसी जड़ता के खिलाफ़ है। शुभदर्शन ने समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। सामाजिक सम्बन्धों में आए तनाव, रिश्तों के बिखराव के प्रति अपनी विद्रोही भावना को व्यक्त किया है। सुधा जितेंद्र के अनुसार, "गहराई से विचार करें तो शुभदर्शन की कविता 'विद्रोही कविता' है, 'विद्रोही के विरोध' की कविता है, 'वक्त की साज़िशों के खिलाफ' कविता है, 'मानवाधिकारों पर पहरे' की कविता है, 'सत्तालोलुपों की भेड़ियावृत्ति के बखिये उधेड़ती' कविता है और इन सबके बीच जीवन पर पंचम स्वर में विश्वास रखने की कविता है।"[4] सर्वप्रथम शुभदर्शन ने परिवार की मानव जीवन में महत्ता और आधुनिक समय में पारिवारिक जीवन में आई विसंगतियों को प्रस्तुत किया है।

पारिवारिक बिखराव के प्रति विद्रोह भावना :

परिवार समाज का आधार माना जाता है। सबसे पहले एक व्यक्ति आता है। व्यक्ति से एक परिवार बनता है, परिवार से नगर और इस तरह समाज का विकास होता है। परिवार से ही मनुष्य का जीवन प्रारम्भ होता है। जब एक बच्चे का जन्म होता है वो सबसे पहले परिवार के संपर्क में आता है और बाद में समाज के। इस प्रकार परिवार बच्चे का प्रथम शिक्षा स्थल माना गया है। परिवार में रहकर ही एक बच्चा रिश्ते-नातों के बारे में जानता है। परिवार के संस्कारों और आदर्शों को ग्रहण करता है। परिवार से ही बच्चा नए रिश्तों को सीखता और समझता है। भारतीय परंपरा में यह मान्यता है कि परिवार का जो वातावरण होगा वैसी ही बच्चे की सीरत होती है। इसी आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि परिवार का मनुष्य के जीवन में क्या और कितना महत्त्व है।

कवि शुभदर्शन ने अपनी कविताओं में परिवार के महत्त्व को प्रस्तुत किया है। शुभदर्शन ने परिवार में माता-पिता, भाई-बहन आदि के रिश्तों में आपसी प्यार और द्वेष को अभिव्यक्त किया है। शुभदर्शन ने पारिवारिक संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। परिवार में सबसे अहम माँ होती है। माँ परिवार के सभी सदस्यों का ख्याल रखती है और उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करती है। परिवार में सभी कार्यों की ज़िम्मेदारी माँ के ऊपर होती है। कुछ बुरा हो जाए तो उसका सारा दोष माँ को दिया जाता है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'भोली थी माँ' में एक माँ की स्थिति को व्यक्त किया है जिसकी बेटी अपने प्रेमी के संग भाग गई और सारा दोष माँ को दिया गया है-

"कितनी बिजलियाँ गिरि थीं,
जब प्रेमी संग भागी बेटी का दोषी,
माँ को ठहराया गया,
घर-परिवार, समाज के ताने,
चुपचाप सह गई वह।"[5]

माँ घर में सबका सोचती है, सबका ख्याल रखती है, लेकिन इस के बाद भी उसको परिवार और समाज के ताने सुनने पड़ते हैं। अपने बच्चों के पालन-पोषण का सारा जिम्मा माँ के कन्धों पर होता है। माँ अपना सारा जीवन परिवार को समर्पित कर देती है और बदले में कुछ नहीं मांगती। शुभदर्शन ने माँ की भूमिका को उजागर किया है कि वह परिवार की जड़ होती है। जब माँ चली जाती है तो परिवार का अस्तित्व खत्म हो जाता है। अर्थात जैसे एक पेड़ को अगर जड़ से उखाड़ दिया जाता है तो वह नष्ट हो जाता है ठीक उसी प्रकार परिवार में से माँ के चले

जाने से परिवार का अस्तित्व खत्म होना आरंभ हो जाता है। इस बात का व्याख्यान शुभदर्शन ने अपनी कविता 'जड़ उखड़ने से' में किया है-

"जड़ उखड़ने से ही,
सभी बेकाबू होकर,
x x x
और न मैं बड़ा होता।"[6]

माँ के दूर चले जाने से कवि को अहसास हो रहा है वह कितना अकेला हो गया है। उसे यह अहसास हो रहा है कि कुछ न करते हुए भी माँ घर, परिवार और रिश्ते नाते सभी को संभाल लेती थी और उसको कभी किसी बात का अहसास तक नहीं होने दिया, लेकिन अब जब उससे इतनी दूर चली गई है तो माँ की कमी कवि को खल रही है। माँ का रिश्ता दुनिया के सभी रिश्तों से अनमोल माना जाता है क्योंकि यही वह रिश्ता है जिसमें कोई लालच नहीं होता और निः स्वार्थ भावना होती है।

पारिवारिक जीवन के अंतर्गत माता-पिता दोनों ही अपनी अहम भूमिका अदा करते हैं। पिता को परिवार की आधार शीला माना गया है। परिवार के सभी फैसले पिता द्वारा ही किए जाते हैं। हमारे भारतीय समाज में पिता प्रधान समाज को अधिक महत्त्व दिया जाता है। घर के सभी सदस्य पिता की आज्ञा का पालन करते हैं और उनके फैसले को ही अंतिम माना जाता है। एक पिता सभी मुश्किलों का सामना करता है और अपने परिवार पर किसी मुसीबत का साया तक नहीं पड़ने देता। घर की सारी जिम्मेदारियों का बोझ पिता के कन्धों पर होता है। शुभदर्शन ने परिवार में एक पिता की भूमिका को प्रस्तुत किया है। पिता अपने अरमानों का गला घोंट कर अपने बच्चों की ख़्वाहिशों को पूरा करने का प्रयत्न करता है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'वसीयत से मनफी' में इसको अभिव्यक्त किया है-

"उदास न हो मेरे बच्चे,
अपने दर्द की दास्तां सुना,
तुम पर कोई बोझ नहीं डालूँगा,
नहीं बताऊंगा...
पेट की भूख मिटाने को,
कितने हंटर खाए।"[7]

परिवार में पिता को सबसे मज़बूत कड़ी माना गया है। क्योंकि पिता अपने परिवार को मुसीबतों से बचाने का हर संभव प्रयास करता है। अपने ऊपर सभी कष्ट लेता है। स्वयं दुखी होते हुए भी अपने दर्द को अपने परिवार के सामने उजागर नहीं होने देता। यही एक पिता का

अपने परिवार के प्रति कर्तव्य होता है। लेकिन परिवार में पिता की कमी सबको खलती है। क्योंकि पिता के आशीर्वाद के लिए उठे हाथ एक तरह की सुरक्षा का अहसास कराते हैं। शुभदर्शन की कविता 'तस्वीर में अहसास नहीं होता' के माध्यम से प्रस्तुत किया है। पिता का बच्चों के जीवन में क्या महत्त्व है। पिता के न होने के कारण बच्चा अपने पिता की तस्वीर से बातें कर रहा है, लेकिन तस्वीर तो अहसासहीन होती है। उसके पिता अब उसको छोड़ कर इस दुनिया से चले गए हैं और वह त्यौहारों पर अपने पिता को याद कर रहा है। वो बचपन में अपने पिता से पड़ने वाली गालियों को याद कर रहा है-

"त्यौहार तो सभी गुजर जाएंगे चुपचाप,
बस, मैं निहारता रहूँगा तुम्हारी तस्वीर,
x x x
छिपा लेता था सिर।"[8]

शुभदर्शन ने परिवार के रूप को प्रस्तुत किया है। परिवार के सदस्यों के बीच के प्यार और उनके बीच के सम्बन्धों को शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। परिवार का भारत में क्या महत्व है, इसको कवि ने उजागर किया है। परिवार केवल व्यक्तियों का समूह ही नहीं है, बल्कि उनके बीच के स्नेह का नाम ही परिवार है, जो उनको आपस में बाँध कर रखता है। परिवार समाज की पहली कड़ी है। इसी को शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

टूटते रिश्ते-नातों के प्रति विद्रोह भावना :

समाज सम्बन्धों पर आधारित होता है। व्यक्तियों से परिवार बनता है और उसी से समाज का निर्माण होता है। हमारे भारतीय समाज में आपसी सम्बन्धों को अधिक महत्व दिया जाता है। राईट के अनुसार, "मनुष्यों के समूह को समाज नहीं कहा जा सकता, अपितु समूह के अंतर्गत व्यक्तियों के सम्बन्धों की व्यवस्था का नाम समाज है।"[9] आपसी सम्बन्धों से ही एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के साथ जुड़ा हुआ है। हमारे देश में सभी रिश्तों को सम्मान दिया जाता है और उनकी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी आदि अनेक रिश्ते हैं, जिनको अटूट माना जाता है। यह ऐसे सम्बन्ध हैं, जिन पर अधिक विश्वास किया जाता है।

आज आधुनिक युग में इन रिश्तों से विश्वास उठ चुका है। रिश्ते और सम्बन्ध एक ऐसा रूप धारण कर चुके हैं कि उन पर अब विश्वास करना कठिन सा हो गया है। रिश्तों के नाम पर केवल धोखा ही मिलता है। सम्बन्धों का नाजायज़ फायदा उठाया जाता है। एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति पर विश्वास नहीं रहा। दूर के रिश्तों में ही नहीं अपितु माता-पिता और भाई-बहन तक के रिश्ते में कड़वाहट आ गई है। रिश्ते केवल आज बोझ समझे जाते हैं और उनको निभाया नहीं बल्कि ढोया जाता है। आज के युग में रिश्तों को पैसे से तोला जाता है। रिश्ते केवल किसी का सामाजिक और आर्थिक स्तर देख कर ही बनाए और बिगाड़े जाते हैं। जिस के पास अधिक धन है, लोग उसी से रिश्ता बनाने के लिए तत्पर रहते हैं। गरीब व्यक्ति से सभी नाता तोड़ लेते हैं और उसको अकेला छोड़ देते हैं। केवल पैसे का ही महत्व रह गया है।

सामाजिक सम्बन्धों में इस कड़वाहट को शुभदर्शन ने अपने काव्य के द्वारा प्रस्तुत किया है। शुभदर्शन ने रिश्तों के यथार्थ रूप को उजागर किया है। कवि ने इस स्थिति को भोगा है और इसीलिए वह सम्बन्धों की वास्तविकता को स्पष्ट करने में अधिक सफल हुआ है। अनीता नरेंद्र के अनुसार, "शुभदर्शन सम्बन्धों और रिश्तों की गहराई व उनकी गर्माई को समझने वाला संवेदनशील कवि है।"[10] शुभदर्शन ने काव्य में अपनी बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए प्रतीकों का प्रयोग किया है। प्रतीक साधारण जीवन से संबन्धित हैं। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'सैय्याद गौरैया' में यह स्पष्ट किया है कि आज के समय में केवल पैसे का ही मोल रह गया है। केवल पैसे को ही अधिक महत्व दिया जाता है। अर्थ के कारण आंतरिक सम्बन्धों में गिरावट आ गई है-

"सैय्याद बन गई है गौरैया,
अब मात्र पंख कतरने में नहीं संतुष्ट,
पीती है जिगर का खून खाती है दिमाग,
करती है हिसाब रिश्तों के ताने-बाने का।"[11]

इस कविता में कवि ने गौरैया को एक प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है। गौरैया मनुष्य का प्रतीक है, जिसके लिए आज रिश्ते नातों को कोई मूल्य नहीं है। जब व्यक्ति के पास अधिक धन आ जाता है तो वह हर किसी चीज़ और व्यक्ति के साथ हिसाब करता है। उसके लिए पैसा ही सब कुछ है और अगर वह सम्बन्ध स्थापित करता भी है तो केवल धन की लालसा के लिए। शुभदर्शन ने इस बात को अपने काव्य में बहुत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

शुभदर्शन जी ने अपने काव्य के माध्यम से समाज के वास्तविक चित्र को उकेरा है। व्यक्ति और समाज की विसंगतियों को उजागर किया है। सपना शर्मा के अनुसार, "आज की हिन्दी कविता में डॉ॰ शुभदर्शन जी का काव्य समाज और व्यक्ति के बीच में उथल-पुथल, संघर्ष,

समस्याओं, विघटनों, विसंगतियों को उकेरने वाला काव्य है। इनके काव्य में कटु यथार्थ का प्रतिनिधित्व है।"[12] शुभदर्शन ने अपनी कविता 'आत्मकथा' के माध्यम से यह बताया है कि आज दुनिया में कोई भी रिश्ता ऐसा नहीं रहा है, जिस पर व्यक्ति आँख मूँदकर विश्वास कर सकता है। हर रिश्ते में चाहे वह पास का रिश्ता हो या दूर का या फिर मित्रता का रिश्ता हो, किसी में भी विश्वास नहीं किया जा सकता है। आज के समय में रिश्तों से केवल एक चीज़ ही मिलती है, वह है- धोखा-

"रिश्तों की भूल-भुलैया अब नहीं उलझाती,
कोई भी रिश्ता नहीं जिसे गर्व से अपना सकूँ,
x x x
भावनाओं की चकाचौंध ने दिया है फरेब।"[13]

आधुनिक जीवन में कोई भी सम्बन्ध ऐसा नहीं रह गया है, जिस पर गर्व किया जा सके। कोई भी ऐसा रिश्ता नहीं है जो हमें गर्वित कर सके। कवि हर रिश्ते से डर रहा है क्योंकि हर रिश्ते ने भावनाओं के नाम पर केवल फरेब ही किया है। मानव जीवन की यह प्रवृति है कि वह अब रिश्ते में केवल अपना स्वार्थ ही देखता है। अन्य किसी बात से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता है। मनुष्य का दूसरे मनुष्य से सम्बन्ध केवल अर्थ तक ही सीमित रह गया है।

मनुष्य से मनुष्य का सम्बन्ध और व्यवहार अब वैसा नहीं रहा जैसा कि पहले था। प्राचीन समय में लोग अपने परिवार और अपने संबंधियों के लिए अपनी जान तक देने के लिए तैयार हो जाते थे। कोई किसी के प्रति द्वेष भावना नहीं रखता था। अगर किसी के मन में द्वेष होता भी था तो एक समय के लिए। आज के समय में प्यार केवल कहने को ही रह गया है। व्यक्ति को किसी से कोई मतलब नहीं है। किसी की खुशी या गम में शामिल होना सिर्फ एक दिखावा ही रह गया है, समाज को दिखने के लिए। कोई किसी को खुश नहीं देख सकता और किसी के गम पर तो हंसा जाता है।

शुभदर्शन ने भी अपने काव्य के माध्यम से आधुनिक समय के इसी यथार्थ को प्रकट किया है। कवि ने अपनी कविता 'दर्द' में इसी बात को स्पष्ट किया है कि व्यक्ति जो अस्पताल में मौत से लड़ रहा है, उसके प्रति किसी को सहानुभूति नहीं है बल्कि सभी इसी इंतज़ार में कि डॉक्टर कब आकर यह कहे कि उसकी मृत्यु हो गई है। लेकिन उनकी आस पर तब पानी फिर जाता है जब मरीज ठीक हो जाता है। कवि ने सम्बन्धों में आ रही इसी गिरावट को अपने काव्य में प्रस्तुत किया है-

"अस्पताल के बिस्तर पर पड़े,
देखा तो उदास था--- दर्द,
उदास थे- संबंध कुछ इंतज़ार में थे,
कब आए डॉक्टर का बयान,
'वी आर सॉरी'---पर,
ऐसा कुछ नहीं हुआ।"[14]

इस प्रकार शुभदर्शन जी ने अपने काव्य के माध्यम से सामाजिक सम्बन्धों में आ रहे तनाव को प्रकट किया है। आपसी भाईचारे की बात आज के युग में एक सपना सा प्रतीत होती है। कोई किसी के साथ ज्यादा बात करना पसंद नहीं करता। व्यक्ति के जीवन में नीरसता आ गई है। किसी के प्रति मन में प्यार की भावना नहीं है। सभी सम्बन्ध संवेदना रहित हो चुके हैं। पहले समय में आपसी भाईचारे और रिश्ते-नातों को अधिक महत्व दिया जाता था। रिश्तों को मान-सम्मान दिया जाता था। सभी एक जुट होकर रहते थे। लेकिन आधुनिक समय में बहुत परिवर्तन आ गया है। अगर आधुनिक युग अच्छे परिवर्तन लेकर आया तो बहुत सी बुरी बाते भी साथ में आई हैं। आधुनिक समय ने मनुष्य को बदल दिया और वह रिश्तों से अधिक धन से ज्यादा प्रेम करने लगा है। धन के लिए अपनों तक को बेच रहा है। किसी रिश्ते के लिए उसके मन में लगाव नहीं रहा। मनुष्य के रिश्तों में आई इसी गिरावट के प्रति शुभदर्शन ने अपना विद्रोह प्रकट किया है।

रूढ़िवादिता के प्रति विद्रोह भावना :

प्रत्येक समाज की अपनी कुछ परम्पराएँ होती हैं। जिनको समाज के लोग प्राचीन समय से ही मानते चले आते हैं और परम्परायों का पालन करना अपना धर्म मानते हैं। ये परम्पराएँ रूढ़ि का रूप धारण कर लेती हैं, जो कि जड़ बन जाती हैं, लेकिन समय के साथ-साथ लोगों की विचारधारा में परिवर्तन आता है। जिसके फलस्वरूप युवा पीढ़ी को कुछ परम्पराएँ अपने अधिकारों के रास्ते में रुकावट प्रतीत होती है। रूढ़ियों की जड़ता को बंधन मान कर वे उसका विरोध करते हैं और अपने अधिकारों की मांग करते हैं।

शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से समाज की इसी रूढ़िवादिता को उद्घाटित किया है। समाज की कुछ परम्पराएँ ऐसी हैं जो जड़ बन चुकी हैं। ये वही रूढ़ियाँ हैं जो व्यक्ति की स्वतंत्रता के रास्ते में बाधा बनती हैं और व्यक्ति के विकास में रुकावट उत्पन्न करती हैं। शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से समाज की इन्ही रूढ़िवादी परम्पराओं और जातीय भेद को प्रकट किया है। शुभदर्शन की कविता 'अभिशप्त अभिमन्यु' इसी रूढ़िवादिता को प्रकट करती है-

"आडंबरों, रिवाजों के,
मकड़जाल में फँसे अब,
x x x
इच्छाओं की समिधा।"[15]

शुभदर्शन ने इस के माध्यम से यह व्यक्त किया है कि व्यक्ति सामाजिक आडंबरों, व्यर्थ की परम्पराओं और रूढ़ियों में फस कर रह जाता है। आडंबरों में फंसा हुआ मनुष्य परम्पराओं के लिए अपनी इच्छाओं तक की भी बलि दे देता है। रीति-रिवाज़ों में फँसा हुआ व्यक्ति कभी भी उनसे बाहर नहीं निकल पाता और उसके मकड़जाल में ऐसा पड़ जाता है, जहां से बाहर निकलना असंभव सा प्रतीत होता है।

इसके अतिरिक्त शुभदर्शन जी ने समाज के ठेकेदारों का भी विद्रोह किया है, जो परम्पराओं के नाम पर समाज में किसी परिवर्तन को नहीं लाना चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति कभी नया नहीं सोच सकते और सदैव परम्पराओं की दुहाई देकर समाज को आगे बढ़ने से रोकते हैं। हुकुम चंद राजपाल के अनुसार, "शुभदर्शन ने ऐसे चेहरों को बेनकाब किया है, जो ऊपर से भाईचारे और आत्मीय सम्बन्धों की दुहाई देते हैं पर भीतर उनके विषैली सांप्रदायिक संकीर्णता है।"[16] परंपरा के नाम पर समाज के कुछ लोग प्रेम तक के पवित्र रिश्ते को नहीं छोड़ते। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'कच्चा घड़ा तो बहाना था' में प्रस्तुत किया है-

"कच्चे घड़े की कहानी,
मात्र कल्पना है,
समाज के उन ठेकेदारों की,
जो देते हैं- अपने अहं को पोषण।"[17]

इस प्रकार शुभदर्शन ने समाज के वास्तविक रूप को उजागर किया है। समाज में मनुष्यता अभी लेष मात्र भी नहीं रही है। समाज के लोग परम्पराओं के नाम पर समाज को पीछे खींच रहे हैं। जब तक समाज में ऐसी रूढ़ियाँ रहेंगी, तब तक समाज का विकास नहीं हो सकता है। समाज के ठेकेदार संकुचित दृष्टिकोण रखते हैं। शुभदर्शन ने इन व्यक्तियों का यथार्थ रूप अभिव्यक्त किया है।

शहर के अजनबीपन के प्रति विद्रोह भावना :

उद्योगीकरण के आने से बहुत से परिवर्तन आए। देश में क्रांति की एक लहर सी जाग उठी। देश का सुधार हुआ। नए-नए उद्योगों की

स्थापना हुई और लोगों को रोज़गार मिला, लेकिन इस क्रांति के अगर अच्छे परिणाम मिले तो इनका बुरा प्रभाव भी पड़ा। ग्रामीण जीवन छोड़ लोग शहरों में आ कर बसने लगे। लोगों के जीवन में नीरसता आ गई। शहर में लोग अजनबीपन का शिकार हो जाते हैं। किसी को किसी के प्रति कोई लगाव नहीं। सभी अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं। कोई किसी के साथ सुख-दुख नहीं बांटता। सभी पैसे की अंधा-धुन दौड़ में लगे हुए हैं। कोई किसी के साथ किसी प्रकार का कोई रिश्ता नहीं रखना चाहता। शहर के लोग बस यही देखते हैं कि कोई उनसे तरक्की में आगे न निकल जाए। इसी लिए वह अपना सारा वक्त काम में ही लगाते हैं। हिन्दी साहित्य में ऐसे साहित्य की बहुत सी उदाहरण मिलती हैं, जिसमें शहर के जीवन की नीरसता को अभिव्यक्त किया गया है। शहर में रहते व्यक्ति का मन उदास रहता है और वह अकेलेपन का शिकार हो जाता है।

शुभदर्शन जी ने अपने काव्य के द्वारा शहरी जीवन की उदासीनता को व्यक्त किया है। कवि ने अपने काव्य के द्वारा यह बताया है कि शहर चाहे बहुत बड़ा होता है, लेकिन अहसासहीन होता है। जिसमें किसी प्रकार का मोह नहीं होता है। सभी वस्तुएँ मिल जाती हैं शहर में, लेकिन रिश्ते और प्यार नहीं मिलता। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'अहसास से बगावत' में शहरी जीवन की इसी अहसास हीनता को उजागर किया है-

"बड़े-बड़े लोग हैं, बड़ी-बड़ी इमारतें,

x x x

सब कुछ है यहाँ,

नहीं है तो केवल—अहसास।"[18]

शहर ने मनुष्य को संवेदनहीन बना दिया है। जिसके कारण मनुष्य को किसी बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है। शहर में सभी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं, लेकिन अगर मनुष्य के पास सभी चीजे हैं, लेकिन किसी के प्रति सहानुभूति नहीं तो उसके सामने सारी सुविधाएँ बेकार हैं। शुभदर्शन ने बताया है कि शहर में रहते व्यक्ति को केवल धन से ही प्रेम होता है। इसके लिए उसे जो कुछ भी करना पड़े वह करता है। सुधा जितेंद्र के अनुसार, "शहरी जीवन में ओढ़ी हुई मानसिकता हमें अपने नैसर्गिक गुणों से दूर लेती जा रही है। इसलिए शहर में अब दया, शर्म, मान-सम्मान के अर्थ बदल चुके हैं। यहाँ लोगों के दिल पत्थर हो चुके हैं। इसलिए दया, शर्म, माफी और अफसोस जैसे अहसास उनकी डिक्शनरी से गायब हो चुके हैं।"[19] किसी बात कि कोई परवाह नहीं की जाती है। शुभदर्शन ने इसी को अभिव्यक्त किया है-

"क्या, इतना सभ्य हो गया है शहर,

जो पाँवों को सिर पर\मुंह में दबाए चलने में,
समझने लगा है गौरव।"[20]

शहर के भागम-भाग वाले जीवन ने व्यक्ति को भावहीन बना दिया है। किसी पर कोई इतवार नहीं करता। सभी एक-दूसरे को लूटने के लिए तत्पर रहते हैं। शहर के मोह ने मनुष्य को छल लिया है। मनुष्य का अमन और चैन छीन लिया है। शहर की चकाचौंध अहसासहीन तो है ही, साथ ही मूल्यहीन भी है, संस्कृतिविहीन भी है, संस्कारों से कहीं दूर-दूर तक इसका कोई लेना-देना नहीं है। शहर की इसी जीवनशैली के प्रति कवि शुभदर्शन ने अपने विद्रोह की भावना को व्यक्त किया है।

ग्राम अथवा गाँव समाज की एक छोटी इकाई है। जिसमें कुछ लोग आपस में मिलकर रहते हैं। गाँव का आकार चाहे शहर से छोटा होता है, लेकिन सम्बन्धों की जो पहचान और सम्मान गाँव में होता है, वैसा सम्मान नगर में नहीं मिलता। गाँव में लोग अनपढ़ होते हुए भी अपने संस्कारों के पक्के होते हैं। गाँव में प्यार और अपनत्व का अहसास होता है, वह शहर में कहाँ। शुभदर्शन ने ग्रामीण जीवन के यथार्थ रूप का वर्णन किया है। जो सम्बन्धों का अहसास गांवों में होता है, वह शहर में कहीं नहीं मिलता। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'अहसास से बगावत' में ग्राम के स्वच्छ जीवन को उजागर किया है-

"जातियाँ होते हुए भी, वहाँ अहसास था,
सब कुछ सपाट था, जंगल में पेड़ों से लिपटी,
अपने स्वच्छ--सौन्दर्य की,
कहानी कहती लताओं की तरह।"[21]

शुभदर्शन ने इसी बात को स्पष्ट किया है कि गाँव में भी अनेक जातियाँ पाई जाती हैं, लेकिन जातीय भेद-भाव होने के बावजूद भी वहाँ प्यार है। चाहे शहर की तरह ऊंची-ऊंची इमारतें नहीं हैं, लेकिन प्रकृति का सौन्दर्य चारों और फैला हुआ है। शुभदर्शन जी को गाँव का जीवन सबसे अधिक प्रिय था। इसी लिए तो उनकी ज़्यादातर कविताओं में अपने गाँव के प्रति प्रेम भावना को देखा जा सकता है। उनका मन अपने गाँव जाने को करता है और उनको ग्रामीण जीवन बहुत प्रभावित करता है। विनय सिंह के शब्दों में, "कवि शुभदर्शन को अपने गाँव की सोंधी खुशबू हमेशा याद आती है। वो गली-गलियारे याद आते हैं जहां जीवन की वास्तविकता है, जहां खुलकर कवि का संवेदनशील मन सांस ले सकता है। उसे शहर की संकरी गलियों में वो नहीं मिलता जो गाँव में था।"[22] शहर में जाकर कवि को कोई अपना दिखाई नहीं देता, जिसके साथ बैठकर अपना मन हल्का कर सके।

शहर में जाकर व्यक्ति संस्कारविहीन हो जाता है। लेकिन गाँव के लोग कभी अपने संस्कारों को नहीं भूलते। सभी का सम्मान करते हैं। अगर आज भी किसी गाँव में जाओ तो वहाँ पर बेगानापन नज़र नहीं आता। गाँवों के बुजुर्ग अपने संस्कारों को नष्ट होता देख कर निराश होते हैं। उनको युवा पीढ़ी के प्रति सहानुभूति है, जो निरंतर आधुनिकता का शिकार होते जा रहे हैं। शुभदर्शन ने इसी के प्रति अपने विद्रोह को प्रकट किया है-

"क्यों न चला जाऊँ गाँव,
जहां परंपरा से जोड़ने की हसरत में,
देख रही हैं--- कई बूढ़ी आंखे।"[23]

इस तरह शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से गाँव के जीवन की सार्थक्ता को अभिव्यक्त किया है। शहर में सभी सुख मिलते है, लेकिन फिर भी वो नयापन, प्रकृति की सुंदरता और अपनत्व नहीं मिलता, जो ग्रामीण जीवन में है। हिन्दी साहित्य के ज़्यादातर कवि ग्रामीण जीवन से सम्बन्ध रखते हैं। लेकिन जीवन की कुछ समस्याओं के कारण उनको गाँव छोड़कर शहर में जाकर रहना पड़ा। लेकिन फिर भी वे अपने गाँव की मिट्टी की खुशबू को नहीं भूल पाए हैं। शहर उनको आकर्षित नहीं कर पाया है। जीवन की कुछ स्थितियाँ ऐसी हो गई है, जिनकी वजह से उनको शहर में रहना पड़ रहा है। इसी लिए अपने गाँव के प्रति लगाव के कारण ही इन कवियों के काव्य में ग्रामीण जीवन का वर्णन इतनी अच्छी तरह से किया गया है। क्योंकि ये कवि स्वयं गाँव से जुड़े हुए हैं और वे सब फिर से उसी गाँव के वातावरण में जाना चाहते हैं, जहां से उनको अपने रिश्तों से जुड़ने का अवसर मिलता है। शुभदर्शन फिर से अपने गाँव की ओर लौटना चाहते हैं, जहां अहसास अभी भी बाकी है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि शुभदर्शन के काव्य 'संघर्ष बस संघर्ष' में सामाजिक विद्रोह को देखा जा सकता है। शुभदर्शन ने अपने काव्य संग्रह में सामाजिक यथार्थ रूप को अभिव्यक्त किया है। समाज के बहुत से पहलू होते हैं और कवि ने इन सभी पहलुओं का वर्णन अपने काव्य में किया है। शुभदर्शन ने सामाजिक भेद-भाव, आडंबरों, शहरीकरण के प्रति अपनी विद्रोही भावना को व्यक्त किया है। शुभदर्शन ने अपने जीवन में जो भोगा, उसी यथार्थ को अपने काव्य का रूप देकर प्रत्यक्ष किया है। सुधा जितेंद्र के अनुसार, "शुभदर्शन की कविताएं कोई सब्ज़ बाग नहीं दिखलाती, कोई झूठा वायदा नहीं करती, कोई लुभावनी तस्वीर पेश नहीं करती और न ही स्वांत सुखाय के धर्म को निभाने वाली हैं। यह कविताएं समाज की हैं।"[24]

संदर्भ सूची

1. भवभूति के श्लोक का स्वामी प्रेम ज़ाहिर द्वारा भावानुवाद, विजयदान देथा, पृ- 14.
2. विनोद तनेजा(सं), संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 4.
3. नन्द किशोर नवल(सं), सामाजिक व्यवस्था, सुधा का संपादकीय, पृ- 305.
4. सुधा जितेंद्र, आत्मचेतना से विश्वचेतना का कवि शुभदर्शन, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 5.
5. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 20.
6. वहीं, पृ- 52.
7. वहीं, पृ- 37.
8. वहीं, पृ- 48.
9. राईट, ऐलीमेंट्स ऑफ शोषलोजी, पृ- 4.
10. अनीता नरेंद्र, संघर्ष की समय सापेक्ष अभिव्यक्ति, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 34.
11. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 78.
12. सपना शर्मा, मानवीय संवेदनाओं का प्रिज़्म संघर्ष ममता का, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 63.
13. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 97.
14. वहीं, पृ- 121.
15. वहीं, पृ- 28.
16. हुकुम चंद राजपाल, विश्व को शब्दों में बांधता कवि, समय से मुठभेड़ का जन-कवि शुभदर्शन, पृ-26.
17. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 22.
18. वहीं, पृ- 31.
19. सुधा जितेंद्र, कविताओं का संघर्षरत यथार्थवादी हाशिया, समय से मुठभेड़ का जन-कवि शुभदर्शन, पृ- 142.
20. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 34.

21. वहीं, पृ- 32.
22. विनय सिंह, संघर्ष से उकरी गंगा के पड़ाव, समय से मुठभेड़ का जन-कवि शुभदर्शन, पृ- 37.
23. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 34.
24. सुधा जितेंद्र, आत्मचेतना से विश्वचेतना का कवि शुभदर्शन, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 5.

तृतीय अध्याय: शुभदर्शन के काव्य में राजनीतिक विद्रोह भावना

समाज के विभिन्न पहलू हैं, जिसमें से राजनीति एक महत्वपूर्ण अंग है। जिस प्रकार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी भी है। समाज मनुष्य के लिए अति आवश्यक है। समाज में रहकर ही मनुष्य अपने जीवन का निर्वाह करता है। इस प्रकार समाज मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का स्थान है। इसी प्रकार राजनीति भी मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। मनुष्य के जन्म के साथ ही राजनीति का जन्म हुआ है और मनुष्य के रक्त में ही राजनीति होती है। जिस प्रकार मनुष्य समाज के बिना नहीं रह सकता, उसी प्रकार मनुष्य राजनीति किए बिना भी नहीं रह सकता है। सदियों से ही मनुष्य सत्ता की प्राप्ति के लिए संघर्ष करता आ रहा है। राजनीतिक दाव-पेच का प्रयोग कर सत्ता को प्राप्त करता आ रहा है। सत्ता लोलुप व्यक्ति भावना विहीन हो गया है। सत्ता के लालच में अंधा व्यक्ति सभी रिश्तों और प्यार भावना को भूल जाता है और अपनी श्रेष्ठता को कायम करना चाहता है। यह कोई आज की बात नहीं है। यह परंपरा सदियों से चली आ रही है। सत्ता प्राप्ति की इसी लालसा के कारण ही अनेक युद्ध हुए और अनेकों लोगों का रक्त बहा है। भारत में ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं।

समय-समय पर भारत पर अनेकों देशों ने हमला कर इसको अपना गुलाम बनाया और लूटा। अंग्रेजों ने भारत पर शासन किया और साथ ही भारत के लोगों में फूट भी डाली। अंग्रेजों के खिलाफ भारतीय जनता ने विद्रोह किए, लेकिन ज़्यादातर असफल रहे। इन विद्रोहों की असफलता का कारण सत्ता का लोभ ही था। क्योंकि भारत के कुछ लोग ऐसे थे जिन्होने अपनों का साथ देने के स्थान पर अंग्रेजों का साथ दिया। क्योंकि वह लोग सत्ता के लोभी थे। अंग्रेजों ने भारत पर लगभग 200 वर्ष शासन किया और अपनी कूटनीति के साथ भारत को कभी ऊपर उठने नहीं दिया। अँग्रेजी सरकार भारतीय जनता का शोषण करती थी और उनको हर प्रकार से लूटती थी। इसी दौरान भारत के साहित्यकारों ने अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य को निभाया और जनता में राष्ट्र प्रेम की भावना को जागृत करने का प्रयास किया। सिन्धुमोल अय्यप्पन के अनुसार, "देश-विदेश की घटनाओं का प्रभाव समाज पर पड़ता है और साहित्यकार सामाजिक प्राणी होने के नाते ऐसी घटनाओं से अनभिज्ञ नहीं रह सकते। अतः राजनैतिक गतिविधियाँ, साहित्यिक रचनाओं में आना बहुत ही सहज है।"[1] इसी कार्य को भारत के साहित्यकारों ने आगे बढ़ाया। इनमें से भारतेन्दु हरिशचन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय, सुदामा पांडे धूमिल इत्यादि अनेक साहित्यकारों ने अपना कवि धर्म निभाया और राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया।

राष्ट्र प्रेमियों, क्रांतिकारियों और साहित्यकारों के प्रयासों के फलस्वरूप भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और भारत अंग्रेजों के कुशासन से आज़ाद हो गया। अब भारतीय जनता और

साहित्यकारों को ऐसा लगने लगा था कि भारत की राजनीति अब स्वच्छ हो जाएगी। लेकिन कार्य इसके विपरीत हुआ। जो कूटनीति अंग्रेजों ने भारतीयों के खिलाफ अपनाई थी, वही कूटनीति और कुशासन भारत के राजनीतिज्ञों ने भी अपनाया। आज भारत के लोग ही भारत को लूट रहे हैं। अनेक कवियों ने राजनीतिक व्यवस्था के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया है। इनमें से नागार्जुन ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होने राजनीतिक व्यवस्था के ऊपर तीखे व्यंग किए हैं। नागार्जुन की जितनी भी रचनाएँ हैं, वह सभी प्रासांगिक प्रतीत होती हैं। नागार्जुन के साहित्य पर बहादुर सिंह अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, "सन 1930 से लेकर यदि सन 2000 तक के भारतीय परिवेश को देखें तो नागार्जुन का लेखन प्रासांगिक लगता है। कोई पक्ष इनकी कलम से छूट नहीं पाया है। भूख तब भी थी, भूख से अब भी जान जाती है। भ्रष्टाचार था और है, राजनैतिक अनैतिकता थी, अब ज्यादा बढ़ी है। शोषण, दबाव, भ्रष्टाचार ज्यों का त्यों नए-नए रूप धारण कर जीवित है।"[2] इस प्रकार साहित्यकारों ने आजाद भारत की संचालन के जो स्वप्न देखे थे, वो धीरे-धीरे उनको टूटते हुए नजर आए। पहले अंग्रेज भारत को लूटते थे, लेकिन अब भारत के लोग ही भारत की जनता को लूट रहे हैं। लोकतन्त्र के नाम पर भारतीय जनता को लूटा जाता है। राजनीतिक दल अवसरवादी और भ्रष्ट हैं जो जनता से चुनाव के दिनों में बहुत बड़े-बड़े वायदे तो करते हैं, लेकिन चुनाव हो जाने के बाद सब कुछ भूल जाते हैं। राजनीतिज्ञों को इसी कूटनीति का वास्तविक रूप साहित्यकार अपनी कलम के माध्यम से जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

ऐसे अनेक कवि और लेखक हुए हैं, जिन्होने राजनीति के वास्तविक रूप को जनता के सामने उजागर करने का प्रयास किया है और अधिकतर सफल भी हो रहे हैं। इन्हीं कवियों और लेखकों के बीच एक ओर नाम कवि शुभदर्शन का भी है। शुभदर्शन ने राजनीति को बहुत करीब से देखा और जाना है। शुभदर्शन की स्वयं की रुचि राजनीति में थी, लेकिन राजनीति का वास्तविक रूप देखने के बाद कवि ने राजनीति को छोड़ दिया और नेताओं की भ्रष्ट नीतियों के बारे में जनता को अवगत करवाने का प्रयास किया है। राजनीतिज्ञों की अवसरवादिता, उनकी कूटनीति और भ्रष्टाचार को कवि शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से बखूबी प्रस्तुत किया है। शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से आम जनता की वेदना को प्रकट करने का प्रयास किया है।

अवसरवादिता के प्रति विद्रोह भावना :

कवि शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से आधुनिक युग के राजनीतिज्ञों की अवसरवादिता को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। आधुनिक युग के

नेता छप्पर के मेंडक के समान होते हैं, जो केवल चुनाव के दिनों में बाहर आते हैं और भोली-भाली जनता को अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों में फाँसकर अपना मतलब निकालते हैं। शुभदर्शन की ऐसी अनेक कविताएं हैं, जिनमें राजनीतिक दलों की अवसरवादिता को दर्शाया गया है। अनपढ़ व्यक्ति आज हमारे देश का शासन चला रहे हैं और जो पढ़े-लिखे लोग हैं बेरोज़गार घूम रहे हैं। अवसरवादी नेता इन सब लोगों को चुनाव के दिनों में बहुत से सपने दिखाते हैं और चुनाव हो जाने के बाद अपने सभी वायदों से मुह फेर लेते हैं। शुभदर्शन ने राजनीतिक दलों की इसी वास्तविकता को उजागर किया है। विनोद तनेजा के अनुसार, "शुभदर्शन ने अपनी लड़ाई को जारी रखते हुए समाज में व्याप्त हर बुराई के चेहरे पर पड़े नकाब को उघाड़ कर सभी चाहे कोई सत्ताधारी है या उच्च वर्ग का उसकी वास्तविकता को स्पष्ट किया है।"[3] शुभदर्शन ने राजनीतिज्ञों की अवसरवादी नीति को अपनी कविता 'घुटन के पैबंद' में अभिव्यक्त किया है-

"एक दूसरे से लग रही होड़, बहुत बदले दृश्य,
नाम बदल-बदल मंच पर आए चेहरे,
और उनके नाटक देखते-देखते,
कैसे गुज़रा समय इल्म नहीं।"[4]

शुभदर्शन ने इसके माध्यम से यह प्रकट किया है कि राजनीति में समय समय पर अनेकों नए चहरे अर्थात अनेकों नए-नए राजनीतिज्ञ आते रहे हैं और चुनावों में कामयाब हो जाते हैं। जनता ही उनको सफलता दिलाती है और वे जनता पर ही शासन करने लगते हैं और उनको हर तरह से लूटते हैं। जनता को फसाने के लिए अनेक तरह के पाखंड करते हैं। जनता को लालसा देते हैं। जनता की भावनाओं के साथ खेलते हैं। राजनीतिज्ञों की इसी अवसरवादिता को नागार्जुन ने भी अपने काव्य में प्रस्तुत किया है-

"शुरू हो गया नेताओं का,
मधुर बुझावन मधुर सिखावन-
x x x
तत्पर हो सारी साजिश की जाँच और पड़ताल करेगी,
शांत रहे हम।"[5]

नागार्जुन ने अपनी कविता में यह बताया है कि अवसरवादी नेता केवल चुनाव के दिनों में ही लोगों की शिकायतें सुनते हैं। गली-गली, गाँव-गाँव, शहर-शहर घूमते हैं और आम जनता को भ्रमित करते हैं कि वे उनकी बातों में फँस जाएँ और उनको सफल बना दे। भोली भाली जनता भी उनके झूठे वायदों को सच्च मान लेती है। चुनाव के दिनों में गरीबों की समस्याओं को सुनने और उनको हल करने का ढोंग किया जाता है।

शुभदर्शन ने राजनीतिक दलों की इसी नीति के खिलाफ अपना विरोध प्रकट किया है। राजनीतिक नेता वोट बटोर कर बाद में अलोप हो जाते हैं। शुभदर्शन मानते हैं कि राजनीति केवल झुठ और फरेब की एक तस्वीर है और राजनीतिक नेता हमेशा झूठ का मुखौटा पहन कर रखते हैं। पहले जनता को आश्वासन देते हैं, लेकिन बाद में उनकी उम्मीदों पर पानी फेर देते हैं। देश की हालत में कोई सुधार नहीं आया है। भारतीय राजनीतिज्ञों ने अंग्रेजों की भांति ही भारतीय जनता को लूटा है और लूट रहे हैं। शोभा पालीवाल ने भारतीय राजनीति पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि, "1947 ई॰ में स्वाधीनता मिलने के बाद न तो हमने आबादी पर नियंत्रण करने के लिए कोई ठोस उपाय किए और न ही शिक्षा नीति में व्यापक फेरबदल। सब कुछ वही चलता रहा, जो अंग्रेज चाहते रहे, अंतर आया तो, केवल अंग्रेजों की जगह भारतीय नेताओं का विभूषित होना था।"[6] अर्थात अंग्रेज तो निकल गए, पर भारतीयों ने अपने भाई-बंधुओं के शोषण का भर अपने कंधों पर ले लिया है। समाजवाद प्रजातंत्र का मूल मंत्र बन गया और भ्रष्टाचार ने पूरी तरह राजनीति को जकड़ लिया। शुभदर्शन ने भी इसी बात को स्पष्ट किया है कि भारतीय राजनीतिक दल अब स्वयं भारतीय जनता को लूट रहे हैं।

शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से यह बताया है कि राजनीतिज्ञ मतलबी होते हैं और केवल चुनाव के कुछ दिन पहले ही जनता के साथ साक्षात्कार करते हैं। जनता को सुधार का आश्वासन देते हैं। उनकी कुछ छोटी-मोटी मांगों को पूर्ण कर उनको अपने विश्वास में लेते हैं, लेकिन मतलब निकल जाने के बाद उनकी अन्य महत्वपूर्ण माँगों को अनसुना कर दिया जाता है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'सपना सपना रात' में इसी बात को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है-

"टूटने लगे हैं—भ्रम,
भ्रम कि,
किस तरह बटोर कर वोट,
अलोप हो जाते हो,
x x x
हर बार चुनाव से पहले।"[7]

शुभदर्शन ने राजनीतिक नेताओं की इसी अवसरवादिता के प्रति अपनी विद्रोह भावना को प्रकट किया है। राजनीतिज्ञ यह नहीं सोचते कि उनका चुनाव आम जनता ही करती है और वे जनता के सेवक हैं, उनके मालिक नहीं। जो ऊँचा उठा सकते हैं, वे उनको वापिस ज़मीन पर भी ला सकते हैं। इस लिए जनता की शक्ति को कभी कमज़ोर नहीं समझना चाहिए। जनता किसी भी राजनीतिक नेता को इस लिए अपना प्रतिनिधि चुनती है कि वह उनकी उम्मीदों पर

खरा उतरेगा और उनकी और देश की सेवा करेगा। लेकिन भारतीय राजनीति में भावनाओं के लिए कोई स्थान नहीं है। अधिकतर राजनीतिज्ञ केवल स्वार्थी होते हैं और अपने स्वार्थ के लिए ही राजनीति में आते हैं और राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करते हैं।

शुभदर्शन ने इसी बात के प्रति अपना प्रतिरोध व्यक्त किया है। राजनीतिक नेता अपने आप को जनता का हितैषी कहते हैं। जनता को बहलाने के लिए दिन-दिन भर बोलते रहते हैं। चुनाव के दिनों में तो गरीब लोगों को गले भी लगाते हैं और उनके घरों में जाते हैं और भोली जनता उनके इस बहकावे में आ जाती है। इसी के साथ दूसरी जो पार्टियां हैं, उनका विरोध भी करती हैं। शुभदर्शन ने नेताओं के राजनीति के इन्हीं गुणों को अपनी कविता 'जनहितैषी चेहरा' में उजागर करने का प्रयास किया है-

"स्थान, समय के अनुरूप,
बदलते तुम्हारे रूप,
x x x
कि सांस भी न निकले,
और उफ़ भी।"[8]

इस प्रकार नेता स्वार्थ से परिपूर्ण होते हैं और सत्ता प्राप्ति के लिए किसी भी हद तक चले जाते हैं। भारत में सबसे श्रेष्ठ धर्म को माना जाता है। इस बात का लाभ राजनीतिक दल उठाते हैं। सत्ता प्राप्ति के लिए वे धर्म के नाम पर लोगों को बाँटते हैं और उनमें दंगे तक हो जाते हैं। इस प्रकार सत्ता में रहने के लिए किसी चीज़ की परवाह नहीं की जाती। कवि शुभदर्शन ने अपने काव्य के द्वारा राजनीतिक दलों की इसी अवसरवादिता को उजागर किया है कि किस प्रकार नेता आम जनता के पास केवल चुनावों के दिनों में ही आते हैं और बाद में जनता को भूलकर उस पर शासन करते हैं।

भ्रष्टाचार के प्रति विद्रोह भावना :

भ्रष्टाचार एक ऐसी बुराई है जो भारत की जड़ों को खोखला कर रही है। आज भारत में भ्रष्टाचार जैसी बुराई घर कर गई है, जिससे छुटकारा पाने की अति-आवश्यकता है। एक छोटे से कर्मचारी से लेकर बड़े से बड़े नेता तक में भ्रष्टाचार पाया जाता है। भारत में कोई भी कार्य बिना रिश्वत के नहीं किया जाता। इस भ्रष्टाचार की चक्की में आम आदमी प्रतिदिन पिस रहा है। सबसे अधिक भ्रष्टाचार भारत की राजनीति में पाया गया है। राजनीति से ही इसकी शुरूआत हुई है। पंचायत से लेकर केंद्र सरकार में सभी भ्रष्ट अधिकारी भरे पड़े हैं। किसी को किसी से कोई मतलब नहीं है। सभी में स्वार्थ की भावना है। गरीब व्यक्ति की तो पुकार कहीं सुनी भी नहीं जाती है। अगर कोई व्यक्ति सरकार के खिलाफ कोई शिकायत करता

है या कोई कार्यवाई करने की माँग करता है तो उसको धमकाया जाता है। कहने को तो जनता को यह हक दिया गया है कि सरकार उनकी सेवक है और जनता को पूरा हक है कि वह सरकार से कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकती है, लेकिन वास्तविकता कुछ और ही है। अगर कोई सरकार के विरुद्ध आवाज़ उठाता है तो भ्रष्ट राजनीतिज्ञ उस व्यक्ति को ऐसा फँसाते हैं कि वह व्यक्ति सरकारी दफ़तरों के चक्कर काटता ही मर जाता है और उसी व्यक्ति को फँसा दिया जाता है। शुभदर्शन ने इसी भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया है। हुकुम चंद राजपाल ने कवि शुभदर्शन पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि, "अमीर-गरीब का फर्क, नेताओं की तोता-चश्मी, धर्म के ठेकेदारों के आडंबर, समाज सेवा के नाम पर जनता के पैसे व सरकारी अनुदान डकारने वालों की आदतों से आहत कवि के मन का खूनी रास्ता जगह-जगह रिसते ज़ख़्मों को चीरता उन शब्दों को जन्म देता है, जिनमें पूरा विश्व बंध जाता है।"[9] शुभदर्शन ने भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के भ्रष्ट तंत्र को अपनी कविता 'सपना सपना रात' में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है-

"पूछता हूँ तो बढ़ता है,
एक भीमकाय हाथ--,
x x x
सवाल पूछना—तुम्हारा नहीं,
सत्ताधारियों का काम है।"[10]

इस कविता में कवि ने यह बताया है कि नेता पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुके हैं। कोई उनके कार्यों के लिए उनसे कोई प्रश्न तक नहीं पूछ सकता नहीं तो उनको अपनी जान तक खोने की नोबत आ सकती है। नेता गैर-कानूनी कार्य करते हैं, लेकिन उनको कोई कहने वाला नहीं है। अनेक प्रकार के घोटाले करते हैं, लेकिन फिर भी आज़ाद घूमते हैं। नेताओं की इसी भ्रष्ट नीति के ऊपर अपने विचार प्रकट करते हुए बुद्धेश ने कहा है कि, "पार्टियों के अधिकांश नेता आकण्ठ भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं, जिनमें से ढेर सारे लोगों के ऊपर भ्रष्टाचार, आय से अधिक संपत्ति रखने, करोड़ों-अरबों रुपयों के घोटाले, कर्मचारियों-पुलिस आदि की भर्ती के घोटाले, काले घन को सफ़ेद करने आदि के मुकदमें दायर होते रहे हैं।"[11] इस प्रकार नीचे से लेकर ऊपर तक सभी कर्मचारी भ्रष्ट हैं और आम आदमी इस भ्रष्टाचार के नीचे दबता चला जा रहा है। नेताओं की तरफ से अनेकों घोटाले किए जाते हैं और उन पर केस भी दर्ज होते हैं, लेकिन उनको सज़ा नहीं मिलती। रघुवीर सहाय ने भी अपनी कविता 'आप की हँसी' में भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के ऊपर व्यंग किया है-

"निर्धन जनता का शोषण है,
कह-कर आप हँसे,
x x x
चारों और बड़ी लाचारी,
कह-कर आप हँसे।"[12]

एक कवि या साहित्यकार ही समाज के वास्तविक रूप को जनता के समक्ष प्रस्तुत करता है और जनता को सच्चाई से अवगत करवाता है। कवि शुभदर्शन ने भी अपने काव्य के द्वारा यही कार्य किया है। राजनीति भ्रष्ट हो चुकी है और राजनीतिक नेता जनता को ठग रहे हैं। इसी सच्च से शुभदर्शन ने जनता को अवगत करवाने का प्रयास किया है। अपनी कविता 'जनहितैषी चेहरा' में शुभदर्शन ने नेताओं की भ्रष्ट नीति को व्यक्त किया है-

"झोंपड़ियों में लगवा आग,
मासूमों की दे बलि,
रिसते जख्मों पर रख,
पैसे के फहे।"[13]

शुभदर्शन ने अपनी इस कविता के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया है कि राजनीतिज्ञ इतने भ्रष्ट हो गए हैं कि अपने लाभ के लिए गरीबों की बस्तियों तक को जलाने में संकोच नहीं करते हैं। कोई अगर उनके खिलाफ आवाज़ उठाने का साहस करता है तो उनके घरों तक को आग लगा दी जाती है और मासूम लोगों की बलि दे दी जाती है और अगर उनके खिलाफ कोई कारवाई की जाती है तो वह पैसे के बल पर छूट जाते हैं क्योंकि राजनीतिक सत्ता उनके हाथों में होती है और सभी को उनका भय होता है। लगातार बढ़ रहे भ्रष्टाचार को शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से जनता के सामने प्रस्तुत किया है। विनय सिंह ने कवि शुभदर्शन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि, "राजनीति हो या सत्ता, जमींदार हो या उच्च वर्ग सब को बेनकाब करता है। कवि कहता है कि जिस सत्ताधारी या जमींदार को अपना मसीहा मान लेते हैं, वही भ्रम में आ जाता है। जिसे सत्ता मिली, खाने को मिला, वह मुँह लगे स्वाद कहाँ छोड़ पायेगा। आज की सत्ता, आज का मानव सिर्फ अपना स्वार्थ देखता है, उसके लिए कुछ भी करना पड़े। आज के मानव से मानवता बिल्कुल लुप्त हो चुकी है।"[14]

भ्रष्टाचार के इसी रूप को देवी प्रसाद मिश्र ने व्यंग के रूप में अपनी कविता 'राष्ट्रनिर्माण की राजनीति' में अभिव्यक्त किया है-

"भारत की आज़ादी के पचासवें साल में,

हम दुनिया के आठवें सबसे भ्रष्ट देश में रहते हैं,
जहाँ पैंतालीस करोड़ निरक्षर, चालीस करोड़ वंचित,
और दस करोड़ बाल श्रमिक हैं।"[15]

एक कवि बिना किसी डर के निर्भीक होकर राजनीति के वास्तविक रूप को प्रकट करता है। अनेक कवि हैं जिन्होने राजनीति के इस भ्रष्ट रूप को जनता के समक्ष लाने का प्रयास किया है। इन्ही कवियों के बीच ही इसी समस्या को शुभदर्शन ने भी नए रूप में अपने काव्य के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है। भ्रष्टाचार सभी समस्याओं का कारण है। विनय कुमार के अनुसार, "भ्रष्टाचार सभी समस्याओं का मूल है, उसने राजनीतिक, सामाजिक सभी को अपने साँचे में ढाल लिया है। समाज में अब भेड़ियों का बोलबाला है। कवि मन ऐसी सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों से विद्रोह करता है। भेड़ियों की इस दुनिया में कवि एक सशक्त विरोध चाहता है।"[16]

कवि शुभदर्शन ने यह बताने का प्रयास किया है कि भ्रष्टाचार भारत की राजनीति की रग-रग में समा गया है। हर तरफ भ्रष्टाचार का बोलबाला है। भ्रष्ट नेता लोगों को तरह-तरह के लालच देकर वोट लेते हैं। इस के लिए वे गैरकानूनी कार्य करने से भी नहीं कतराते हैं। राजनीतिक पार्टियां स्वयं ही गलत कार्य करवाती हैं और उनको कोई कुछ कहने वाला भी नहीं होता है। अपना वोट बैंक बढ़ाने के लिए भ्रष्ट नेता शराब की भट्ठियाँ तक लगवाते हैं और नशे जैसी बुराई का सहारा लेते हैं। नेता देश के संचालक होते हैं और देश के लिए और जनता के लिए जो चीज़ अच्छी नहीं उसको रोकना इन नेताओं का कर्तव्य है। लेकिन यह भ्रष्ट नेता अपने फायदे के लिए इस बुराई को अपनी सफलता का जरिया बनाते हैं। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'कब बड़े होगे कृष्ण' में राजनीतिक दलों के इसी भ्रष्ट स्वरूप को उजागर करने का प्रयास किया है-

"घर-घर में लगी,
भट्ठियों की रूड़ी मार्का,
बढ़ाती है---वोट,
कंस बन जाता है,
शक्तिशाली नेता।"[17]

इस प्रकार कवि शुभदर्शन ने राजनीतिज्ञों के भ्रष्ट-तंत्र को अभिव्यक्त किया है। जहां पर कवि ने आधुनिक युग के नेता की तुलना अत्याचारी कंस के साथ की है। आधुनिक युग के नेता गलत कार्य खुद ही करते हैं, लेकिन कोई उनका विरोध नहीं कर सकता है। इसी प्रकार के भ्रष्ट नेताओं के कारण कोई भी देश कभी तरक्की नहीं कर सकता। शुभदर्शन ने इसे बखूबी प्रस्तुत किया है। शेख मोहम्मद कल्याण ने कवि शुभदर्शन पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है

कि, "भ्रष्टाचार, खोखले रिश्तों में झूठ के पलस्तर, पथभ्रष्ट नेताओं का लोगों को बरगलाने का जो दुख व आग एक संवेदनशील आदमी में होती है, वह कवि शुभदर्शन की कविताओं में साफ देखी जा सकती है। हालांकि शुभदर्शन की अधिकतर कविताएं प्रेम कविताएं हैं, परंतु कवि ने प्रेम कविताओं को माध्यम बनाकर समाज में फैल रही विसंगतियों पर भी करारी चोट की है।"[18] इस प्रकार शुभदर्शन ने बिना किसी भय के अपने काव्य में भ्रष्ट राजनीति के वास्तविक रूप को प्रकट किया है।

कूटनीति के प्रति विद्रोह भावना :

अंग्रेजों ने भारत पर लगभग 200 साल शासन किया। इतने सालों तक किसी अन्य देश पर शासन करना कोई सरल कार्य नहीं है। भारत पर शासन करने के लिए अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की कूटनीति को अपनाया था। अंग्रेज़ भारतीयों में फूट डालते गए और भारत पर शासन करते गए। 1947 में भारत अंग्रेजों के कुशासन से तो आज़ाद हो गया, लेकिन कूटनीति से नहीं। पहले भारत में अंग्रेजों ने कूटनीति का प्रयोग कर भारतीय जनता पर शासन किया और अब भारतीय राजनीतिज्ञों ने अपने आप को सत्ता में बनाए रखने के लिए अपने ही देश की जनता के खिलाफ कूटनीति का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया। अँग्रेजी शासन से मुक्ति मिलने के बाद भारतीय साहित्यकारों ने यह सोचा था कि अब देश में खुशहाली आएगी और लोकतन्त्र की स्थापना के साथ देश की वास्तविक शासक स्वयं जनता ही होगी। लेकिन भारत के राजनीतिज्ञ तो अंग्रेजों से भी ऊपर के निकले। उन्होने भी अंग्रेजों की भांति ही कूटनीति का प्रयोग किया। भारत की राजनीति के इस रूप को सुदामा पांडे धूमिल ने अपने काव्य में दर्शाते हुए दुख प्रक्ट किया है-

"जनतंत्र, त्याग, स्वतन्त्रता,
संस्कृति, शांति, मनुष्यता,
ये सारे शब्द थे,
सुनहरे वादे थे,
खुशफहम इरादे थे।"[19]

कवियों और साहित्यकारों ने जो स्वप्न नए भारत के निर्माण के देखे थे, वे एक दम से टूटते हुए नज़र आए। भारतीय नेता कूटनीति का प्रयोग कर भारत की जनता को मूर्ख बनाते हैं। जनता की दुखती रग पर वार करते हैं और मौके का लाभ उठाते हैं। कवि शुभदर्शन ने भी नेताओं की इसी कूटनीति को बेनकाब करने का प्रयास किया है। कवि ने यह बताया है कि नेता किस प्रकार कूटनीति का प्रयोग करके गरीब लोगों को अपने झांसे में फँसा लेते हैं। झोंपड़ी में

रहने वाले गरीब लोगों की भावनाओं से खेल कर उनकी गरीबी का मज़ाक बना दिया जाता है। जनता को झूठे आश्वासन दिए जाते हैं। सुधा जितेन्द्र ने शुभदर्शन पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि, "सत्ता के नशे में जब समाज को झूठे आतंक की भट्ठी में झोंक कर अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकी जाती हैं, तो शुभदर्शन जैसे कवि को रोती बिलखती मानवता ही दिखाई देती है।"[20] नेताओं की इसी कूटनीति के प्रति कवि शुभदर्शन ने अपना प्रतिरोध व्यक्त किया है और उसको अपने काव्य के द्वारा जनता तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

शुभदर्शन ने अपनी 'आत्मकथा' कविता में नेताओं के प्रपंच को उजागर किया है। राजनीतिक दल किस प्रकार कूटनीति का प्रयोग कर के लोगों को बड़े-बड़े सपने दिखा देते हैं और अपना कार्य होने के बाद उनके सपनों को तोड़ देते हैं-

"कीचड़ में खिल कर, किस तरह कमल,
बन जाता है लक्ष्मी का आधार,
झोंपड़ी के वोट पर,
किस तरह खड़ी हो जाती हैं,
---अट्टालिकाएँ।"[21]

इस कविता के माध्यम से कवि ने यह बताया है कि जिस प्रकार कीचड़ में खिल कर भी कमल का फूल लक्ष्मी का आधार बन जाता है, ठीक उसी प्रकार राजनीतिज्ञ कूटनीति का प्रयोग कर झोंपड़ियों में रहने वाले लोगों को झूठे आश्वासन देकर अपनी तरफ कर लेते हैं और उनका समर्थन प्राप्त कर लेते हैं। जनता के समक्ष जाकर इतने बेचारे बन जाते हैं कि उन भोले-भाले गरीब लोगों को ऐसा प्रतीत होता है कि केवल वही उनकी समस्याओं का समाधान कर सकता है। इस तरह राजनीतिक दल जनता की सहानुभूति ग्रहण कर लेते हैं।

इसके अतिरिक्त भारत में चुनाव प्रचार के लिए अनेकों रुपए खर्च किए जाते हैं। रैलियाँ निकाली जाती हैं और उनमें बहुत खर्चा होता है। इस खर्च की पूर्ति के लिए राजनीतिक दल बड़े-बड़े पूँजीपतियों से सहायता प्राप्त करते हैं। इसी लिए कहा जाता है कि राजनीति पूँजीपतियों के अधीन होती है क्योंकि राजनीति का वजूद पूंजीपति होते हैं। राजनीतिज्ञ बड़ी चालाकी से पूँजीपतियों को अपने विश्वास में लेते हैं और उनसे आर्थिक सहायता प्राप्त करते हैं। अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यास 'बूँद और समुद्र' में राजनीतिक दलों और पूँजीपतियों के इसी गठजोड़ पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि, "वर्तमान राजनीति का जन्म साम्राज्यवाद से हुआ है। उसी साम्राज्यवादी नीति से औद्योगिक पूंजीवाद को शक्ति प्राप्त हुई। उस शक्ति और जनहित का वैर स्वाभाविक है।"[22] इस प्रकार राजनीति और पूंजीवाद एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं तो वर्तमान पीढ़ी में उसका विरोध होने लगता है। क्योंकि जब राजनीति और पूँजीपति एक हो जाते हैं तो गरीब व्यक्ति का शोषण होना तय है। गरीब व्यक्ति इन दोनों में पिस कर रह जाता

है। इसी गठजोड़ का कवि शुभदर्शन ने अपनी कविता 'और खरगोश हार गया' में अभिव्यक्त किया है-

"कोई फर्क नहीं होता व्यवस्था में,
जो, घूमती है, पूँजीपतियों की रखैल बन,
कभी खरगोश तो कहीं लोमड़ को जलील कर,
अपने खिलाफ, उठ रही आवाज़ चुप कराने।"[23]

शुभदर्शन ने यह बताया है कि राजनीतिक दल पूँजीपतियों के अधीन रहते हैं। पूँजीपति राजनीतिक दलों को आर्थिक सहायता देते हैं, तो राजनीतिक दल पूँजीपति वर्ग को शक्ति प्रदान करता है, जिससे कि पूँजीपति गरीबों का शोषण करते हैं और अनेकों गैर-कानूनी कार्य करते हैं। आम जनता उनका विरोध करने में असहाय रहती है क्योंकि दोनों एक दूसरे के पूरक होने के कारण कोई उनका कुछ बिगड़ भी नहीं सकता है।

शुभदर्शन ने राजनीति के यथार्थ रूप को प्रकट किया है और राजनीतिक दलों के मुखौटों को बेनकाब किया है। शुभदर्शन ने यह बताया है कि इन झूठे राजनीतिज्ञों की कथनी और करनी में बहुत अंतर होता है। सुधा जितेन्द्र ने शुभदर्शन के बारे में कहा है कि, "कवि भ्रष्ट राजनेताओं के मुखौटों को एक-एक कर उतारता है तथा उनकी कथनी और करनी में अंतर के पाट को रेखांकित करता है। झूठे वादों और लुभावने लच्छेदार भाषणों से राजनेता कैसे आम जनता को ठगते हैं, मूर्ख बनाते हैं--कवि ने बहुत पैनी नज़र से अनुभव किया है।"[24] चुनाव जीतने के बाद नेता के बड़े-बड़े पोस्टर चिपका दिए जाते हैं और तस्वीरे दीवारों पर टांग दी जाती हैं। शुभदर्शन कहते हैं कि उन तसवीरों से बेईमानी की बू आती है, जो उसने जनता के साथ की होती है। उस तस्वीर में केवल एक मुस्कराता हुआ चेहरा नज़र आता है, जो जनता को यह कहता हुआ प्रतीत होता कि उसने एक बार फिर से उनको मूर्ख बना दिया है। एक ऐसा शासन फिर से आ गया है, जिसमें जनता को दुत्कारा जाता है। शुभदर्शन की कविता 'जनहितैषी चेहरा' में इसी बात को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है-

"मुस्कराता हुआ चेहरा,
हर कत्ल के इल्ज़ाम से बरी,
कुत्तों को बिस्कुट,
इन्सानों को दुत्कारते।"[25]

शुभदर्शन ने सदैव जनता के हित की बात की है। शुभदर्शन कहते हैं कि जनता के पास अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार है और जनता इस अधिकार का सही उपयोग न कर फिर से

उन्ही फरेबी, धोखेबाज और स्वार्थी नेताओं को ही अपना प्रतिनिधि चुन लेती है। वह प्रतिनिधि चुने जाने के बाद उसी जनता का शोषण करता है और हर प्रकार से जनता को लूटता है। पाँच वर्ष के समय में प्रतिनिधि पार्टी अपनी विद्रोही पार्टी के साथ आपसी तकरार में गुज़ार देते हैं और पाँच वर्ष पूरे होने के बाद जनता के सामने चुनावी घोषणा पत्र में जनता की समस्याओं के बारे में लिख कर फिर से जनता का विश्वास प्राप्त कर लेते हैं। अनीता रावत का कथन है कि, "हमारे देश में चुनाव की स्थिति यह है कि अपार संपत्ति और साधनों का इस्तेमाल करने के बावजूद भी जनता के सही मत को जाना नहीं जा सकता। चुनाव आज महज एक राजनीतिक चाल है।"[26] शुभदर्शन ने राजनीतिक दलों की इसी कूटनीति के प्रति विद्रोह उजागर किया है।

निष्कर्ष रूप में कहाँ जा सकता है कि शुभदर्शन के काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में राजनीति के वास्तविक रूप को उजागर किया गया है। कवि ने भारतीय राजनीतिज्ञों की अवसरवादिता, उनके भ्रष्टाचार और उनके द्वारा अपनाई जाती कूटनीति को जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। सपना शर्मा के अनुसार, "राजनीति के प्रति जागरूक कवि राजनीति से जुड़े लोगों के चेहरों को अच्छी तरह पहचानता है। इन चेहरों ने मुखौटों के पीछे इनके असली चेहरों की असलियत कुछ और ही है।"[27] शुभदर्शन इसी वर्ग के कवि हैं, जो बिना किसी लगाव के और बिना किसी डर के राजनीतिज्ञों के कुशासन को उद्घाटित किया है।

संदर्भ सूची

1. सिंधुमोल अय्यप्पन, अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता, पृ-164.
2. बहादुर सिंह, नागार्जुन का यथार्थ: काव्य की प्रासंगिकता, शब्द सरोकार, अंक, 21, पृ-17.
3. विनोद तनेजा, मानवता को गुंजाते संघर्ष के स्वर, समय से मुठभेड़ का जनकवि शुभदर्शन, पृ- 32.
4. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 18.
5. नागार्जुन, युगधारा, पृ- 48.
6. शोभा पालीवाल, अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, पृ- 30.
7. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 70.
8. वहीं, पृ- 99.
9. हुकुमचंद राजपाल, विश्व को शब्दों में बांधता कवि, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ-23.
10. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 73.
11. बुद्धेश, राजनीतिक पार्टियां और वर्तमान चुनाव, देश-विदेश अनियतकालीन बुलेटिन, अंक-9, पृ- 14.
12. रघुवीर सहाय, आप की हँस, देश-विदेश अनियतकालीन बुलेटिन, अंक-9, पृ- 3.
13. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 100.
14. विनय सिंह, संघर्ष से उकरी गंगा के पड़ाव, समय से मुठभेड़ का जनकवि शुभदर्शन, पृ-42.
15. देवी प्रसाद मिश्र, राष्ट्रनिर्माण की राजनीति, देश-विदेश अनियतकालीन बुलेटिन, अंक-9, पृ- 29.
16. विनय सिंह, संघर्ष से उकरी गंगा के पड़ाव, समय से मुठभेड़ का जनकवि शुभदर्शन, पृ-42.
17. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 124.
18. शेख मुहम्मद कल्याण, समाज में फैल रही विसंगतियों पर चोट, समय से मुठभेड़ का

जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 92.

19. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ- 37.
20. सुधा जितेंद्र, कविताओं का संघर्षरत यथार्थवादी हाशिया, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 147.
21. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 98.
22. अमृतलाल नागर, बूँद और समुद्र, पृ- 582.
23. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 111.
24. सुधा जितेंद्र, कविताओं का संघर्षरत यथार्थवादी हाशिया, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 149.
25. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 99-100.
26. अनीता रावत, अमृतलाल नगर के उपन्यासों में आधुनिकता, पृ- 222.
27. सपना शर्मा, गहरी संवेदना से यथार्थ की अभिव्यक्ति, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 158.

चतुर्थ अध्याय: शुभदर्शन के काव्य में आर्थिक विद्रोह भावना

अर्थ किसी भी देश की सामाजिक व्यवस्था का आधार होता है। समाज में रहते हुए मनुष्य की मूल तीन अवश्यकताएँ होती हैं- रोटी, कपड़ा और मकान। जिस प्रकार जीवित रहने के लिए सांस की जरूरत होती है, उसी प्रकार समाज में रहने के लिए मनुष्य के पास इन तीनों चीजों का होना अति-आवश्यक माना गया है। इन तीनों चीजों की आज आधुनिक समय में महत्ता बहुत बढ़ गई है। इसके इलावा कोई देश शक्तिशाली है या कमजोर अर्थात उसको विकसित देशों की कोटि में रखना है या विकासशील, यह भी उस देश की आर्थिक स्थिति के आधार पर ही देखा जाता है। आधुनिक युग में यह माना गया है कि जो देश आर्थिक तौर पर मजबूत है, वही अधिक शक्तिशाली है।

विदेशी शक्तियों के आगमन से पहले भारत सबसे समृद्ध देश माना जाता था। भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। भारत की इसी आर्थिक स्थिति के कारण ही विदेशी शक्तियाँ भारत की तरफ आकर्षित हुईं और समय-समय पर भारत पर आक्रमण किया और उसको लूटा। अंग्रेज भारत में व्यापार करने के लिए आए थे, लेकिन भारत की कुछ कमज़ोरियों का लाभ उठाते हुए उन्होने भारत पर पूरी तरह से अपना अधिकार कर लिया और भारतीय जनता को अपने अधीन कर लिया। भारत से अंग्रेज सारा धन धीरे-धीरे विदेश ले गए और भारत की आर्थिक व्यवस्था का स्तर नीचे गिर गया। आर्थिक स्थिति के आधार पर भारतीय समाज को दो वर्गों में बाँट दिया गया। इन में से एक था पूँजीपति वर्ग तो दूसरा था मजदूर वर्ग। इन वर्गों को उच्च और निम्न वर्गों के नामों से जाना जाता था, जिनमें आर्थिक दृष्टि से काफी असमानता थी। उच्च वर्ग के लोग अंग्रेजों की चापलूसी करते रहे और अपनी आर्थिक स्थिति को और अधिक मजबूत करते रहे, तो दूसरी तरफ निम्न वर्ग का शोषण करते रहे। अंग्रेजों ने इसी बात का लाभ उठाया और भारत को कंगाल देश बना दिया। अँग्रेजी शासन के अधीन भारतीयों की आर्थिक स्थिति इस लिए भी कमजोर थी क्योंकि अंग्रेज़ उच्च पदों पर केवल अंग्रेजों को ही नियुक्त करते थे और निम्न पद केवल भारतीय अधिकारियों को दिए जाते थे। अंग्रेजों की इसी कूटनीति ने एक और तीसरे वर्ग को जन्म दिया, जो मध्य वर्ग के नाम से जाना जाने लगा। इस वर्ग की स्थिति उच्च और निम्न वर्ग के बीच की थी। लेकिन वास्तविक संघर्ष उच्च और निम्न वर्ग में ही चल रहा था। निम्न वर्ग को हमेशा से दबाया जाता रहा है और उच्च वर्ग सदा से निम्न वर्ग का शोषण करता चला आया है।

भारत की ऐसी आर्थिक स्थिति को साहित्यकारों ने जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया। क्योंकि उस समय आर्थिक असमानता को लेकर भारतीय साहित्यकारों पर मार्क्सवाद का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। मार्क्सवाद से प्रभावित कई साहित्यकारों और

कवियों ने भारत में पाए जाने वाली आर्थिक असमानता का विरोध करते हुए अपनी रचनाएँ की। एक साहित्यकार ही होता है जो समाज के वास्तविक रूप को सब के सामने उजागर करने का साहस रखता है। मार्क्स के अनुसार, "काव्य का सृष्टा कोई स्वप्न द्रष्टा मानव नहीं बल्कि दैनन्दिन जीवन के संघर्षों में संलग्न, आर्थिक परिस्थितियों से पूर्णतः प्रभावित और उनसे जूझता हुआ यथार्थदर्शी मानव है।"[1] इस प्रकार कवि केवल कल्पना का जाल ही नहीं बुनता अपितु जीवन के यथार्थ रूपी चित्र को भी प्रकट करता है।

भारत की आर्थिक स्थिति अंग्रेजों के जाने के बाद बहुत दयनीय हो गई थी। अंग्रेजों ने भारत को पूरी तरह से लूट लिया था और दो भागों में विभाजित कर दिया था। एक तरफ राजनीतिक समस्याएँ तो दूसरी तरफ देश की आर्थिक स्थिति। देश की आर्थिक स्थिति का बयान उस समय के साहित्य में किया गया है। नागार्जुन ने अपनी कविता 'प्रेत का बयान' में भारत में भुखमरी की समस्या को प्रकट किया है-

"पेशा से प्राईमरी स्कूल का मास्टर था,
तनखा थी तीस रुपये,
सो भी नहीं मिली,
मुश्किल से कटे हैं,
एक नहीं, दो नहीं,
नौ-नौ महीने।"[2]

इस कविता के माध्यम से नागार्जुन ने यह बताया है कि भारत में जो सरकारी नौकरी करने वाला एक मास्टर है, उसकी यह हालत है कि वेतन न मिलने के कारण भूख से वो मर जाता है और बाद में उसका प्रेत अपना बयान देता है कि वह किस तरह मरा था। आधुनिक समय में भारत में गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ अधिक सामने आई हैं। आर्थिक स्तर दिन प्रति दिन नीचे गिरता जा रहा है। समाज दो वर्गों में विभाजित हुआ है, जो निम्न वर्ग है, वह अपने अधिकारों के लिए बहुत समय से संघर्ष कर रहा है।

अपने देश में पाई जाने वाली आर्थिक असमानता के यथार्थवादी रूप को कवियों ने बखूबी प्रस्तुत किया है। स्टडी इन यूरोपियन रियलिज़्म में जॉर्ज लुकाच ने कहा है, "सच्चा यथार्थवादी लेखक वही होता है जो बिना किसी भय और पक्षपात के जो कुछ भी अपने आस-पास देखता है, उसका वैसा ही चित्रण करता है।"[3] इसी प्रकार के यथार्थवादी कवियों में शुभदर्शन का नाम भी आता है। कवि शुभदर्शन का गरीब और मजदूर वर्ग के प्रति लगाव था। शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से अर्थ के कई पक्षों को जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का

प्रयास किया है। शुभदर्शन एक यथार्थवादी कवि हैं और सत्य को प्रकट करने में किसी प्रकार का न उनको भय है और न ही संकोच। एक तरफ अर्थ के कारण आज आधुनिक समय में रिश्तों में जो कड़वाहट आ रही है, उसका चित्रण भी कवि शुभदर्शन ने अपने काव्य में किया है। दूसरी तरफ गरीबी और बेबसी और पूंजीपति वर्ग के अत्याचारों को भी कवि ने अपने काव्य का रूप देकर इस आर्थिक असमानता के प्रति अपनी विद्रोह भावना को अभिव्यक्त किया है।

अर्थ के कारण सम्बन्धों में तनाव के प्रति विद्रोह भावना :

शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से यह बताया है कि आधुनिक युग में मनुष्य की महत्ता पैसे से कहीं ज्यादा कम है। महत्व केवल पैसे को दिया जाता है। सभी रिश्ते-नाते खोखले हो चुके हैं और किसी से सम्बन्ध केवल उसकी आर्थिक स्थिति को देख कर बनाया जाता है। जो व्यक्ति गरीब है, उसको कोई नहीं पूछता। अमीरों की सभी चापलूसी करते हैं। पुराने समय में रिश्तों में जो सच्चाई और ईमानदारी थी, अब वो कहीं दिखाई नहीं देती है। कोई भी अपने होने का अहसास नहीं दिलाता। सभी एक दूसरे से आगे बढ़ना चाहते हैं। पैसे की खातिर अपनों को धोखा देना एक आम सी बात हो गई है। पंजाबी की एक मशहूर कहावत, 'जिसके घर दाने, उसके कमले भी सयाने' आज के युग में पूरी तरह से लागू हो रही है। मान-सम्मान केवल उसी व्यक्ति को मिलता है, जो आर्थिक रूप में अच्छा हो। गरीब व्यक्ति के साथ कोई भी किसी प्रकार का रिश्ता नहीं बनाना चाहता।

शुभदर्शन अपनी कविता के माध्यम से यही बताना चाहते हैं कि सामाजिक सम्बन्ध केवल दिखावा है। हर कोई आर्थिक रूप से समृद्ध होना चाहता है। पैसे की दौड़ में कोई पीछे नहीं रहना चाहता। इसी लिए आज सारे रिश्ते अहसासहीन हो गए हैं और केवल अर्थ के रिश्ते को ही सच्चा माना जाने लगा है। एक व्यक्ति पर दूसरे का विश्वास नहीं रहा है। शुभदर्शन आर्थिक स्वार्थों के कारण रिश्तों को टूटते हुए पाते हैं। यह सम्बन्धों की टूटन और अपने में भेद-भाव की भावना कवि के हृदय को ठेस पहुंचाती है और इस व्यवस्था के प्रति कवि के मन में विद्रोह की भावना को जागृत करती है। आधुनिक समय में अर्थ के लोभ के कारण व्यक्ति के भीतर की प्रेम और सहानुभूति की भावनाएँ नष्ट होती जा रही हैं। किसी के लिए कोई मोह नहीं, कोई प्यार नहीं, रिश्ता है तो केवल मतलब का। पुराने समय में रिश्तो में जो विश्वास, जो मजबूती थी, आज वह कहीं भी दिखाई नहीं देती है। शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से इसी बात के ऊपर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। अरुणा शर्मा ने कवि शुभदर्शन के ऊपर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि, "कवि निजी स्वार्थों-आर्थिक अभावों के रिश्तों में अलगाव और बिखराव महसूस करते हैं। संवेदना और व्यवहार समांतर तो चलते हैं- एक साथ नहीं/नदी के दो किनारों की तरह।"[4]

इस प्रकार कवि ने यह स्पष्ट किया है कि अर्थ की महत्ता बढ़ने के कारण मानवीय सम्बन्धों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। अर्थ अर्थात पैसा मानवीय सम्बन्धों पर भारी पड़ रहा है, क्योंकि व्यक्ति रिश्तों की अपेक्षा पैसे को अधिक महत्व दे रहा है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'अहसास से बगावत' में रिश्तों के अहसासहीन होने और मनुष्य पर हावी हो रही पैसे की होड़ को उजागर करने का प्रयास किया है-

"तुम्हारे पास कुछ समझने/सुनने,
का समय ही कहाँ,
पैसे की अंधी दौड़ में,
छूट चुका है,
रिश्तों का अहसास।"[5]

आज मनुष्य के पास अपनों के लिए बिल्कुल भी समय नहीं है। अगर किसी के पास अपार धन है तो भी उसका मन नहीं भरता। वह अपनों से और अधिक धनवान होना चाहता है। इसी लिए पैसे कमाने की अंधी दौड़ में दिन-रात लगा रहता है। धन ने मनुष्य से मनुष्य का संवेदना का सम्बन्ध बिल्कुल तोड़ दिया है। रिश्तों का अहसास अब किसी में नहीं है। हर कोई एक दूसरे से आगे बढ़ने में लगा हुआ है। आज का मनुष्य पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहता। लेकिन अगर वह अपने जीवन में पीछे मुड़कर देखे तो उसे पता चलेगा कि उसने पीछे कितना कुछ छोड़ दिया है। मनुष्य केवल धन कमाने में लगा हुआ है, लेकिन अपने परिवारजनों के साथ जो समय उसे बिताना चाहिए था, उसके मूल्य को वह नहीं पहचान पा रहा है। पैसा तो हाथों की मैल है। आज है तो कल नहीं है। लेकिन जीवन में परिवार और संबंधियों के साथ जो खुशी के पल बिताने के लिए आते हैं, वह बार-बार नसीब नहीं होते। बीता हुआ वक्त कभी लौटकर नहीं आता है।

शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से यही बताया है कि मनुष्य के जीवन में रिश्तों की एक खास अहमियत है। हमारे भारतीय समाज में रिश्तों को अधिक महत्व दिया जाता है। लेकिन आज के युग में धन ही सब कुछ हो गया है। मनुष्य के भीतर पैसे की लालसा दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। धन के लिए मनुष्य किसी भी हद को पार कर रहा है। अपनों के लिए ही घातक बन रहा है। गाँव के लोग शहरों में आकार बसने लगे हैं। ग्रामीण जीवन में अभी भी आपसी प्यार और भाईचारे की भावना को बढ़ावा दिया जाता है। इसी लिए गाँव के जीवन को स्वच्छ माना जाता है। लेकिन अब धीरे-धीरे गांवों के लोग शहरों में आकर बसने लगे हैं और वे भी पैसे की न खत्म होने वाली दौड़ में लग गए हैं। पैसे ने व्यक्ति को छोटा कर दिया है। पैसे ने सभी सम्बन्धों को खोखला कर दिया है। पैसे की खातिर मनुष्य मनुष्य को बेचने तक में संकोच नहीं करता है। विनय सिंह के शब्दों में, "शुभदर्शन जी जीवन के उस दर्शन को देखते हैं

और लिखते हैं जो हाशिये का आम जन है। पूंजीवादी-आर्थिक रिश्तों में, स्वार्थ और व्यक्तिवाद के कुचक्रों में सामाजिक रिश्ते कैसे विखंडित हो रहे हैं"[6], इस को कवि ने अपने काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। शुभदर्शन ने कविता के द्वारा बताया है कि पैसे के अहंकार के कारण व्यक्ति सब कुछ भूल गया है-

"यहाँ उलझाव है,
आंटी और अंकल ने,
खत्म कर दिए हैं वे सब रिश्ते,
और पैसे के अहंकार ने अहसास।"[7]

कवि शुभदर्शन ने आधुनिक युग के वास्तविक स्वरूप का चित्र खींच कर जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ग्राम के लोग शहर में आकर बस गए हैं, जिसके कारण रिश्तों में जो प्यार, स्नेह और अपनेपन का अहसास था, वह नष्ट हो गया है। पैसे के अहंकार ने मानवता को विनाश की और धकेल दिया है। पुराने समय में यह कहा जाता था कि जो मिला है, उसी में सब्र करना चाहिए। दूसरे को खुशहाल देख कर अपने घर की खुशियों को आग नहीं लगानी चाहिए। अर्थात जितनी मेहनत से जो कमाया है, उसी में खुश रहना चाहिए। इससे ही व्यक्ति को सच्ची खुशी प्राप्त होती है। लेकिन आज समय बदल चुका है। कोई किसी से आगे हो गया, कोई इस बात को सहन नहीं करता। व्यक्ति दूसरे से आगे बढ़ने के लिए सब कुछ भूल जाता है और किसी भी हद को पार करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करता है। कवि शुभदर्शन ने आधुनिक युग की इसी विषमता के विरुद्ध अपनी विद्रोह की भावना को अभिव्यक्त किया है।

अपने काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में कवि शुभदर्शन ने अनेक प्रतीकों का प्रयोग किया है। इन में से कवि ने आज के लालसा से परिपूर्ण मनुष्य को अभिव्यक्त करने के लिए 'गौरैया' शब्द का प्रयोग किया है। गौरैया मनुष्य का प्रतीक है, जो गाँव को छोड़कर शहर में आ गई है और अपने बच्चों का लालन-पालन कर रही है, लेकिन शहर में आकर गौरैया पैसे के पीछे इस तरह भाग रही है कि उसका बाकी सब पीछे छूट रहा है। जितना उसको मिल रहा है, वह उससे और अधिक प्राप्त करना चाहती है। सुधा जितेंद्र के शब्दों में, "सम्बन्धों के दिखावटीपन और बनावटीपन के साथ-साथ संघर्ष बस संघर्ष में 'गौरैया' का प्रतीक भी अर्थ की अनेक परतें खोलता है।"[8] गौरैया एक छोटा सा प्रतीक है, लेकिन इसका अर्थ व्यापक है। गौरैया मानव के व्यवहार और आचार को अभिव्यक्त करती है। आज सम्बन्धों में दिखावा अधिक है और संवेदना कम है। धन के लालच ने मनुष्य को मनुष्य का शत्रु बना दिया है।

कवि शुभदर्शन ने अपनी कविता 'शहर की और गौरैया' में गौरैया के माध्यम से आधुनिक मनुष्य की प्रवृति को उजागर करने का प्रयास किया है-

"इक अंधी दौड़ में है—गौरैया,
पैसे की, घर बनाने की तमन्ना के साथ,
x x x
--- दौड़ रही है निरंतर।"[9]

इस कविता के माध्यम से कवि ने यही बताने की कोशिश की है कि मनुष्य एक कभी न खत्म होने वाली पैसे की अंधी दौड़ में लगा हुआ है। यह दौड़ केवल उसे उसके विनाश की तरफ ही ले जा सकती है। पैसे के लालच ने मनुष्य की आँखों पर एक पट्टी बांध दी है, जिसके कारण उसको सारा समाज अपना शत्रु जान पड़ता है। इसी के कारण वह अधिक से अधिक धन एकत्रित कर समाज में आगे बढ़ने की तमन्ना रखता है। मनुष्य अपने शरीके के लोगों को पीछे छोड़ना चाहता है और दूसरों के घरों में आग लगाकर स्वयं खुश होता है। पुराने समय में कहा जाता था कि प्यार व्यक्ति से कुछ भी करवा सकता है, लेकिन आज के समय में प्यार की जगह पैसे ने ले ली है। आज का मनुष्य कहता है कि पैसा सब कुछ करवा सकता है। जिसके पास पैसा है, वही बलशाली है और कुछ भी करने की ताकत रखता है। इस प्रकार शुभदर्शन ने अपने काव्य के द्वारा अर्थ के कारण सम्बन्धों में जो तनाव उत्पन्न हो रहा है, उसको प्रस्तुत किया है और उसके प्रति अपना प्रतिरोध व्यक्त किया है।

गरीबी और बेबसी के प्रति विद्रोह भावना :

गरीबी को अभिशाप माना गया है। गरीब व्यक्ति का जीवन संघर्ष करने में ही निकल जाता है। गरीब व्यक्ति को हमेशा हीन दृष्टि से देखा जाता है। उसको लताड़ा जाता है। गरीब व्यक्ति सबसे अधिक मेहनत करता है, लेकिन कड़ी मेहनत के बावजूद भी उसे हर समय दो वक्त की रोटी की चिंता रहती है। उसको उसकी कड़ी मेहनत का वो फल नहीं मिलता, जो उसे मिलना चाहिए। एक किसान के रूप में गरीब व्यक्ति सबका अन्न दाता है। सबके पालन का कार्य उसके कंधों पर होता है। इसके लिए वह रात-दिन एक कर देता है, लेकिन दूसरों का पेट भरने वाला स्वयं भूखा रहता है। भरत सिंह ने किसानी जीवन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि, "जो धरती को जोतता-बोता है, जिसके बिना समाज जीवित नहीं रह सकता, वह घृणा और गरीबी में दिन काटता है, जिसकी लगातार मेहनत के बिना अकाल में शेष मानव का नाश हो जाए, वह स्वयं अकाल का शिकार होता है और मर

जाता है।"[10] चाहे कोई किसान है या मज़दूर सख्त परिश्रम करने के बाद भी उनको अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने का अवसर नहीं मिलता है।

साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से गरीबी को एक गंभीर समस्या के रूप में उजागर करने का प्रयास किया है। साहित्यकारों ने देश की गरीबी की दशा के प्रति अपने विद्रोह को व्यक्त किया है और गरीब जनता के प्रति अपनी सहानुभूति को प्रकट किया है। नागार्जुन की कविता में गरीबी और बेबसी का चित्र देखा जा सकता है-

"कैसा असहाय,
कितना जर्जर,
यह मध्यवर्ग का निचला स्तर।"[11]

नागार्जुन की भांति ही कवि शुभदर्शन ने भी गरीब और बेसहारा लोगों के प्रति अपनी सहानुभूति को अभिव्यक्त किया है। गरीबी का कारण उत्पादन के साधनों पर समान अधिकार न होना है। इसके अतिरिक्त बढ़ती हुई महंगाई भी इसका एक मुख्य कारण है। महंगाई ने गरीब व्यक्ति की कमर तोड़ दी है। गरीबी के कारण व्यक्ति दो वक्त की रोटी नहीं कमा पाता, तो वह अपनी और अपने परिवार की अन्य जरूरतों को कैसा पूरा करे। विदुषी भारद्वाज ने महंगाई पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि, "समाज में व्याप्त समस्याओं में महंगाई भी एक बहुत बढ़ी समस्या है। महंगाई ने व्यक्ति के सपने कुचल दिए हैं।"[12] इसका अर्थ यह है कि गरीब व्यक्ति अगर कोई सपना देखता भी है तो आज के समय में उसको पूरा करना बहुत कठिन है। यह कहा जाता है कि गरीब व्यक्ति को सपने देखने का कोई अधिकार नहीं है। लेकिन यह बात बिल्कुल गलत है। हर व्यक्ति को सपने देखने का अधिकार है, लेकिन आज जो दिन-प्रति-दिन महंगाई बढ़ती जा रही है, उसके कारण एक निचले स्तर का व्यक्ति अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाता है। जिसके कारण उसके सपने कुचल दिए जाते हैं।

शुभदर्शन ने गरीबी और बेबसी को अपने काव्य के द्वारा उजागर किया है। कवि के हृदय में गरीब और बेबस लोगों के लिए हमदर्दी है। गरीब व्यक्ति का कोई साथ नहीं देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर भी उससे रूठ गया हो। शुभदर्शन एक संवेदनशील कवि हैं और एक संवेदनशील कवि वर्तमान व्यवस्था और बेबस लोगों के दर्द से विमुख नहीं रह सकता है। शुभदर्शन ने आज की आर्थिक स्थिति की वास्तविकता को व्यक्त किया है और समाज के सामने यथार्थ स्थिति को उजागर करने का प्रयास किया है। गरीबी व्यक्ति को गलत रास्तों पर ले जाती है। आज की युवा पीढ़ी पढ़-लिख कर बेकार घूम रही है। जिसके कारण वह गलत रास्तों पर चलने लगती है। गरीबी और बेकारी के कारण उनके सपने अधूरे रह जाते हैं। कवि शुभदर्शन ने अपनी कविता 'क्या कोई रास्ता नहीं' में गरीबी और लाचारी को व्यक्त किया है-

"गायब है सपनों का सौदागर,

छिप जाते हैं फिर देवता,
मुरझा जाती हैं---कोंपलें,
अंधेरे से मुक्ति का,
कोई रास्ता नहीं है क्या?"[13]

कवि शुभदर्शन ने इस कविता के माध्यम से यह बताया है कि जब एक गरीब व्यक्ति कोई सपना देखता है तो ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उसने कोई गुनाह कर लिया हो। ऐसा लगता है, जैसे कि पूरी कायनात ही उस व्यक्ति के सपने को कुचलने में लगी हुई हो। गरीब व्यक्ति की पुकार कोई भी नहीं सुनता है। जिसके कारण गरीब और बेबस व्यक्ति टूट जाता है। इस बात पर कवि शुभदर्शन ने अपना विरोध प्रकट किया है कि क्या इस गरीबी से मुक्ति पाने का कोई रास्ता नहीं है? यह देश के ऊपर एक अभिशाप है, एक कलंक है। इस लिए इस समस्या से निजात पाने के लिए देश की सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिएँ।

गरीब व्यक्ति केवल रोटी के बारे में ही सोचता है। उसके लिए कुछ और सोच पाना संभव ही नहीं है। आम आदमी की दौड़ केवल रोटी तक ही सीमित है क्योंकि उसका मुख्य लक्ष्य रोटी पाना ही है। गरीब व्यक्ति आत्मसम्मान से वंचित जिंदगी को वर्षों से ढोता जा रहा है। विनय दुबे ने अपनी कविता में यह बात स्पष्ट की है कि एक आम आदमी के लिए रोटी ही सब कुछ होती है-

"फिलहाल वे खुश हैं,
वे इसलिए खुश हैं कि वे रोटी खा रहे हैं,
और जो उन्हे खाने को मिल जाती है,
रोटी सिर्फ उनके लिए रोटी है,
और सोचना उनके लिए,
सिर्फ रोटी की बावत सोचना है।"[14]

यहाँ पर विनय दुबे ने यह बात स्पष्ट की है कि एक गरीब व्यक्ति हमेशा केवल रोटी के बारे में ही सोचता रहता है। उसे दुनिया दारी से कोई वास्ता नहीं है। गरीब व्यक्ति के दिन की शुरूआत रोटी पर होती है और अंत भी रोटी पर ही होता है। लेकिन अमीर व्यक्ति इसी बात का लाभ उठा लेते हैं। वैसे भी समाज में अमीर एवं प्रतिष्ठित लोगों को ही सम्मान दिया जाता है। इस लिए गरीब व्यक्ति की सोच वहीं तक सीमित रह जाती है।

अशोक कुमार के अनुसार, "भूख व्यक्ति को लाचार बना देती है, इसी कारण अमीर भूखे व्यक्ति के श्रम को खरीद लेता है। भूख का शोषण वैश्विक है। झोंपड़ी में रहने वाले शोषितों के जीवन की समानता भी वैश्विक है।"[15] कवि शुभदर्शन ने इसी बात को उजागर किया है। भूख

व्यक्ति को बेबस कर देती है। कवि का मानना है कि अगर इस समस्या को नष्ट करना है तो अपनी आवश्यकताओं को खत्म करना होगा। मनुष्य की दिन-प्रति-दिन जो आवश्यकताएँ बढ़ रही हैं, उसी के कारण देश में गरीबी बढ़ रही है। मनुष्य के पास जितना है, उससे वह कभी सबर नहीं करता है। जरूरत से अधिक पाने की लालसा ने ही मनुष्य को इस स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'गुमसुम है गौरैया' में गौरैया के माध्यम से गरीब व्यक्ति की लाचारी को व्यक्त किया है, जो कठिन परिश्रम करने के लिए मज़बूर है क्योंकि वह कर्जदार है-

"माँ ने भी यह यातना झेली तो होगी,
माँ ने भी आंधी देखी तो होगी,
पर कौवे !!
खामोश है गौरैया,
कर्जदार है गौरैया।"[16]

सिर पर कर्जे के भार ने व्यक्ति को और भी लाचार बना दिया है। पुराने समय से चली आ रही जमीदारी प्रथा ने गरीब व्यक्ति की स्थिति और भी दयनीय कर दी है। कवि ने गौरैया के प्रतीक रूप से यह बताने का प्रयास किया है कि कोई व्यक्ति मुश्किल के दिनों में अपने परिवार को अकेला नहीं छोड़ना चाहता है, लेकिन कर्ज के कारण उसे अपने परिवार से दूर जाना पड़ता है। क्योंकि उसे जमींदार से लिया हुआ कर्ज वापिस करना है। लेकिन जमींदार ब्याज के ऊपर ब्याज लगाते रहते हैं और गरीब व्यक्ति को अपनी अधीनगी से आज़ाद नहीं होने देते हैं। इसी कारण गरीब व्यक्ति हमेशा कर्ज के नीचे दबा रहता है।

भूख व्यक्ति से कुछ भी करवा सकती है। इसी भूख को मिटाने के लिए व्यक्ति अनेकों गलत काम भी करने लग जाता है। शुभदर्शन ने व्यक्ति की इसी लाचारी को उजागर किया है। जीवन के दर्द और यथार्थ को हूबहू प्रस्तुत करना बहुत कठिन कार्य है। ज़्यादातर कवि वास्तविकता में कल्पना का प्रयोग अधिक करते हैं। लेकिन कवि शुभदर्शन ने बिना किसी भय के अपने काव्य को यथार्थ का चोला पहनाकर समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। विनय सिंह के शब्दों में, "शुभदर्शन जी पूंजीवादी, भूमंडलीकरण एवं बाज़ारवाद के शहरीकरण दौर में निर्धनता, भ्रष्टाचार, अत्याचार, अन्याय आदि को महसूस करते हैं। एक तरफ पूंजीपति उच्च वर्ग है, जो निरंतर शोषण कर रहा है, दूसरी ओर शोषक और निर्धनता के बीच पिस रहा है निम्न, बेबस, लाचार, गरीब वर्ग, ऐसी व्यवस्था से ही ऊब कर समाज में चोरी, डकैती, फिरौती, माफ़िया, लपट-लफ़ंगे पनपते हैं।"[17]

शुभदर्शन ने अपने काव्य के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि आज आधुनिक युग में बेरोजगारी की समस्या भी बहुत अधिक बढ़ गई है। इसी लिए कई लोग तो गलत कामों में लग जाते हैं। लेकिन ज़्यादातर नौजवान विदेशों में जाकर काम करते हैं। अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए लोगों को अपने परिवार से दूर जाना पड़ता है। घर की आर्थिक हालत ठीक न होने के कारण उनको अपना घर छोड़कर जाना पड़ता है। गरीब व्यक्ति को हर क्षेत्र में संघर्ष करना पड़ता है। शुभदर्शन ने व्यक्ति के इसी संघर्ष को अपने काव्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'संघर्ष की विरासत' में व्यक्ति के संघर्ष को व्यक्त किया है-

"पेट की आग बुझाने, परदेस गए बेटा,
क्या समर्पित करूँ तुझे, मेरे पास तो हैं,
केवल तेरी यादें, कुछ आँसू।"[18]

इस प्रकार कवि शुभदर्शन ने गरीब परिवार के एक पिता की भावनाओं को व्यक्त किया है, जिसका बेटा अपने परिवार की भूख और अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए विदेश पैसा कमाने के लिए गया हुआ है। उसका पिता उसे यह संदेश दे रहा है कि संघर्षमयी जीवन उसे विरासत में मिला है। इस प्रकार शुभदर्शन ने गरीब और बेबस लोगों की आर्थिक स्थिति के प्रति अपना विद्रोह व्यक्त किया है। डॉ॰ हुकुम चंद राजपाल जी मानते हैं कि, "कमज़ोर और समाज के अत्याचारों से सताए हुए लोगों में कवि की सहानुभूति स्पष्टतःपरिलक्षित होती है।"[19]

पूंजीपति वर्ग की दमनकारी नीति के प्रति विद्रोह भावना :

अर्थ के आधार पर समाज दो वर्गों में बंटा हुआ है- पूँजीपति और मज़दूर वर्ग। जब देश पर अंग्रेजों का शासन था तो उन्होने पूँजीपति वर्ग को अधिक प्रोत्साहित किया था, जिसके कारण पूँजीपति सदा से मज़दूर वर्ग का शोषण करते आए हैं। अंग्रेजों की कूटनीति के कारण एक अन्य वर्ग का जन्म हुआ, जिसको मध्य वर्ग के नाम से जाना जाने लगा। मध्य वर्ग में वे लोग आते हैं, जिनकी स्थिति पूँजीपति वर्ग और मज़दूर वर्ग के बीच की है। अंग्रेजों के द्वारा भारत में अपनी सत्ता कायम रखने के लिए हमेशा उच्च वर्ग का समर्थन किया गया। दूसरी तरफ उच्च वर्ग के लोग भी अपनी उच्चता बनाए रखने के लिए अँग्रेजी शासन का समर्थन करते थे। इसी नीति के कारण मज़दूर एवं निम्न वर्ग पर अत्याचार होते रहे और उनका लगातार शोषण होता आ रहा है।

आर्थिक साधनों पर सदा से ही पूँजीपति वर्ग का अधिकार रहा है। इसी आर्थिक असमानता का विरोध मार्क्सवाद ने किया है। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित कई साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से इस आर्थिक असमानता के प्रति अपना विरोध प्रकट

किया है। पूँजीपति वर्ग सदा से ही मजदूर वर्ग का शोषण करता आया है। पूँजीपति मजदूरों से अपने कारखानों में ज्यादा से ज्यादा काम करवाते हैं, लेकिन उनकी कड़ी मेहनत का परिश्रम बहुत कम देते हैं। नियमित समय से अधिक समय तक मज़दूरों से काम लिया जाता है। लेकिन कम वेतन पर काम करना निम्न वर्ग की मजबूरी बन गया है। क्योंकि अगर कोई कम वेतन पर काम करने से मना करता है तो पूँजीपति दूसरे मज़दूरों को कम वेतन पर काम पर रख लेते हैं। छायावादी युग के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपनी कविता 'कुकुरमुत्ता' में पूँजीपति वर्ग की दमनकारी नीतियों पर व्यंग्य किया है-

"अबे सुन बे गुलाब,
भूल मत गर पाई खुशबू रंगो आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट।"[20]

यहाँ पर गुलाब का फूल पूंजीपति वर्ग का प्रतीक है, जो सबको अपने इशारों पर नचाता है। पूँजीपति उच्च वर्ग निम्न वर्ग का खून चूस कर ही आगे बढ़ा है। अगर कोई उसके खिलाफ आवाज़ उठता है तो उसको कुचल दिया जाता है। मार्क्सवाद इसी लिए समाजवाद की स्थापना करना चाहता है, यहाँ पर उत्पादन के साधनों पर सबका समान अधिकार हो और कोई भी बड़ा या छोटा न हो। साधनों की असमानता के कारण ही समाज में उच्च और निम्न वर्ग बने हुए हैं। जिसके कारण उच्च वर्ग सदा से ही निम्न वर्ग का शोषण करता आया है।

समकालीन कवि शुभदर्शन ने अपने काव्य के द्वारा पूंजीपति वर्ग के प्रति अपने विद्रोह को व्यक्त किया है। कवि ने पूंजीपति वर्ग की कुरीतियों को उजागर करने का प्रयास किया है। कवि ने मज़दूर वर्ग को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए विद्रोह करने के लिए कहा है। विदुषी भारद्वाज ने कवि शुभदर्शन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि, "कवि का विचार है कि समाज में व्याप्त भूख और गरीबी का कारण महाजनी सभ्यता है। इसका अंत होना चाहिए, जिसके लिए कवि श्रमिक वर्ग का आह्वान करता है कि वह देवता का सहारा छोड़ क्रांति का अवलम्ब लें।"[21] कवि का मानना है कि अधिकारों के लिए आवाज़ उठाना कोई गलत बात नहीं है।

पूँजीपति वर्ग भावना रहित होता है। उनको केवल अपना फायदा ही नज़र आता है। अपने फायदे के लिए वे किसी भी हद तक जा सकते हैं। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'क्या कोई रास्ता नहीं' में पूँजीपति वर्ग के मज़दूर वर्ग पर किए जाने वाले अत्याचारों को व्यक्त किया गया है-

"न दे दिखाई,
किसी हड़ताली की बीवी में,
आँखों की नमी जो,
सुबह से चूल्हे में फूँक मारती,
देख रही है लौ की उम्मीद,
धुएँ के बवंडर में।"[22]

कारखानों में जो मज़दूर काम करते हैं, उनसे मालिकों को कोई मतलब नहीं होता है। उनको सिर्फ अपने काम से मतलब होता है। मज़दूरों को उनकी मेहनत का उचित वेतन नहीं दिया जाता, जिसके कारण मज़दूर हड़तालें करते हैं। लेकिन इन हड़तालों का नुकसान भी मज़दूरों को ही होता है। पूँजीपति वर्ग को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। इस लिए शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। सुदामा पांडे धूमिल ने भी अपने काव्य में पूँजीपति वर्ग की अत्याचारी नीति को प्रकट किया है-

"एक आदमी रोटी बेलता है,
एक आदमी रोटी खाता है,
एक तीसरा आदमी भी है,
जो न रोटी बेलता है न खाता है,
वह सिर्फ रोटी से खेलता है।"[23]

धूमिल ने अपने काव्य में पूँजीपति वर्ग के प्रति अपने विद्रोह को व्यक्त किया है और निम्न वर्ग की बेबसी को उजागर किया है। पूँजीपति कूटनीति का प्रयोग करते हैं और निम्न वर्ग की भावनाओं के साथ खेलते हैं। उच्च वर्ग सभी को अपने इशारों पर नचाता है और स्वयं शासन करता है। गरीबों का खून चूसता है और उनका आर्थिक शोषण करता है।

शुभदर्शन ने भी इसी प्रकार की कविता की रचना की है। शुभदर्शन ने बिना किसी डर के पूंजीवादी व्यस्वस्था का विरोध किया है और मज़दूर वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति को प्रकट किया है। कवि का कहना है कि पूँजीपति ही समाज में व्याप्त आर्थिक समस्याओं का कारण है। आर्थिक साधनों पर केवल उच्च वर्ग का ही अधिकार है, जिसके कारण अमीर और गरीब वर्ग में पैसे के लिए सदा से संघर्ष चलता आया है। शुभदर्शन ने पूँजीपति वर्ग की कलई खोलने में किसी प्रकार का संकोच नहीं किया है। रमेश कुंतलमेघ के अनुसार, "शुभदर्शन, पूँजीपति-कॉर्पोरेटवादी-भूमंडलीकरण शहरीकरण में निर्धनता, भ्रष्टाचार, अत्याचार, अन्याय आदि का लगातार साक्षात्कार कराता है।"[24] शुभदर्शन के अनुसार समाज में जो दो गुट बन गए हैं, उनमें एक गहरी खाई बन चुकी है। इसका कारण आधुनिक युग में धन की बढ़ रही अधिक महत्ता है।

लोग धन के लिए कुछ भी कर सकते हैं। जिसके पास जितना अधिक धन है, वह उससे भी और अधिक पाना चाहता है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'झोंपड़ी की समानता' में समाज में बने हुए दोनों गुटों के ऊपर प्रकाश डाला है-

"पैसे की बंदर-बाट ने कर दिए हैं दो ग्रुप,
अमीर और गरीब का,
x x x
फर्क होता है उसमें आए,
मक्कारी के विषाणुओं का।"[25]

शुभदर्शन ने इस कविता के माध्यम से यह प्रकट किया है कि आधुनिक युग में आर्थिक विषमताएँ बहुत बढ़ गई हैं। गरीब वर्ग इस लिए विद्रोह करता है क्योंकि वह अपने अधिकारों को प्राप्त करना चाहता है। पूँजीपति वर्ग इस लिए विद्रोह करता है कि उसकी समाज में जो प्रतिष्ठा बनी है, वो कायम रहे। इसी कारण से आज जो गरीब है, वो और अधिक गरीब होता जा रहा है और जिसके पास अपार धन शक्ति है, वो और शक्ति संगठित करने में लगा हुआ है। पैसे की इस अंधी दौड़ ने समाज को तोड़ कर रख दिया है। शुभदर्शन ने इसी के प्रति अपने विद्रोह को अभिव्यक्त किया है।

आज सत्ता भी पूँजीपति वर्ग के अधीन है, क्योंकि नेता चुनाव के दिनों में पूँजीपतियों से धन प्राप्त करके ही चुनावों में खड़े हो पाते हैं। इसी लिए सारी व्यवस्था ही पूँजीपतियों का साथ देती है। लेकिन दूसरी तरफ मज़दूर वर्ग का साथ कोई नहीं देता। अगर कोई गरीब व्यक्ति सत्ताधारी पूँजीपतियों के खिलाफ आवाज़ उठाने का प्रयास भी करता है तो उस गरीब व्यक्ति को ही ऐसी साज़िशों में फंसा दिया जाता है कि उसका सारा जीवन ही नष्ट हो जाता है। रघुवीर सहाय भी एक विद्रोही कवि माने गए हैं। उनके काव्य में भी पूँजीपति वर्ग के अत्याचारों का वर्णन और मज़दूर और पूँजीपति वर्ग की स्थिति को उजागर किया गया है। रघुवीर सहाय की कविता 'आत्महत्या के विरुद्ध' में उन्होने दोनों वर्गों की स्थिति को बखूबी प्रस्तुत किया है-

"मारो मारो मारो शोर था मारो,
एक ओर साहब था, सेठ था सिपाही था,
एक ओर मैं था, मेरा पुत्र था और भाई था,
मेरे पास आकर खड़ा हुआ एक राही था।"[26]

यहाँ पर यह बात स्पष्ट की गई है कि गरीब व्यक्ति का कोई नहीं होता। अमीर व्यक्ति की रक्षा के लिए सारी सत्ता खड़ी होती है, लेकिन गरीब व्यक्ति के साथ राही अर्थात जनता

होती है। विजय प्राप्ति के लिए उच्च वर्ग प्रत्येक प्रकार की शक्ति का प्रयोग करता है और निम्न वर्ग के अरमानों को कुचल कर रख देता है।

कवि शुभदर्शन ने भी अपने काव्य में दोनों वर्गों पूँजीपति और मज़दूर की स्थिति को व्यक्त किया है। मज़दूर पूंजीपतियों की मिलों में दिन-रात काम करते हैं, लेकिन फिर भी उनको पूरा वेतन नहीं दिया जाता। इसके विरुद्ध मज़दूर वर्ग आवाज़ उठता है तो उन पर अत्याचार किए जाते हैं। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'आत्मकथा' में मज़दूर वर्ग की बेबसी और पूँजीपति वर्ग के अत्याचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है-

"रोटी की माँग करने पर,
किस तरह बरसती हैं--- गोलियां,
कैसे होता है--लाठीचार्ज,
और घोंसलों में माँ की चोंच से,
दाना चुग रहे नन्हें बच्चों के,
कैसे नोच लिए जाते हैं--पंख।"[27]

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि शुभदर्शन ने आधुनिक युग की वास्तविकता को अभिव्यक्त किया है। शुभदर्शन ने यह बताया है कि आधुनिक समय में पूंजीवाद का ही बोलबाला है। निम्न वर्ग अगर उनके विरुद्ध कोई कार्यवाई भी करना चाहता है तो उनके ऊपर ही लाठीचार्ज किया जाता है। उनकी आवाज़ दबाने का हर संभव प्रयास किया जाता है। अमीर वर्ग गरीबों का दमन करता आया है और कर रहा है। शुभदर्शन ने वर्तमान समय में अर्थ के कारण रिश्तों में जो कड़वाहट आ गई है, उसको उजागर किया है। पूंजीपति वर्ग की दमनकारी नीतियों पर प्रकाश डाला है और उसके विरुद्ध अपनी विद्रोह भावना को अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ सूची

1. कार्ल मार्क्स, द जर्मन आइडियोलॉजी:मार्क्स एण्ड एंगेल्स, पृ- 13.
2. नागार्जुन, प्रेत का बयान, पृ- 85.
3. इन्द्र सिंह ठाकुर, आठवें दशक की हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना, पृ- 28.
4. अरुणा शर्मा, अंतहीन संघर्ष की गाथा: संघर्ष बस संघर्ष, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 128.
5. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 30.
6. विनय सिंह, संघर्ष से उकरी गंगा के पड़ाव, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 38.
7. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 33.
8. सुधा जितेंद्र, कविताओं का संघर्षरत यथार्थवादी हाशिया, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 147.
9. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 65.
10. आलोक सिंह (सं), मार्क्सवाद और रामविलास शर्मा, पृ- 85.
11. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, समकालीन हिन्दी कविता, पृ- 43.
12. विदुषी भारद्वाज, स्नेह वंचितों का आर्त्तनाद, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 88.
13. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 60.
14. इन्द्र सिंह ठाकुर, आठवें दशक की हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना, पृ- 44.
15. अशोक कुमार, संघर्षशील जीवन में सरलता की तलाश, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 52.
16. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 80.
17. विनय सिंह, संघर्ष से उकरी गंगा के पड़ाव, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 38.
18. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 126.
19. डॉ. हुकुम चंद राजपाल, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 34.

20. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, राग-विराग आलोचना खंड, पृ- 12.
21. विदुषी भारद्वाज, स्नेह वंचितों का आर्त्तनाद, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 88.
22. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 59.
23. धूमिल, कल सुनना मुझे, पृ- 33.
24. रमेश कुंतलमेघ, यह तो अजब किस्म-से-गज़ब का कवितागोई पत्रकार है, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 108.
25. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 43.
26. रवीन्द्र उपाध्याय, सातवें दशक की हिन्दी कविता और मार्क्सवादी विचारधारा, 'आवर्त', अंक 11-13, पृ- 72.
27. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 94.

पंचम अध्याय: मानवीय मूल्यों के विघटन के प्रति विद्रोह भावना

मूल्यों का व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व है। मूल्य मनुष्य के जीवन का आधार होते हैं। इस लिए इनका सम्बन्ध समाज के साथ होता है। मूल्यों का कोई स्वरूप नहीं होता। यह महसूस किए जाते हैं। नई पीढ़ी अपनी पुरानी पीढ़ी से इनको अर्जित करती है। लेकिन समय के साथ मूल्यों में भी परिवर्तन होता रहता है। इसीलिए मूल्यों को परिवर्तनशील कहा जाता है। 'आर. के. मुकर्जी की दृष्टि में जो कुछ भी इच्छित है, वही मूल्य है।'[1] अर्थात जिसे समाज अपनी इच्छा से ग्रहण करता है या जो चीज़ समाज के लिए उपयोगी है, वह मूल्य का रूप धारण कर लेती है। मूल्य सदैव व्यक्ति को विकास की तरफ लेकर जाते हैं। किसी सभ्यता के संस्कार, व्यवहार, विश्वास, संवेदना आदि मूल्यों के अंतर्गत आते हैं। मूल्य अदृश्य होते हैं, लेकिन मनुष्य के अंदर वास करते हैं। संस्कार मनुष्य अपने परिवार से ग्रहण करता है। लेकिन संस्कार, विश्वास की भावना और संवेदना उसको सिखाई नहीं जाती अपितु वह स्वयं इनको ग्रहण करता है और इनकी पालना करता है। पुराने समय में मानवीय मूल्यों को बहुत महत्व दिया जाता था। संस्कार और आचरण के आधार पर ही व्यक्ति को परखा जाता था। बच्चे अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करते थे और समाज के बनाए हुए नियमों का अनुसरण करते थे। लेकिन आधुनिक युग तक आते-आते मनुष्य अपनी सभ्यता, अपने संस्कार और अच्छा आचरण सब कुछ भूल गया है। शहरीकरण और उद्यौगीकरण ने मनुष्य को इतना उलझा दिया है कि उसे केवल अर्थ के साथ ही मतलब रह गया है। शहर की चकाचौंध ने मानवीय संवेदना को नष्ट कर दिया है। रिश्तों में अपनापन खत्म हो गया है और उसकी जगह अविश्वास ने ले ली है।

मानवीय मूल्यों में गिरावट आ चुकी है। इसका गहरा असर समाज पर पड़ा है। संयुक्त परिवार की जगह पर छोटे परिवार बन रहे हैं। पैसे की अंधी दौड़ ने मानवीय मूल्यों को खंडित कर दिया है। परिवार बिखर रहे हैं और बच्चों में संस्कारों की कमी आ रही है। आधुनिक युग इतनी तरक्की कर रहा है कि स्त्रियाँ भी घर से बाहर जाकर काम कर रही हैं। नारी चेतना के लिए तो यह अच्छी बात है लेकिन इस बात का बुरा असर परिवार के सम्बन्धों और बच्चों की परवरिश पर हो रहा है। यह बात मानी गई है कि एक माँ ही बच्चे की पहली शिक्षक होती है। माँ जो कुछ बच्चे को सिखाती है, उन्हीं बातों को बच्चा ग्रहण करता है, लेकिन आज की आधुनिक स्त्री के पास अपने बच्चों के लिए वक्त ही कहां है तो बच्चा संस्कार कहां से ग्रहण करेगा। इस लिए समाज में दिन-प्रति-दिन गिरावट आती जा रही है। आपसी विश्वास खत्म हो रहा है। हर कोई एक-दूसरे को शक की नज़र से देखता है। रिश्तों में जो मिठास थी, अब वो खत्म होती जा रही है। आशा तनेजा ने मानवीय मूल्यों में आ रही गिरावट का कारण आधुनिकता को माना है।

उनके अनुसार, "आधुनिकता ने मानव का बहुत कुछ अपने में ही लील लिया है। मानव मूल्यों से रहित हो वह रिश्तों की मर्यादा को भी भंग करने लगा है।"[2]

आधुनिक मानव में न देश के लिए प्रेम है और न ही अपने सामाजिक सम्बन्धों के लिए। प्राचीन समय में मनुष्य को दूसरों की सहायता करना सिखाया जाता था। व्यक्ति स्वयं यह सोचता था कि किस प्रकार वह दूसरों के काम आ सके। दूसरों की सहायता करने से आत्मा को शांति और खुशी मिलती है। लेकिन आधुनिक युग का मनुष्य स्वार्थी हो गया है जो केवल अपने हित के बारे में ही सोचता है। दूसरों के साथ उसको कोई लेना-देना नहीं है। आज अगर कोई हादसा हो जाए तो लोग केवल तमाशा देखने के लिए एकत्रित होते हैं। आदमी मरता मर जाए, इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता है। हर रोज पता नहीं कितनी खबरें सुनने को मिलती हैं, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि मानों मनुष्य में से मनुष्यता बिल्कुल समाप्त ही हो गई है। आधुनिक युग की चका-चौंध ने व्यक्ति को अंधा बना दिया है।

मनुष्य ने सच का रास्ता छोड़कर झूठ को ग्रहण कर लिया है। हर व्यक्ति झूठ का सहारा लेकर सफलता प्राप्त कर रहा है। आज कई रिश्ते भी झूठ की बुनियाद पर ही बनते हैं। लेकिन झूठ की बुनियाद पर टिका रिश्ता आखिर कितनी देर तक चलता है। सच का साथ कोई नहीं देता। विनय सिंह ने आधुनिक युग की मूल्यहीनता को दर्शाते हुए कहा है कि, "व्यक्ति सच का आवरण लेकर झूठ, फरेब की दुनिया में नहीं जी सकता। सच का साथ देने वाला कोई नहीं होता। सत्य सदैव अकेला होता है। झूठ का दिखावा इतना आडंबर युक्त होकर फैल गया है कि सच उसमें विलीन होता जाता है।"[3]

एक साहित्यकार समाज के प्रत्येक पहलू को उजागर करता है और आधुनिक युग में मानवीय मूल्यों में दिन-प्रति-दिन जो गिरावट आ रही है, यह एक गंभीर समस्या है। साहित्यकार भी इस समस्या से आहत हैं। सामाजिक सम्बन्ध टूटते जा रहे हैं। मानवीय मूल्यों के विघटन की समस्या को अनेक साहित्यकारों ने अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है, जिनमें से निराला, नागार्जुन, धूमिल, रघुवीर सहाय, कुमार विकल आदि मुख्य हैं। इन कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से समाज के हर पक्ष पर प्रकाश डाला है। इनकी तरह ही आधुनिक युग के कवि शुभदर्शन ने भी अपने काव्य में मानवीय मूल्यों में आ रही गिरावट को प्रस्तुत किया है। मानव को अन्य प्राणियों से भिन्न इस लिए माना जाता है क्योंकि उसमें मानवता है। लेकिन आज यह मानवता कहीं देखने को नहीं मिलती है। शुभदर्शन ने अपनी कविता को माध्यम बनाकर मानवीय संवेदनाओं में आ रही हीनता के प्रति अपने विद्रोह को प्रकट करने का प्रयास किया है।

शुभदर्शन ने बताया है कि आज सारे आदर्श बनावटी हैं। कोई किसी के साथ वफादारी नहीं निभाता है। सबके मन में अविश्वास की भावना है। किसी के लिए दया और प्यार नहीं है। गरीब व्यक्ति का कोई साथ नहीं देता है। लोगों का मानसिक स्तर बहुत नीचे गिर चुका है। स्त्री के प्रति किसी पुरुष के मन में सम्मान नहीं है। आज के नौजवान एक लड़की को बुरी

नज़र से देखते हैं। अगर कोई किसी के साथ बदसलूकी कर रहा है तो कोई किसी के लिए आवाज़ नहीं उठाता है। मनुष्य में मानवीय संवेदनाएँ नष्ट हो चुकी हैं। शुभदर्शन के काव्य के बारे में डेविड तेजा ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि, "अंधी निष्ठा एवं स्वामिभक्ति के प्रति विद्रोह एवं मूल्यहीन जीवन के प्रति वितृष्णा और बनावटी आदर्शवाद से मिले धोखे के प्रति कवि आहत मानसिकता को प्रस्तुत कर पाया है।"[4] शुभदर्शन ने अपने काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में आधुनिक युग में मनुष्य में जो अविश्वास, संस्कारविहीनता और संवेदनहीनता आ गई है, उसको अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

संस्कारविहीनता के प्रति विद्रोह भावना :

मनुष्य के जीवन में संस्कारों का बहुत महत्व है। भारतीय समाज में संस्कारों को सबसे अहम माना जाता है। यह मान्यता है कि संस्कारों से ही व्यक्ति के चरित्र का पता चलता है। एक बच्चा अपने परिवार से ही संस्कार ग्रहण करता है। कहते हैं कि कुम्हार मिट्टी को जैसा आकार देगा, वैसा ही घड़ा बनता है। ठीक उसी प्रकार माँ-बाप बच्चे को जैसे संस्कार देंगे, बच्चा उन्हीं संस्कारों को ग्रहण करेगा। लेकिन आधुनिक युग में माँ-बाप बच्चे को अच्छे संस्कार देने के लिए जागरूक नहीं हैं। वह तो अपने ही कार्यों में व्यस्त रहते हैं। वर्तमान युवा पीढ़ी अपने संस्कारों को भूलकर पतन की तरफ बढ़ रही है। संस्कारों से चरित्र का निर्माण होता है। संस्कारों से ही भविष्य उज्जवल होता है, लेकिन आज की युवा पीढ़ी नशे का सेवन, माता-पिता को वृद्ध आश्रम भेजना, जरूरत से अधिक धन अर्जित करने जैसी बुराईयों की तरफ बढ़ रही है। युवा पीढ़ी उच्च शिक्षा ग्रहण कर रही है और अच्छे पद प्राप्त कर रही है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे अपने मूलभूत संस्कारों को ही भूल जाएँ। शुभदर्शन ने युवा पीढ़ी की इसी संस्कारविहीनता के प्रति अपनी विद्रोह भावना को प्रस्तुत किया है।

सुधा जितेंद्र ने शुभदर्शन के काव्य पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि, "आज के युग में हर चीज़ का मशीनीकरण हो गया है। न अहसास, न भाव, न भंगिमा न संस्कार, न मूल्य, न संस्कृति। आज की पीढ़ी हर चीज़ के लिए सॉफ्टवेयर चाहती है, ताकि उसे फिट कर आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सके, परंतु कवि आज के समाज की बहुत बड़ी समस्या की ओर गहराई से इशारा कर रहा है और वह समस्या है भावी पीढ़ी में संस्कारहीनता, मूल्यहीनता की।"[5] आज की युवा पीढ़ी पर सूचना प्रौद्योगिकी का गहरा प्रभाव पड़ा है। संस्कारों का क्या और कितना महत्व है, वे नहीं जानते। हर चीज़ के लिए वे सॉफ्टवेयर चाहते हैं जो उनके कार्य में सहायक सिद्ध हो। अपनी पुरानी मान्यताओं और मूल्यों की उनको कोई परवाह

नहीं है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'संस्कार का सॉफ्टवेयर' में युवा पीढ़ी की संस्कारविहीनता को बखूबी अभिव्यक्त किया है-

"आज कंप्यूटर युग में,
बनाते हैं---बच्चे,
नए-नए सॉफ्टवेयर,
संस्कार कौन-सा सॉफ्टवेयर है,
पुछते हैं वे।"[6]

आधुनिक युग अगर अच्छा परिवर्तन लेकर आया है तो इसके कुछ बुरे परिणाम भी सामने आए हैं। आधुनिक युग में मनुष्य का रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार और मानसिकता में परिवर्तन आया है, लेकिन इसके साथ ही नई पीढ़ी अपने संस्कारों को भूलती जा रही है। अपने से बड़ों का आदर करना और छोटों से प्यार करना, यह सब आज फजूल की बातें समझी जाती हैं। वर्तमान समय में युवा पीढ़ी हर चीज़ को एक सॉफ्टवेयर समझती है और जैसे चाहा उसका वैसे ही प्रयोग करना चाहती है। लेकिन वे यह बात भूल गए हैं कि संस्कार कोई सॉफ्टवेयर नहीं बल्कि उनकी संस्कृति है, जिसके बिना उनका जीवन निरर्थक है।

वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों का स्तर नीचे गिर चुका है। सब कुछ झूठ लगता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को धोखा दे रहा है। किसी को किसी से कोई मतलब नहीं है। प्यार जैसी पवित्र भावना का स्थान अब नफरत ने ले लिया है। धूमिल ने मानवीय मूल्यों के विघटन के प्रति अपने प्रतिरोध को अपनी कविता के माध्यम से उजागर किया है-

"लगता है कि हर चीज़ झूठ है,
आदमी, देश, आज़ादी और प्यार,
सिर्फ नफरत सही है।"[7]

आधुनिक युग ने संस्कारों और मानवीय भावनाओं को नष्ट कर दिया है। एक माता-पिता का यह काम होता है कि वह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दें और उनको अपनी संस्कृति से अवगत कराएं, लेकिन वर्तमान समय में माता-पिता अपने कार्यों में इतने व्यस्त हैं कि उनके पास अपने बच्चों के लिए वक्त ही नहीं है। इसका मुख्य कारण वर्तमान समय में धन की लालसा का बढ़ना है। हर व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधायों का लाभ उठाना चाहता है। जिसके लिए स्त्री-पुरुष रात और दिन पैसा कमाने की दौड़ में लगे रहते हैं। इस प्रकार वह स्वयं भी संस्कारों से वंचित रहते हैं और अपने बच्चों को भी संस्कार नहीं दे पाते। इसके कारण आधुनिक युवा पीढ़ी को संस्कारों की महत्ता का ज्ञान ही नहीं होता है।

'शुभदर्शन ने अपनी कविता 'शहर की ओर गौरैया' में संस्कारहीनता को दर्शाने का प्रयास किया है।'[8] इस कविता में शुभदर्शन ने यह बताया है कि आधुनिक युग में शहरीकरण हो जाने के कारण व्यक्ति अपने संस्कारों को भूल कर दूसरों को नीचा दिखाने में लगा हुआ है। वह सब कुछ भूल गया है, अपने संस्कार भी और अपने वादे और दावे भी। उसको केवल एक ही बात याद है कि उसे दूसरे लोगों को पीछे छोड़ना है और स्वयं आगे बढ़ना है।

आज वर्तमान समय में संस्कार मनुष्य के हाथ का खिलौना बन कर रह गए हैं। पुराने समय में संस्कारों को सर्वोच्च माना जाता था। माता-पिता अपने बच्चों का भविष्य सफल बनाने के लिए उनको अच्छे संस्कार देते थे। लेकिन आज समय बदल चुका है। माता-पिता का अपने बच्चों के संस्कारों पर कोई ध्यान नहीं जाता है क्योंकि आज संयुक्त परिवार नहीं है, जिसमें घर के बुजुर्ग भी होते थे। हर कोई भाग रहा है। किसी के पास किसी के लिए वक्त नहीं है। अनीता नरेंद्र के शब्दों में, "वर्तमान भागम-दौड़ के युग में संस्कार, व्यवहार व संवेदनाएँ सभी कुछ मानों खेल बन गया है। आज हमारे जीवन में अहसास के पल कहीं नहीं, जो रिश्तों की मजबूती का आधार कहे जाते हैं।"[9]

कवि शुभदर्शन ने आधुनिक युग में युवा पीढ़ी जो अपने संस्कार भूलती जा रही है, उसको अपनी कविता के माध्यम से जागृत करने का प्रयास किया है। हम चाहे जितने भी आधुनिक क्यों न हो जाएँ, लेकिन हमें अपने संस्कार कभी नहीं भूलने चाहिए। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'संवेदनाहीन' में उस व्यक्ति के प्रति अपना विद्रोह व्यक्त किया है जो आधुनिक युग की भागम-दौड़ में फँसकर अपने संस्कारों को भूल गया है और अपनी निराशा को व्यक्त किया है-

"भागम-दौड़ के युग में,
खिलौना बने संस्कार,
चलती-फिरती मूरतें,
क्या फर्क है--- दोनों में।"[10]

कवि शुभदर्शन ने आधुनिक मानव की प्रवृति को प्रकट किया है। इसके लिए संस्कार कुछ महत्व नहीं रखते हैं। संस्कार किस चिड़िया का नाम है, इसके बारे में वर्तमान युवा पीढ़ी को कुछ पता नहीं है। समाज में जो वृद्ध लोग बचे हैं केवल उनको ही अपने संस्कारों का ध्यान और मान है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि एक कवि की नज़रों से यह बातें कभी छिप नहीं सकती हैं। एक कवि ऐसे समाज का निर्माण करना चाहता है जो आधुनिक तो हो लेकिन अपने संस्कारों और अपनी सभ्यता को भी अपने साथ लेकर चले। प्राचीनता और आधुनिकता दोनों

का होना अति आवश्यक होता है। शुभदर्शन भी इसी कोटि के कवि हैं, जो युवा पीढ़ी में फैल रही संस्कारहीनता के प्रति अपनी निराशा व्यक्त करते हैं। शुभदर्शन आधुनिक युग में फैल रही संस्कारहीनता को प्रकट करने में सफल सिद्ध हुए हैं।

अविश्वास के प्रति विद्रोह भावना :

किसी भी रिश्ते में सबसे अहम बात जो होती है वह है- विश्वास। बिना विश्वास के कोई भी रिश्ता ज्यादा दिनों तक टिक नहीं सकता है। विश्वास एक ऐसी कड़ी है जो रिश्तों को हमेशा जोड़ कर रखती है। विश्वास की भावना मानवीय मूल्यों के अंतर्गत आती है। इस लिए मनुष्य जीवन में इसका विशेष महत्व है, लेकिन आधुनिक समय में विश्वास की जगह अविश्वास ने ले ली है। कोई किसी पर विश्वास नहीं करता है। सभी एक-दूसरे को शक की नज़र से देखते हैं। पुराने समय में मनुष्य में जो आपसी प्रेम और विश्वास की भावना थी, वो अब कहीं भी दिखाई नहीं देती है। रिश्तों की जो विश्वास की बुनियाद थी, वो खोखली हो चुकी है। साहित्यकारों ने इसके प्रति अपनी निराशा को व्यक्त करने के लिए कलम का सहारा लिया है।

आधुनिक युग में मनुष्य अपने गुणों को खो रहा है। जो मानवता, प्यार, सहानुभूति, दया, विश्वास आदि गुण मनुष्य में पाए जाते थे, अब धीरे-धीरे नष्ट हो रहे हैं। शुभदर्शन ऐसे कवि हैं, जो मानवता में अधिक विश्वास रखते हैं, लेकिन आधुनिक युग में मनुष्य अपने अच्छे गुणों को छोड़कर कुमार्ग पर चल पड़ा है। इस कुमार्ग पर अच्छाई का नामों-निशान मिट चुका है। मनुष्य मनुष्य का दुश्मन बन चुका है। मनुष्य में यह जो अविश्वास की भावना आ गई है, उसके प्रति कवि शुभदर्शन ने अपना प्रतिरोध व्यक्त किया है। शुभदर्शन का मन मनुष्य में बढ़ रही अविश्वास की भावना के कारण आहत हुआ है। शुभदर्शन के इसी आहत मन के ऊपर विनय सिंह ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि, "आस्थाओं के डिग जाने से कवि बहुत विचलित है। कवि का मानना है कि आस्था और विश्वास सामाजिक रिश्तों की धुरी है। अगर ये ही खत्म हो जाएँ तो मानव की आस्थाएँ खत्म हो जाती हैं और स्वयं में भी बहुत कुछ खत्म हो जाता है।"[11]

शुभदर्शन की यह धारणा है कि व्यक्ति को अपना विश्वास नहीं खोना चाहिए। विश्वास पर ही दुनिया कायम है और सामाजिक सम्बन्धों की मजबूती के लिए आपसी विश्वास का होना अति-आवश्यक है। लेकिन आज वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति शंका जनक रहता है। आज का युग ही ऐसा है कि किसी पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता है। विश्वास के नाम पर धोखा ही मिलता है। अगर राजनीतिक पार्टियों की बात करें तो सर्वप्रथम यही जनता का विश्वास तोड़ती हैं। जनता को भ्रमित करती हैं और झूठे वादे कर जाता को धोखा देती हैं।

शुभदर्शन ने अपनी कविता 'अभिशप्त अभिमन्यु' में इसी अविश्वास की भावना को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।"[12] इस कविता में कवि शुभदर्शन ने राजनीतिक पार्टियों के छल-छदम को अपनी कलम के मध्यम से जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है। राजनीतिज्ञ स्वयं साज़िश रचते हैं और आम व्यक्ति को कुछ गलत करने के लिए मजबूर कर देते हैं। साधारण जनता के विश्वास को ठेस पहुंचाते हैं। पहले जनता को आश्वासन देते हैं, लेकिन अपना काम हो जाने के बाद उनको धोखा देकर एक किनारे पर हो जाते हैं। शुभदर्शन ने राजनीतिज्ञों के इसी धोखे के प्रति अपने विद्रोह को दर्शाया है।

शुभदर्शन ने अपने काव्य में अविश्वास के अनेक रूपों को व्यक्त किया है। राजनीतिक पार्टियों के अविश्वास के अतिरिक्त पूँजीपति वर्ग के अविश्वास को भी उजागर किया है। माना गया है कि जब व्यक्ति के पास बहुत अधिक धन आ जाता है तो उसमें अहंकार घर कर जाता है। शुभदर्शन ने अपने काव्य में इस अविश्वास की भावना को व्यक्त करने के लिए गौरैया के प्रतीक का प्रयोग किया है। गौरैया आधुनिक युग के मनुष्य का प्रतीक है जो आधुनिकता को ग्रहण करता-करता अपनी मानवता को भूल गया है। जब मनुष्य रूपी गौरैया के पास अपार धन आ जाता है तो वह अपना पुराना सब भूल जाती है। लोगों को फसाने और उनको धोखा देने में वह गौरव महसूस करती है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'सैय्याद गौरैया' में मनुष्य की इसी मानसिकता को उजागर करती है-

"अब किसी पर विश्वास नहीं करती,
बुन लिया है—अपने गिर्द,
अविश्वास का ऐसा जंगल,
जहां नहीं होता,
किसी फरियाद का असर।"[13]

मनुष्य रूपी गौरैया पूँजीपति होने के बाद किसी पर विश्वास नहीं करती है। धन ने उसकी सोच को संकुचित कर दिया है। जिसके कारण उसमें अहंकार आ गया है और वह अब किसी से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहती। सबके विश्वास को तोड़ती है और किसी की कोई बात नहीं सुनती। उसके मन में किसी के लिए कोई दया भावना नहीं रही और वह किसी की कोई फरियाद नहीं सुनती है। बदलते परिवेश ने मनुष्य को पूरी तरह से बदल दिया है। जीवन के पैमाने ही बदल गए हैं। प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे को संदिग्ध दृष्टि से देखता है। शुभदर्शन ने मनुष्य पर हावी हो रही इसी आधुनिकता को व्यक्त करने का प्रयास किया है। पुराने समय में मनुष्य का जीवन विश्वास पर ही टिका होता था। जब कोई किसी व्यक्ति पर भरोसा करता था तो सामने वाला व्यक्ति उस व्यक्ति के विश्वास को बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास करता था। पुराने समय में किसी से विश्वासघात करना, हत्या करने के समान माना जाता था। लेकिन आधुनिक युग ने मनुष्य की इस भावना कोई नष्ट कर दिया है। पुराने समय में परिवारों में कुछ भी गुप्त

नहीं होता था। छोटी से लेकर बड़ी तक सभी बातें परिवार के सभी सदस्यों को पता होती थीं। आज वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों में गिरावट आने के कारण सभी अविश्वास की भावना से ग्रस्त हो चुके हैं। इसी के कारण आज आधुनिक समय में संयुक्त परिवार की परंपरा खत्म हो चुकी है।

शुभदर्शन का यह मानना है कि अनेकों प्रवचनों, साधनाओं, तपों और अनेक यत्नों के बाद भी मनुष्य में जो अविश्वास की भावना है वो खत्म नहीं हुई है। व्यक्ति ने आज बहुत तरक्की कर ली है, लेकिन व्यक्ति की तरक्की ने उसके सामाजिक सम्बन्धों को छिन-भिन्न कर दिया है। बिन्दु जी महाराज ने आधुनिक युग की विश्वास की भावना पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि, "तमाम त्याग और बलिदानों के बावजूद, तमाम कथा प्रवचनों और सज्जन-दुर्जनों की संगतियों के बावजूद हम फिर भी विश्वास की नींव नहीं डाल सके। हम सदैव अविश्वास में ही जीते हैं और जिएंगे। बस यही अविश्वास ही तो संघर्ष को जन्म देता है।"[14]

आधुनिक युग का मनुष्य धोखे, फरेब, अविश्वास, झूठ के जाल में अपने आप को फँसा हुआ पाता है। इस जाल से बाहर निकलना उसको असंभव सा लगता है। शुभदर्शन ने 'अभिशप्त अभिमन्यु' कविता में व्यक्ति को अभिमन्यु सा मजबूर दर्शाया है। जिस प्रकार कौरवों द्वारा रचे हुए चक्रव्यूह में अभिमन्यु फँसा हुआ है, उसी प्रकार वर्तमान समय में मनुष्य झूठ, फरेब, धोखा, रिश्वतख़ोरी, विश्वासघात जैसी बुरी चीजों में फँसा हुआ है, जिसने मनुष्य में से मनुष्यता को खत्म कर दिया है। शुभदर्शन ने कविता में मनुष्य की बेबसी को प्रकट किया है-

"फरेब, झूठ, अविश्वास,
धोखे का चक्रव्यूह,
इससे निकलने का कर रहा हूँ,
--- संघर्ष,
अभिमन्यु सा अभिशप्त हूँ।"[15]

वर्तमान युग का मनुष्य आधुनिकता के इस कुचक्र से बाहर निकलने के लिए निरंतर संघर्ष कर रहा है, लेकिन जितना वह इससे बाहर निकलने का प्रयास कर रहा है, उतना ही उस चक्र के अंदर फँसता जा रहा है। आधुनिकता मनुष्य को अपने माया-जाल में फँसाती जा रही है और मनुष्य उसमें फँसता जा रहा है। आधुनिक युग का मनुष्य ऐसा जान पड़ता है मानों उसकी बुद्धि क्षीण हो गई हो। वर्तमान समय में मनुष्य की मानसिकता संकुचित हो गई है, जिसके कारण वह किसी पर विश्वास नहीं करता।

शुभदर्शन ने अपने काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में मनुष्य की अविश्वास की भावना को व्यक्त किया है। शुभदर्शन ने इस अविश्वास की भावना को दो रूपों में अभिव्यक्त किया है।

इस में से पहली तो यह है की वर्तमान समय में मनुष्य दूसरे व्यक्ति पर विश्वास नहीं करता है और प्रत्येक व्यक्ति को शक की नज़र से देखता है। शुभदर्शन का दूसरा इशारा वर्तमान समय की राजनीतिक व्यवस्था और पूँजीपति वर्ग की तरफ है। वर्तमान राजनीतिज्ञ आम जनता से चुनाव के दिनों में बहुत सारे वादे करके जाते हैं और जनता को झूठे आश्वासन देते हैं, लेकिन जब उनका स्वार्थ पूरा हो जाता है तो जनता से किए हुए वादे पूरे नहीं करते अर्थात जनता को धोखा देते हैं। जिसके कारण जनता के साथ वह विश्वासघात करते हैं। इसी प्रकार ही पूँजीपति वर्ग भी मजदूर वर्ग के साथ करता है। शुभदर्शन जी का कहना है कि जब तक मनुष्य के अंदर अविश्वास की भावना रहेगी, तब तक उसको संघर्ष करना पड़ेगा। इस लिए शुभदर्शन जी ने मनुष्य में पाई जाने वाली अविश्वास की प्रवृति के प्रति विद्रोह को अभिव्यक्त किया है।

संवेदनहीनता के प्रति विद्रोह भावना :

आधुनिकीकरण के आने के साथ-साथ मशीनों और यंत्रों के बढ़ते प्रयोग ने आपसी सम्बन्धों के महत्व को कम कर दिया है। आजादी के बाद भारत में पूंजीवादी सभ्यता के प्रसार के साथ-साथ महानगरों का विकास भी हुआ। इन महानगरों में संसाधनों का अभाव था और आपसी प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ गई थी। इस प्रतिस्पर्धा की बजह से ही इन्सानियत के रिश्तों का विघटन तो हुआ ही, आत्मीय सम्बन्धों में भी गरमाहट नहीं रही। आधुनिक युग में लोगों की भीड़ के बावजूद भी इन्सान अकेलेपन से घिरा हुआ है। भीड़ में मौजूद अनेक चेहरों में से वह किसी के साथ अपनी आत्मीयता का अनुभव नहीं करता है। डॉ. अविनाश शर्मा के शब्दों में, "उत्तर आधुनिक काल में मानवीय सम्बन्धों की डोर टूटती नज़र आ रही है। अब इन सम्बन्धों में वह उष्णता नहीं रही, रहा है केवल स्वार्थ, इस पनप रही बाजारी संस्कृति में विक्रेता और खरीददार के सम्बन्ध पनप रहे हैं।"[16]

साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से आधुनिक युग में रिश्तों के बनावटीपन और संवेदनहीनता को प्रस्तुत किया है। सुधा जितेंद्र ने आधुनिक युग की विसंगतियों मूल्यहीनता, अविश्वास, संस्कारविहीनता और संवेदनहीनता पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि, "ग्लोबलाइज़ेशन के युग में सूचना प्रौद्योगिकी की आँधी से आज हमारे सांस्कृतिक मूल्य छिन्न-भिन्न हो गए हैं। आज समाज मूल्यहीनता की स्थिति में है। मूल्य संक्रमण के इस दौर में सभी रिश्ते-नाते, सभी एहसास मर चुके हैं।"[17] आधुनिक युग की भाग-दौड़ में व्यक्ति बहुत व्यस्त हो चुका है। उसके पास किसी के लिए भी समय नहीं है। यहाँ तक के मनुष्य के पास अपने लिए भी समय नहीं है। साहित्यकारों ने महानगरों की विषमताओं को प्रकट किया है। यह महानगरों का ही असर है कि मनुष्य संवेदनहीन हो गया है। जिस मनुष्य के पास अपने लिए समय नहीं है, उससे अपनत्व की उम्मीद कैसे की जा सकती है।

शुभदर्शन आधुनिक युग के समकालीन कवि हैं। शुभदर्शन ने अपने काव्य के द्वारा आधुनिक मानव की संवेदनहीनता को अभिव्यक्त किया है। कवि ने अपने काव्य में शहरी जीवन की विषमताओं को उजागर करने का प्रयास किया है। शहर में आकर व्यक्ति पैसा कमाने की अंधी दौड़ में लग जाता है, जिसके कारण सम्बन्धों में बिखराव आना शुरू हो जाता है। शहरी जीवन ने रिश्तों में जो अपनापन था, उसको नष्ट कर दिया है। शुभदर्शन ने आधुनिक युग में अहसासहीन होते जा रहे मनुष्य के प्रति विद्रोह व्यक्त किया है। कवि ने मानवीय सम्बन्धों की इस अहसासहीनता के प्रति निराशा व्यक्त की है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'अहसास से बगावत' में मानवीय संवेदनहीनता को बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है-

"यहाँ उलझाव है,
आंटी और अंकल ने,
खत्म कर दिए हैं वे सब रिश्ते।"[18]

गाँव में अनेक प्रकार के रिश्ते पाए जाते हैं। लेकिन आधुनिक दौर में शहरीकरण हो जाने के कारण इन रिश्तों के मायने ही बदल गए हैं। गाँव में जो रिश्तों का अहसास था, वह नष्ट हो रहा है। समाज में जितने रिश्ते थे, उनके बारे में नई पीढ़ी को कुछ पता ही नहीं है। आंटी और अंकल बेगानेपन का अहसास कराते हैं। अनीता नरेंद्र के शब्दों में, "आधुनिकीकरण ने रिश्तों के मायने बदल दिए हैं, सब कुछ संवेदनाहीन और अहसासहीन हो गया है। शहर में आंटी और अंकल के सम्बोधन ने गाँव के रिश्ते खत्म कर दिए हैं।"[19]

पुराने समय में गाँव का जीवन शहर के जीवन से अच्छा था। गाँव में सभी लोग मिल-जुल कर रहते थे। किसी के मन में कोई द्वेष नहीं। सारा गाँव एक परिवार की तरह होता था। भावनाएँ स्वच्छ थीं। लेकिन आधुनिक समय में महानगरों की स्थापना ने ग्रामीण जीवन को भी दूषित कर दिया है। गाँव के लोग भी शहर के दूषित वातावरण से बच नहीं पाए, लेकिन शहर के बनावटी जीवन ने मनुष्य की संवेदनाओं को मानों नष्ट कर दिया है। शहर में मनुष्य अजनबीपन का शिकार हो गया है। उसको अपने आस-पास चारों तरफ भीड़ दिखाई देती है, लेकिन फिर भी उसको ऐसा लगता है कि वो अकेला है। आधुनिक युग में व्यक्ति ऐसा हो गया है, जैसे उसको दूसरे व्यक्ति से कुछ लेना-देना ही न हो। किसी के लिए कोई सद्भावना नहीं है। अगर किसी व्यक्ति के सामने कोई तड़प भी रहा है तो उसको कोई फर्क ही नहीं पड़ता है, कोई मरे चाहे जीए।

मनुष्य में जो प्रेम और त्याग की भावनाएँ थी, आधुनिक समय में वो लुप्त हो चुकी हैं। आधुनिक दौर के मनुष्य को अगर किसी की शोक यात्रा में जाना पड़ जाए, तो वह इस बात

से दुखी नहीं होता कि उसके किसी प्रिय की मृत्यु हो गई है अपितु इस बात की चिंता होती है कि अपने काम से समय कैसे निकाला जाए। 'कमलेश्वर ने अपनी कहानी 'दिल्ली में एक मौत' में आधुनिक युग के बनावटीपन और संवेदनहीनता को स्पष्टता के साथ अभिव्यक्त किया है।'[20] कहानी में अखबार में एक सेठ की मौत की खबर पढ़कर पढ़ने वाला परेशान और चिंतित हो जाता है कि कहीं दिसंबर महीने की ठंडी में उसे शव यात्रा में शामिल होने के लिए न बुला लिया जाए। शव यात्रा में जितने भी लोग हैं किसी में भी कोई करुणा का भाव नहीं है और सभी लोग घर से पूरी तरह से तैयार होकर आए हैं कि यात्रा के बाद सीधे अपने-अपने काम पर चले जाएंगे। इस प्रकार कमलेश्वर ने आधुनिक युग की संवेदनहीनता को चित्रित किया है।

कवि शुभदर्शन ने भी अपने काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष में' वर्तमान युग की इसी संवेदनहीनता और दिखावे को प्रकट किया है। कवि का मन आधुनिक मनुष्य को देखकर उदास होता है। कवि को गाँव का वातावरण अच्छा लगता था, यहाँ भोले-भाले लोग बस्ते थे। लेकिन गाँव भी अब आधुनिकता की चपेट में आ चुके हैं। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ गई हैं, उसकी लालसा बढ़ गई है, पैसे की जरूरत बढ़ गई है और इसी की पूर्ति में उसने अपना जीवन झोंक दिया है। शुभदर्शन जी ने बताया है कि मनुष्य के पास जितना है, वह उससे और अधिक पाना चाहता है। इसी लिए वह दिन-रात काम करता रहता है। इसी लालसा ने मनुष्य को संवेदनहीन बना दिया है। शुभदर्शन ने अपनी कविता 'वसीयत से मनफी' में एक पिता के द्वारा अपने पुत्र को संदेश दिया है कि-

"पार करनी है तुम्हें कदम-कदम पर खड़ी,
छल-कपट की दीवारें,
आँखों में प्यार, हाथों में कटार लिए,
बेशर्मी से घूम रहे, पत्थर दिलों की बस्ती।"[21]

इस कविता में शुभदर्शन ने एक पिता के द्वारा अपने पुत्र को जो संदेश देने का चित्र प्रस्तुत किया है वो अत्यंत प्रभावशाली है। एक पिता अपने पुत्र को यह संदेश दे रहा है कि आधुनिक युग का जो मनुष्य है वो पत्थर दिल है। अर्थात वर्तमान समय का इन्सान बेरहम है। उसमें भावना नाम की कोई चीज़ नहीं है। इस लिए पिता अपने पुत्र को यह संदेश देता है कि इस पत्थर दिलों की बस्ती में उसे संघर्षमयी जीवन व्यतीत करना होगा। क्योंकि आज का मनुष्य बाहर से जितना अच्छा है, भीतर से उतना ही खतरनाक है। जीवन बहुत बड़ा है। इस लिए उसको संघर्ष करना पड़ेगा। शुभदर्शन ने इस कविता के माध्यम से यह बताया है कि आधुनिक मनुष्य संवेदना से रहित है। आपसी प्यार कहीं भी दिखाई नहीं देता है। मनुष्य एक तरह से

मशीन बनाकर रह गया है, जिसमें कोई भावना नहीं होती है। मनुष्य एक-दूसरे को ठग रहे हैं। भागम-दौड़ के युग में मनुष्य अपने सभी रिश्तों को भूल गया है।

संजय चौहान ने आधुनिक युग की विषमताओं को उजागर करते हुए कहा है, "निश्चित रूप से आधुनिक जीवन शैली ने व्यक्ति को संवेदनाहीन बना दिया है। जीवन के भाग-दौड़ में वह मात्र मशीन बनकर रह गया है। यहाँ तक कि एक छत के नीचे रहकर भी आपसी संवाद का अभाव झलकता है। संवेदनाहीन होने के कारण जीवन की जटिलताएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। परिणाम स्वरूप व्यक्ति लगातार कुंठा एवं तनावग्रस्त जीवन जीने के लिए बाध्य हो रहा है।"[22] आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता ने व्यक्ति को संवेदना-शून्य बना दिया है। ऐसे में मनुष्य मात्र कठपुतली बन कर रह गया है। आधुनिक मनुष्य अपने कामों में इतना व्यस्त है कि उसको अपने आस-पास की भी कोई खबर नहीं होती। यहाँ तक कि एक महानगर में रहने वाले व्यक्ति को अपने पड़ोसियों के नाम तक नहीं पता होते हैं। कोई किसी से बात नहीं करता है। किसी के साथ प्यार नहीं, आत्मीयता नहीं, दया भावना नहीं। कोई किसी के साथ अपने दुख-सुख नहीं बांटता। 'आधुनिक युग के जीवन की इसी विषमता को ज्ञान रंजन ने अपनी कहानी 'फेंस के इधर और उधर' में उजागर किया है।'[23]

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि शुभदर्शन ने अपने काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में मानवीय मूल्यों के विघटन को बहुत ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। आधुनिक युग में मनुष्य ने अगर कुछ पाया तो बहुत कुछ खो भी दिया है। मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधा की सभी वस्तुएँ तो एकत्रित कर ली हैं, लेकिन अपनी वास्तविक पहचान जो उसकी संस्कृति और संस्कारों से थी, उसको खो दिया है। वर्तमान समय का मनुष्य संवेदनाहीन बन चुका है, जिसके हृदय में किसी के लिए सहानुभूति, दया, प्रेम भावना नहीं है। कवि शुभदर्शन ने मानवीय मूल्यों में जो गिरावट आ रही है, उसका मुख्य कारण धन की लालसा और अपने आप को आधुनिक कहलाने की ललक को माना है। मनुष्य अपने सात्विक गुणों को भूलता जा रहा है। वर्तमान समय का मनुष्य आधुनिकता का चोला पहनकर अपने मूल्यों को खोता जा रहा है। शुभदर्शन ने मानवीय मूल्यों के इसी विघटित रूप को प्रस्तुत करने के लिए अपनी कलम का प्रभावशाली प्रयोग किया है।

संदर्भ सूची

1. R. K. Mukerjee, social structure of value, p- 21.
2. आशा तनेजा, ममत्व और बेगानेपन की संवेदनाओं का दस्तावेज़, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 96.
3. विनय सिंह, संघर्ष से उकरी गंगा के पड़ाव, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 44.
4. डेविड तेजा, निश्छल भावभिव्यक्ति का रचनात्मक धरातल, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 80.
5. सुधा जितेंद्र, कविताओं का संघर्षरत यथार्थवादी हाशिया, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 144.
6. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 55.
7. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृ- 87-88.
8. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 67.
9. अनीता नरेंद्र, संघर्ष की समय सापेक्ष अभिव्यक्ति, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 40.
10. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 86-87.
11. विनय सिंह, संघर्ष से उकरी गंगा के पड़ाव, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 42.
12. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 26.
13. वहीं, पृ- 78.
14. बिन्दु जी महाराज 'बिन्दु', पाठक के ही जीवन का संघर्ष, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 131.
15. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 27.
16. अविनाश शर्मा, साहित्यावलोकन: सृजन एवं शोध पत्रिका, अंक-5, पृ- 60.
17. सुधा जितेंद्र, कविताओं का संघर्षरत यथार्थवादी हाशिया, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 143.

18. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 33.
19. अनीता नरेंद्र, संघर्ष की समय सापेक्ष अभिव्यक्ति, संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन, पृ- 32.
20. www.hindisamay.com/content Detail.aspx? id=363& pageno=1.
21. शुभदर्शन, संघर्ष बस संघर्ष, पृ- 38.
22. संजय चौहान, मानवीय संवेदनाओं को स्वर देती कविताएं, समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन, पृ- 155.
23. www.hindisamay.com/content Detail.aspx? id=1501 & pageno=1.

उपसंहार

विद्रोह मनुष्य की आंतरिक प्रवृति है। मनुष्य समाज का अहम हिस्सा है और समाज से मनुष्य का गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक समाज में रहता है। समाज में रहते हुए मनुष्य को अगर कोई बात अच्छी नहीं लगती तो व्यक्ति के मन में उस बात के लिए विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है। मनुष्य को जो व्यवस्था अपने अधिकारों में रुकावट बनती लगती है तो वह उसको नष्ट कर देना चाहता है। इस लिए वह संघर्ष करता है। मनुष्य का जीवन संघर्षमयी रहा है। उसको प्रत्येक क्षेत्र में संघर्ष करना पड़ता है। बिना संघर्ष किए मनुष्य अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकता है। संघर्ष मनुष्य के जीवन का एक हिस्सा है। अगर मनुष्य को इस संसार में जीवित रहना और दुनिया के साथ कदम से कदम मिलकर चलना है तो उसको संघर्ष करना पड़ेगा। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में बिना संघर्ष किए आम से खास नहीं बन सकता है। शुभदर्शन ने मनुष्य के इसी संघर्षमयी जीवन को अपनी लेखनी का रूप दिया है।

शुभदर्शन ने अपने काव्य में समाज के प्रत्येक पहलू को उजागर किया है। शुभदर्शन को आधुनिक युग का 'निराला' कहा जाता है और इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है। जो कार्य निराला ने प्रारम्भ किया था, उसी कार्य को कवि शुभदर्शन ने आगे बढ़ाया है। साहित्य में अनेक साहित्यकार हुए हैं, जिन्होने समाज में व्याप्त समस्याओं को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया है और उन समस्याओं के प्रति अपनी विद्रोह की भावना को व्यक्त किया है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में भक्ति काल से ही विद्रोही कवि हुए हैं, जिनमें से संत कबीर, गुरु नानक, गुरु रविदास मुख्य हैं। प्रत्येक युग में विद्रोही साहित्य पाया गया है। आधुनिक युग में शुभदर्शन ने इस परंपरा को जारी रखा है। शुभदर्शन ने अपने जीवन में जो देखा है, जो भोगा है, उसी का वास्तविक रूप अपने काव्य के द्वारा प्रस्तुत किया है। शुभदर्शन का मानना है कि व्यक्ति को निरंतर संघर्ष करते रहना चाहिए और कभी हिम्मत नहीं छोड़नी चाहिए। संघर्ष तो मनुष्य के जीवन की एक सच्चाई है।

शुभदर्शन ने मनुष्य के जीवन की त्रासदी को प्रकट किया है। समाज में व्याप्त समस्त समस्याओं को अपने काव्य के द्वारा व्यक्त किया है। विदुषी भारद्वाज ने कहा है कि डॉ॰ शुभदर्शन त्रासद अनुभूति के कवि हैं। प्रस्तुत काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में उनकी त्रासद अनुभूतियाँ ही अभिव्यक्त हुई हैं। इसमें वर्तमान व्यवस्था के कारण समाज में व्यक्त भय, आशंका, भूख, कटुता, संवेदनहीनता, संघर्ष, निष्ठुरता और विवशता आदि की प्रभावी अभिव्यंजना हुई है। कवि ने अपने काव्य संग्रह के द्वारा वर्तमान सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक व्यवस्था के यथार्थ रूप को प्रस्तुत किया है।

मनुष्य का जन्म समाज में होता है और समाज की व्यवस्था में रहकर ही मनुष्य अपना जीवन-यापन करता है। प्रत्येक समाज की अपनी एक व्यवस्था होती है, इसमें अच्छी बातों के साथ कुछ बुरी बातें भी होती हैं। एक कवि की नज़र आम आदमी से कुछ अलग होती है। वो समाज के वास्तविक रूप को सबके समक्ष उजागर करता है। शुभदर्शन ने भी अपने काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। समाज की व्यवस्था, अव्यवस्था, रिश्तों में आई कड़वाहट, परिवार का विघटन, व्यर्थ के आडंबर, रीति-रिवाज, ग्रामीण जीवन और शहरीकरण की कुरीतियों को बहुत ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। शुभदर्शन ने परिवार, माँ और पिता की महत्ता को दर्शाया है और परिवार के विघटन के प्रति अपने विद्रोह को चित्रित किया है। समाज में जो अंधविश्वास का प्रभाव बढ़ रहा है, उसका कवि ने घोर विरोध किया है। शुभदर्शन ने ग्रामीण जीवन की महत्ता को दर्शाया है और साथ ही गाँव के लोग जो शहरों में आकर बस रहे हैं और अपनी संस्कृति को भूल रहे हैं, उनके प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया है। शुभदर्शन ने शहरी वातावरण की दूषित भावनाओं को चित्रित किया है। आधुनिक युग में आकर भी व्यक्ति का रहन-सहन, खान-पान तो आधुनिक हो गया है, लेकिन उसकी सोच अभी तक वहीं की वहीं ही है, इस समस्या को भी शुभदर्शन ने अपने काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। समाज की समस्याओं को उजागर करने में कवि शुभदर्शन सफल हुए हैं।

राजनीति मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। लेकिन वर्तमान समय में राजनीति का जो रूप है, उसको शुभदर्शन ने अपने काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। वर्तमान राजनीतिक प्रणाली दूषित है। राजनीति एक गंदा खेल बनकर रह गई है। राजनीतिक नेता अपनी शक्ति का दुरोपयोग करते हैं और जनता को लूट रहे हैं। शुभदर्शन ने इन राजनीतिक नेताओं को अवसरवादी कहा है जो केवल चुनाव के दिनों में लोगों की समस्याएँ सुनने के लिए आते हैं और जब उनका काम हो जाता है तो जनता से किए हुए सभी वादे भूल जाते हैं। जनता की समस्याओं से उनको कोई लेना-देना नहीं होता है। जो व्यक्ति किसी राजनीतिक नेता के खिलाफ आवाज़ उठाने का प्रयास करता है, उसकी आवाज़ सत्ता बल के द्वारा दबा दी जाती है। सरकारें जनता के द्वारा ही चुनी जाती हैं और जनता के लिए ही होती हैं, लेकिन आज के समय में कोई भी नेता सामाजिक भलाई के लिए राजनीति में नहीं आता अपितु शक्तिशाली होने और जनता पर शासन करने के लिए राजनीति में आता है। शुभदर्शन ने राजनीतिज्ञों की अवसरवादिता, भ्रष्टाचार, और कूटनीति को अपने काव्य के द्वारा अभिव्यक्त किया है। देश में भ्रष्टाचार राजनीति से ही आरंभ होता है। इस के प्रति शुभदर्शन ने

अपनी विद्रोही भावना को व्यक्त किया है। राजनीतिज्ञों की कूटनीति की कलई खोलने में कवि शुभदर्शन सफल सिद्ध हुए हैं।

शुभदर्शन की कविता विद्रोह की कविता है। शुभदर्शन ने प्रत्येक क्षेत्र की बुराई के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया है। वह एक स्वच्छ समाज की स्थापना करना चाहते हैं, जिसमें किसी प्रकार की कोई बुराई न हो। लेकिन ऐसा वर्तमान समय में संभव होना प्रतीत नहीं होता है। एक कवि और पत्रकार के रूप में उन्होने अपना काम बखूबी निभाया है। शुभदर्शन ने बिना किसी डर के यथार्थ को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। उनके काव्य से आर्थिक क्षेत्र भी अछूता नहीं रह पाया है। आर्थिक असमानता के प्रति कवि ने विद्रोह को दर्शाया है। प्राचीन समय से ही अर्थ के आधार पर समाज को दो वर्गों में बाँट दिया गया है। शुभदर्शन ने आर्थिक असमानता की नीति को गलत बताया है। अर्थ के आधार पर दो वर्ग बनाए गए हैं- पूँजीपति वर्ग और मज़दूर वर्ग। पूँजीपति वर्ग प्राचीन समय से ही मज़दूर वर्ग का शोषण करता आया है। शुभदर्शन ने पूँजीपति वर्ग की शोषण और दमनकारी नीति का विरोध किया है। अरुण होता का मानना है की प्रेमचंद, मुक्तिबोध, दिनकर, पाश आदि के रचना संसार से प्रभावित शुभदर्शन की प्रतिबद्धता दलित, पीड़ित, सर्वहारा वर्ग के प्रति रही है। उनकी कविताओं में निहित संवेदना न केवल मनुष्य को सींचती है बल्कि पशु-जगत के प्रति संवेदनशील दृष्टि का परिचय देती है। अन्याय का विरोध और मनुष्यता विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध इस कवि का कर्म है और उद्देश्य भी। इस प्रकार कवि शुभदर्शन ने अपने काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में पूँजीपति वर्ग की दमनकारी नीतियों को चित्रित किया है।

कवि का अपने आस-पास की घटनाओं और समाज की परिस्थितियों से प्रभावित होकर उन गतिविधियों की झलक अथवा स्वरूप अपनी कविताओं में करना ही साहित्य में युगबोध कहलाता है। अर्थात एक कवि के द्वारा उस समय की स्थिति को दर्शना, जिस समय में वह रह रहा है, युगबोध है। इसका अर्थ यह है कि कवि मात्र कोरी कल्पना को ही अपने काव्य में चित्रित नहीं कर रहा अपितु अपने युग की वास्तविक स्थिति को उजागर कर रहा है। शुभदर्शन जी की लगभग सभी कविताएं उनके द्वारा वर्तमान युगबोध से प्ररित होकर लिखी गई हैं। अपने चारों और के परिवेश शुभदर्शन ने केवल देखा ही नहीं अपितु उसको भोगा भी है। इसी लिए वह समाज के यथार्थ को बिना किसी भय के चित्रित कर पाए हैं।

आधुनिक दौर में मनुष्य इतना आगे निकल चुका है कि वह अपने सभी रिश्ते-नाते भूल गया है। आधुनिक युग का मनुष्य भीड़ में होते हुए भी अकेला है क्योंकि उसके पास अपनों के लिए समय ही नहीं रहा है। आधुनिक युग की चका-चौंध ने उसे बनावटी और संवेदनाहीन बना दिया है। किसी के प्रति उसके मन में प्रेम नहीं है, दया भाव नहीं है, किसी के लिए सम्मान की भावना नहीं है। आधुनिक मनुष्य उपभोगतावादी बन चुका है। शुभदर्शन ने मनुष्य की संवेदनहीनता को अपने काव्य संग्रह 'संघर्ष बस संघर्ष' में बहुत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया

है। अपनी कविताओं में अहसास को बनाए रख और बनावटीपन छोड़ शुभदर्शन ने जीवन्त यातनाओं की अनुभूति से परिचित करवाया है। उनके अहसास में अपने परिवेश, व्यवस्था, परिस्थितियों के प्रति एक चुभन है। धोखा, फरेब, जालसाजी, यह वर्तमान मनुष्य की प्रवृति बन चुका है। आज का मनुष्य अहसासहीन हो गया है। नए रिश्तों ने पुराने आत्मिक सम्बन्धों को नष्ट कर दिया है। शुभदर्शन की कविता में एक तीखापन है, जो व्यक्ति के मन को झकझोर कर रख देता है। कवि ने घटती संवेदना, जड़ से उखड़ते जाने की त्रासदी, संस्कारविहीनता, ग्रामीण विरासत से बिखराव और मानवीय मूल्यों के विघटन की स्थितियों को परखा है और इन स्थितियों के प्रति अपने काव्य में विद्रोह को व्यक्त किया है।

अंत में यही कहा जा सकता है कि शुभदर्शन एक विद्रोही कवि हैं। उनके काव्य में वर्तमान समय की व्यवस्था के प्रति विद्रोह को देखा जा सकता है। डॉ॰ शुभदर्शन पंजाब के जाने-माने कवि और पत्रकार हैं। उनकी कविताओं में सच्चाई, सामाजिक आडंबरों और व्यर्थ के रीति-रिवाजों के प्रति विद्रोह के दर्शन होते हैं। उनकी कविताएं पाठक को संघर्ष की ओर उन्मुख करती हैं। शुभदर्शन की कृति 'संघर्ष बस संघर्ष' इसी कारण हिन्दी साहित्य के लिए, समय के इतिहास के लिए और वर्तमान संदर्भ में महत्वपूर्ण भी है, प्रासांगिक भी है।

साक्षात्कार

डॉ. शुभदर्शन के काव्य संग्रह "संघर्ष बस संघर्ष" पर शोध कार्य कर के मैं अपने आप को भाग्यशाली मानती हूँ। उनके साहित्य का गहन अध्ययन करने के बाद मैं उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुई और मेरे उनसे मिलने की इच्छा हुई। इस लिए आखिर कार 4 जुलाई, 2016 को मैंने अमृतसर शहर (पंजाब) जाकर उनके साथ साक्षात्कार किया और उनके विचारों और अनुभवों को ग्रहण किया और इसी के माध्यम से मैं अपने शोध कार्य में जो शंकाएँ थीं, उनका समाधान कर सकी। डॉ. शुभदर्शन जी ने बड़ी विनम्रता के साथ मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर दिए। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तरों को द्वारा ही मैं अपने शोध कार्य को सम्पन्न कर पाई हूँ।

1 जोगिता : आपके किए कविता क्या है?

डॉ. शुभदर्शन : कविता न तो शाब्दिक व्यभिचार है और न ही मानसिक संतुष्टि का उपादान। मेरे लिए कविता व्यक्ति के दिमाग में चल रही समस्याओं की भीड़ वाली मानसिकता को कुरेद कर उसकी उस वेदना को झकझोरने की प्रक्रिया है जो कि जीवन के इंसान होने की शर्त है।

2 जोगिता : आपने साहित्य रचना कब से प्रारम्भ की?

डॉ. शुभदर्शन : लिखना कब से शुरू किया कुछ पता नहीं। बचपन में जब परिवार, समाज में कुछ गलत होता था तो परिवार में उसके विरुद्ध आवाज उठाने नहीं दी जाती थी। अपनी उस विद्रोह की भावना को व्यक्त करने के लिए मैं काव्य का सहारा लेता था। लिखने के बाद कुछ हल्का महसूस होता है।

3 जोगिता : आपका कौन सा काव्य संग्रह है जिससे आपको प्रसिद्धि प्राप्त हुई?

डॉ. शुभदर्शन : मैंने अभी तक पाँच काव्य संग्रहों की रचना की है। जिनमें से "संघर्ष बस संघर्ष" जो काव्य संग्रह है, उसके लिए मुझे 'केंद्रीय हिन्दी निर्देशाल्य' दिल्ली की तरफ से 2016 में पुरस्कृत किया गया है।

4 जोगिता : आपके लिए संघर्ष का क्या अर्थ है?

डॉ. शुभदर्शन : संसार में केवल अंधेरा ही नहीं, उजाला और अंधेरा दो पक्ष हैं, जिनका संघर्ष निरंतर चलता है- अधिक जा कम प्रतिशत के रूप में। जरूरत तो सिर्फ तलाश की है। अंधेरे से उजाले की तलाश ही वह संघर्ष है, जो जीने की शर्त है।

5 जोगिता : एक साहित्यकार के साहित्य में यथार्थ का क्या महत्त्व है?

शुभदर्शन : एक साहित्यकार ही है जो समाज के वास्तविक रूप को अपनी लेखनी का रूप देकर जनता के समक्ष प्रस्तुत करता है। साहित्यकार के साहित्य में यथार्थ चित्रण होना आवश्यक है क्योंकि जनता जो पढ़ती है, उसी के आधार पर अपनी विचारधारा बनाती है। इस लिए साहित्यकार का यह कर्तव्य बनता है कि वह जनता को वास्तविकता के साथ अवगत कराए।

6 जोगिता : आपके प्रत्येक काव्य संग्रह में आपने संघर्ष की बात की है, इस पर प्रकाश डालिए?

डॉ. शुभदर्शन : संघर्ष मनुष्य के जीवन की वास्तविकता है। किसी भी चीज को बिना संघर्ष किए आसानी से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इस लिए व्यक्ति को संघर्ष करते रहना चाहिए, जब तक कि उसको अपना उद्देश्य प्राप्त न हो जाए।

7 जोगिता : आपने अपने काव्य संग्रह "संघर्ष बस संघर्ष" में 'गौरैया' शब्द का प्रयोग किया है, इसका क्या तात्पर्य है?

डॉ. शुभदर्शन : 'गौरैया' चिड़िया को कहते हैं। संघर्ष बस संघर्ष में गौरैया शब्द का प्रयोग एक प्रतीक के रूप में किया गया है। गौरैया मनुष्य का प्रतीक रूप है। जिस प्रकार एक गौरैया मुश्किलों का सामना कर अपना घर बनाती है और अपने बच्चों का पालन-पोषण और रक्षा करती है, उसी प्रकार मनुष्य भी करता है।

8 जोगिता : हिन्दी में काव्य रचना करते हुए आपने कहीं-कहीं पर पंजाबी भाषा का प्रयोग किया है, इस पर आपके क्या विचार हैं?

डॉ. शुभदर्शन : साहित्य की रचना हम चाहे किसी भी भाषा में कर लें, लेकिन उसमें हमारी मातृभाषा का प्रभाव रहता ही है। इस लिए पंजाब का निवासी होने के कारण पंजाबी भाषा के मुहाबरों का जुबान पर आना स्वाभाविक है।

9 जोगिता : आपने अपने काव्य में 'एक' शब्द के स्थान पर 'इक' शब्द का प्रयोग अधिक किया है, इसका क्या कारण है?

डॉ. शुभदर्शन : ऐसे शब्दों का प्रयोग किसी विशेष बात पर ध्यान केन्द्रित करने या बल देने के लिए किया जाता है। इस लिए मैंने 'एक' के स्थान पर 'इक' शब्द का प्रयोग किया है, क्योंकि मुझे इक शब्द अधिक प्रभावशाली प्रतीत होता है।

10 जोगिता : आपके काव्य में विद्रोह की भावना देखने को मिलती है, आपका यह विद्रोह किसके विरुद्ध है?

डॉ. शुभदर्शन : मेरे यह विद्रोह भावना हर उस व्यक्ति, विचारधारा, रूढ़ि, परंपरा और व्यवस्था के विरुद्ध है, जो व्यक्ति की स्वतन्त्रता और उसके अधिकारों को सीमित करती है।

11 जोगिता : आधुनिक युग में मनुष्य जो अपने नैतिक मूल्यों को भूलता जा रहा है, उसके बारे में आपके क्या विचार हैं?

डॉ. शुभदर्शन : आधुनिक युग में आते-आते मनुष्य ने अपने संस्कारों को पीछे छोड़ दिया है। नई पीढ़ी को अपने संस्कारों के बारे में कुछ पता नहीं है। अपने से बड़ों का जो सम्मान किया जाता था, ऐसा आज के युग में कुछ नहीं है। पैसे का महत्त्व बढ़ गया है और आपसी प्यार नष्ट हो गया है।

12 जोगिता : महानगरीय व्यवस्था के बारे में आपके क्या विचार हैं?

डॉ. शुभदर्शन : महानगरों ने मनुष्य को बिल्कुल बदल दिया है। मनुष्य में जो प्यार, दया, सहानुभूति, और विश्वास जैसी भावनाएँ थीं, पैसे ने आज उनको नष्ट कर दिया है। महानगरों में भीड़ होते हुए भी वहाँ व्यक्ति अकेला है क्योंकि उसको वहाँ कोई अपना दिखाई नहीं देता।

13 जोगिता : आपके काव्य का मुख्य उद्देश्य क्या है और आप किस प्रकार के समाज का निर्माण करना चाहते हैं?

डॉ. शुभदर्शन : एक साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य व्यवस्था की वास्तविकता को समाज के समक्ष अभिव्यक्त करना होता है। साहित्यकार समाज का कल्याण चाहता है। अपने साहित्य के द्वारा ऐसे समाज का निर्माण करना चाहता हूँ, जो समाज को एक नई दिशा प्रदान करे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1. शुभदर्शन, "संघर्ष बस संघर्ष", दिल्ली, युक्ति प्रकाशन, 2011.

सहायक ग्रंथ

1. अरस्तू, "द पॉलिटिक्स", पेंगुइन, 1962.
2. कुँवर, भावना, "सठोत्तरी हिन्दी गज़ल में विद्रोह के स्वर", नई दिल्ली, अयन प्रकाशन, 2009.
3. जैन, निर्मला, "आधुनिक साहित्य: मूल्य और मूल्यांकन", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1960.
4. ठाकुर, इन्द्रनाथ सिंह, "आठवें दशक की हिन्दी कविता में सामाजिक चेतना", दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, 2010.
5. तनेजा, विनोद (सं), "संघर्ष से सरोकार का कवि: शुभदर्शन", अमृतसर, विभोर प्रकाशन, 2011.
6. तिवारी, रामचन्द्र (सं), "कविता क्या है", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1985.
7. तिवारी, विश्वनाथ, "समकालीन हिन्दी कविता", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1982.
8. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद, "समकालीन हिन्दी कविता", दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन, 1982.
9. धूमिल, "संसद से सड़क तक", नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1972.
10. नवल, नंदकिशोर (सं), "सामाजिक व्यवस्था", नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1973.
11. नागार्जुन, "युगधारा", नई दिल्ली, यात्री प्रकाशन, 1987.
12. नागर, अमृतलाल, "बूंद और समुद्र", इलाहाबाद, किताब महल प्रकाशन, 1964.
13. पाण्डेय, ब्रजकुमार, "मार्क्सवादी चिंतन", दिल्ली, स्वराज प्रकाशन, 2006.
14. पाण्डेय, मैनेजर, "नागार्जुन चयनित रचनाएँ: भूमिका", दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 1983.
15. पाण्डेय, मैनेजर, "शब्द और कर्म", नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1998.

16. पालीवाल, शोभा, "अमृतलाल नगर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना", जयपुर, साहित्यागार, 1995.
17. भारती, धर्मवीर, "मानवमूल्य और साहित्य", नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1990.
18. मार्क्स, एंगेल्स, "कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र", मास्को, प्रगति प्रकाशन, 1986.
19. मिश्र, शोभाकांत (सं), "नागार्जुन: चुनी हुई रचनाएँ भाग-1", नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 1985.
20. मिश्र, शिवकुमार, "मार्क्सवाद और साहित्य", दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2001.
21. मोहन, नरेंद्र (सं), "विद्रोह और साहित्य", दिल्ली, साहित्य भारती प्रकाशन, 1974.
22. यशपाल, "मार्क्सवाद", इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 1985.
23. राय, लल्लन, "हिन्दी की प्रगतिशील कविता", चंडीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी, 1994.
24. शर्मा, रामविलास, "आज के सवाल और मार्क्सवाद", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2011.
25. शर्मा, रामविलास, "मार्क्स और पिछड़े हुए समाज", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2011.
26. शर्मा, रामविलास, "मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य", दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2002.
27. शर्मा, रामविलास, "भारत में अँग्रेजी राज और मार्क्सवाद- तीन भाग", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1982.
28. सरकार, सुमित, "आधुनिक भारत", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2009.
29. सिंह, नामवर, "कविता के नए प्रतिमान", नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1974.
30. सिंह, नामवर, "इतिहास और आलोचना", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1978.
31. सिंह, कुंवरपाल (सं), "साहित्य और राजनीति", दिल्ली, भाषा प्रकाशन, 1981.
32. सिंह, आलोक (सं), "मार्क्सवाद और रामविलास शर्मा", अलीगढ़, गोदारण प्रकाशन, 2014.
33. सोनी, रमेश (सं), "समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन", नई दिल्ली, सभ्या प्रकाशन, 2013.
34. हरदयाल, लाला, "आधुनिक बोध और विद्रोह", दिल्ली, राजेश प्रकाशन, 1979.

शोध ग्रंथ

1. अय्यप्पन, सिंधुमोल, "अमृतलाला नागर के उपन्यासों में आधुनिकता", पी.एच.डी. थीसिस, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, 2010, प्रिंट.
2. देवी, सीमा, "स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कहानियों में बहुआयामी विद्रोह", पी.एच.डी. थीसिस, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, 2013, प्रिंट.
3. पाण्डेय, रजनीकान्त, "कबीर एवं निराला के काव्य में विद्रोह चेतना", पी.एच.डी. थीसिस, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 1983, प्रिंट.
4. यादव, सुमन, "हिन्दी उपन्यासों में व्यक्त आक्रोश और विद्रोह के स्वर", पी.एच.डी. थीसिस, महाराजा सयाजी राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, 2010, प्रिंट.
5. शर्मा, जगदीशचन्द्र, "स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कविता में विद्रोह", पी.एच.डी. थीसिस, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 1981, प्रिंट.
6. शर्मा, देवराज, "निराला के साहित्य में मूल्यों का संक्रमण और विद्रोह", पी.एच.डी. थीसिस, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 1982, प्रिंट.
7. शावड़ा, विद्यानिधि, "निराला और पुश्किन के काव्य में विद्रोह: एक तुलनात्मक अध्ययन", पी.एच.डी थीसिस, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1991, प्रिंट.
8. साहू, पटराम, "छत्तीसगढ़ के आदिवासियों का विद्रोह(1857-1947)", पी.एच.डी. थीसिस, रविशंकर शुक्ला विश्वविद्यालय, रायपुर, 1999, प्रिंट.
9. सिंह, नीतू, "नागार्जुन के काव्य में विद्रोही चेतना", पी.एच.डी. थीसिस, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, 2014, प्रिंट.

हिन्दी कोश

1. तिवारी, भोलानाथ (सं), "बृहत पर्यायवाची कोश", इलाहाबाद, 1962.
2. दास, श्यामसुंदर (सं), "हिन्दी शब्दसागर", वाराणसी, 1928.
3. नगेन्द्र (सं), "मानविकी पारिभाषिक कोश", दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1965.
4. प्रसाद, कालिका (सं), "बृहत हिन्दी कोश", वाराणसी, संवत 2020.
5. बुल्के, कामिल (सं), "अँग्रेजी हिन्दी कोश", रांची, काथालिक प्रेस, 1978.
6. वसु, नगेन्द्रनाथ (सं), "हिन्दी विश्वकोश", भाग 21 वां, दिल्ली, बी.आर. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, 1986.
7. वर्मा, धीरेन्द्र (सं), "हिन्दी साहित्य कोश", वाराणसी, ज्ञानमंडल लिमिटेड, 1985.
8. वर्मा, रामचन्द्र (सं), "मानक हिन्दी कोश", प्रयाग, हिन्दी साहित्यसम्मेलन, 1966.

.अँग्रेजी कोश

1. A. Arthur (Ed), "Sanskrit English dictionary", Macdonell, 1893.
2. Clearance L. Barnnart Ed, "The American College Encyclopaedia", vol-2, Chicago, 1958.
3. "Chamber's encyclopaedia", vol-8, London, 1968.
4. "Encyclopaedia Britanica", vol-19, 1951.
5. The Encyclopaedia Americanna (V22),The American corporation, New York, 1944.

पत्रिकाएँ

1. कालजयी, किशन (सं), “सबलोग”, अंक-6, दिल्ली, जून 2010.
2. किशोर, कृष्ण (सं), “अन्यथा”, अंक-11, लुधियाना, 2008.
3. गौतम, पंकज (सं), “सबके दावेदार”, अंक-60, आज़मगढ़, अगस्त 2008.
4. चंद्र, वीरेश (सं), “आवर्त”, अंक-11-13, मुजफ्फरपुर, सितम्बर 01, 2002.
5. चंद्र, सुभाष (सं), “देस हरियाणा”, अंक-3, कुरुक्षेत्र, जनवरी-फ़रवरी 2016.
6. जुल्का, नीलम (सं), “साहित्यावलोकन: सृजन एवं शोध पत्रिका”, अंक-5, जालंधर, 2011.
7. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद (सं), “दस्तावेज़ 134”, अंक-2, दिल्ली, जनवरी-मार्च 2012.
8. पचौरी, सुधीश (सं), “वाक”, अंक-1, दिल्ली, 2007.
9. रमण, उमा (सं), “देश-विदेश अनियतकालीन बुलेटिन”, अंक-9, रुड़की, अप्रैल 2009.
10. राजपाल, हुकुमचंद (सं), “शब्द-सरोकार”, अंक-21, पटियाला, 2008.
11. वर्मा अंजना (सं), “चौराहा”, मुजफ्फरपुर, प्रवेशांक जुलाई-दिसम्बर 2013.
12. वर्मा, लाल बहादुर (सं), “इतिहासबोध”, इलाहाबाद, सन्यूक्तांक जनवरी-फरवरी 2006.
13. हरिनारायण (सं), “कथादेश”, अंक-7, दिल्ली, सितम्बर 2005.